वार्षिक रु. २००, मूल्य रु. २५

ISSN 2582-0656

विवेक ज्योति

रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम रायपुर (छ.ग.)

वर्ष ६३ अंक १० अक्तूबर २०२५

* आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च *

विवेक-ज्योति

वर्ष ६३

अंक १०

हिन्दी मासिक

प्रबन्ध सम्पादक
स्वामी अव्ययात्मानन्द

व्यवस्थापक
स्वामी स्थिरानन्द

सम्पादक
स्वामी प्रपत्त्यानन्द

सह-सम्पादक
स्वामी पद्माक्षानन्द

आश्विन, सम्वत् २०८२

अक्तूबर, २०२५

अनुक्रमणिका

* तू भी वही पूर्ण ब्रह्म है : विवेकानन्द ४३८
* शास्त्रानुसार छठ-पूजा कैसे करें? (उत्कर्ष चौबे) ४४०
* (बच्चों का आंगन) छठ-पूजा का वैज्ञानिक महत्त्व (श्रीमती मिताली सिंह) ४४६
* विविध रूपों में काली (स्वामी अलोकानन्द) ४४७
* मनुष्य-जीवन की महानता को समझें (स्वामी सत्यरूपानन्द) ४५०
* राष्ट्रीय आन्दोलन में सिस्टर निवेदिता का पत्रकारिता के माध्यम से योगदान (डॉ. सुप्रिया आशीष अग्रवाल) ४५३
* (युवा प्रांगण) नचिकेता – एक आदर्श युवा (स्वामी गुणदानन्द) ४५६
* दशहरा और रामलीला का सम्बन्ध तथा महत्त्व (चन्दन कुमार) ४५९
* काशी में काली उपासना (प्रखर श्रीवास्तव) ४६३
* स्वामी विवेकानन्द और नारी-सम्मान (ऐश्वर्य पुरोहित) ४७०
* कटारमल सूर्य मंदिर, कोसी, अलमोड़ा (मोहन सिंह मनराल) ४७१
* (भजन एवं कविता) शुभदे सर्वकालिका (श्रीधर द्विवेदी) * जयतु जयतु जय मातु कालिके (डॉ. ओमप्रकाश वर्मा) * श्रीकालिकाष्टकम् (डॉ. अनिल कुमार) * निवेदिता है समर्पिता (प्राचार्य ओ.सी. पटले) ४५२
* श्रीरामकृष्ण-स्तुति-६ (रामकुमार गौड़) ४६२
* नन्हें दीप की कामना... (आनन्द तिवारी) ४६६
* पुस्तक समीक्षा ४७६

शृंखलाएँ

मंगलाचरण (स्तोत्र) ४३७
पुरखों की थाती ४३७
सम्पादकीय ४३९
रामगीता ४४३
श्रीरामकृष्ण-गीता ४५१
गीतातत्त्व-चिन्तन ४६७
साधुओं के पावन प्रसंग ४७३
प्रश्नोपनिषद् ४७५
समाचार और सूचनाएँ ४७७

रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर – ४९२००१ (छ.ग.)

विवेक-ज्योति दूरभाष : ०९८२७१ ९७५३५ (फोन करने का समय केवल सुबह १० से १२)

ई-मेल : **vivekjyotirkmraipur@gmail.com,** वेबसाइट : ***www.rkmraipur.org***

आश्रम कार्यालय : ०७७१ – २२२५२६९, ४०३६९५९ (समय : ८.३० से ११.३० और ३ से ६ बजे तक) रविवार एवं अन्य अवकाश को छोड़कर

ISSN 2582-0656

विवेक-ज्योति के सदस्य कैसे बनें

भारत में	वार्षिक	५ वर्षों के लिए	१० वर्षों के लिए
एक प्रति २५/-	२००/-	१०००/-	२०००/-
विदेशो में (हवाई डाक से)	६० यू.एस. डॉलर	३०० यू.एस. डॉलर	
संस्थाओं के लिए	३००/-	१५००/-	

भारत में रजिस्टर्ड पोस्ट से माँगने का शुल्क प्रति अंक अतिरिक्त ३०/- देय होगा।

* सदस्यता-शुल्क की राशि इलेक्ट्रॉनिक या साधारण मनिआर्डर से भेजें अथवा **ऐट पार** चेक – **'रामकृष्ण मिशन'** (रायपुर, छत्तीसगढ़) के नाम बनवाकर रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम रायपुर (छ.ग.) ४९२००१ के नाम स्पीड पोस्ट से भेज दें अथवा निम्नलिखित खाते में सीधे जमा करायें :

बैंक का नाम : सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
अकाउण्ट का नाम : रामकृष्ण मिशन, रायपुर
शाखा का नाम : विवेकानन्द आश्रम, रायपुर, छ.ग.
अकाउण्ट नम्बर : 1385116124
IFSC : CBIN0280804

विवेक-ज्योति के सदस्य बनाएँ

प्रिय मित्र,

युगावतार श्रीरामकृष्ण और विश्ववन्द्य आचार्य स्वामी विवेकानन्द के आविर्भाव से विश्व-इतिहास के एक अभिनव युग का सूत्रपात हुआ है। इससे गत एक शताब्दी से भारतीय जन-जीवन की प्रत्येक विधा में एक नव-जीवन का संचार हो रहा है। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद, शंकराचार्य, चैतन्य, नानक तथा रामकृष्ण-विवेकानन्द, आदि कालजयी विभूतियों के जीवन और कार्य अल्पकालिक होते हुए भी शाश्वत प्रभावकारी एवं प्रेरक होते हैं और सहस्रों वर्षों तक कोटि-कोटि लोगों की आस्था, श्रद्धा तथा प्रेरणा के केन्द्र-बिन्दु बनकर विश्व का असीम कल्याण करते हैं। श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द भावधारा नित्य उत्तरोत्तर व्यापक होती हुई, भारतवर्ष सहित सम्पूर्ण विश्ववासियों में परस्पर सद्भाव को अनुप्राणित कर रही है।

भारत की सनातन वैदिक परम्परा, मध्यकालीन हिन्दू संस्कृति तथा श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द के सार्वजनीन उदार सन्देश का प्रचार-प्रसार करने के लिए स्वामीजी के जन्म-शताब्दी वर्ष १९६३ ई. से 'विवेक-ज्योति' पत्रिका को त्रैमासिक रूप में आरम्भ किया गया था, जो १९९९ से मासिक होकर गत ६२ वर्षों से निरन्तर प्रज्वलित रहकर भारत के कोने-कोने में बिखरे अपने सहस्रों प्रेमियों का हृदय आलोकित करती आ रही है। आज के संक्रमण-काल में, जब असहिष्णुता तथा कट्टरतावाद की आसुरी शक्तियाँ सुरसा के समान अपने मुख फैलाए पूरी विश्व-सभ्यता को निगल जाने के लिए आतुर हैं, इस 'युगधर्म' के प्रचार रूपी पुण्यकार्य में सहयोगी होकर इसे घर-घर पहुँचाने में क्या आप भी हमारा हाथ नहीं बँटायेंगे? आपसे हमारा हार्दिक अनुरोध है कि कम-से-कम पाँच नये सदस्यों को 'विवेक-ज्योति' परिवार में सम्मिलित कराने का संकल्प आप अवश्य लें। – **व्यवस्थापक**

आवरण-पृष्ठ के सम्बन्ध में

आवरण पृष्ठ पर प्रदर्शित चित्र छठ पर्व का है, सबसे बड़ा भारतीय पर्व है। इसमें छठ पर्व के विधि-विधान से आयोजित झाँकियों के चित्र हैं।

अक्तूबर माह के जयन्ती और त्यौहार

२०	दीपावली
२३	भाई-दूज
२६	छठ-पूजा
३,१७	एकादशी

विवेक-ज्योति कोष/स्थायी कोष

दान दाता	दान-राशि
श्री केजुराम साहु, वी.आई.पी.रोड़, रायपुर, छ.ग.	२,१००/

विवेक-ज्योति के अंक ऑनलाइन निःशुल्क पढ़ें : www.rkmraipur.org

'vivek jyoti hindi monthly magazine' के नाम से अब विवेक-ज्योति पत्रिका यू-ट्यूब चैनल पर सुनें

विवेक ज्योति पुस्तकालय योजना

मनुष्य का उत्थान केवल सकारात्मक विचारों के प्रसार से करना होगा । – स्वामी विवेकानन्द

❖ क्या आप स्वामी विवेकानन्द के स्वप्नों के भारत के नव-निर्माण में योगदान करना चाहते हैं?

❖ क्या आप अनुभव करते हैं कि भारत की कालजयी आध्यात्मिक विरासत, नैतिक आदर्श और महान संस्कृति की युवकों को आवश्यकता है?

✓ यदि हाँ, तो आइए! हमारे भारत के नवनिहाल, भारत के गौरव छात्र-छात्राओं के चारित्रिक-निर्माण और प्रबुद्ध नागरिक बनने में सहायक 'विवेक-ज्योति' को प्रत्येक पुस्तकालय में पहुँचाने में सहयोग कीजिए। आप प्रत्येक पुस्तकालय में पहुँचाने वाली हमारी इस योजना में सहयोग कर अपने राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं। आपका प्रयास हमारे इस महान योजना में सहायक होगा, हम आपके सहयोग की प्रतीक्षा कर रहे हैं –

✍ १. 'विवेक-ज्योति' को विशेषकर भारत के स्कूल, कॉलेज, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों द्वारा युवकों में प्रचारित करने का लक्ष्य है।

✍ २. एक पुस्तकालय हेतु मात्र २१००/- रुपये सहयोग करें, इस योजना में सहयोग-कर्ता के द्वारा सूचित किए गए सामुदायिक ग्रन्थालय, या अन्य पुस्तकालय में १० वर्षों तक 'विवेक-ज्योति' प्रेषित की जायेगी।

✍ ३. यदि सहयोग-कर्ता पुस्तकालय का नाम चयन नहीं कर सकते हैं, तो हम उनकी ओर से पुस्तकालय का चयन कर देंगे। दाता का नाम पुस्तकालय के साथ 'विवेक-ज्योति' में प्रकाशित किया जाएगा। यह योजना केवल भारतीय पुस्तकालयों के लिये है।

❖ आप अपनी सहयोग-राशि इलेक्ट्रॉनिक मनीआर्डर या एट पार चेक 'रामकृष्ण मिशन' (रायपुर, छत्तीसगढ़) के नाम से बनवाकर पत्र के साथ निम्नलिखित पते पर भेज दें, जिसमें 'विवेक ज्योति पुस्तकालय योजना' हेतु लिखा हो। आप अपनी सहयोग-राशि निम्नलिखित खाते में सीधे जमा कर सकते हैं। आप इसकी सूचना ई-मेल, फोन और एस. एम.एस. द्वारा अपना नाम, पूरा पता, पिन कोड एवं फोन नम्बर के साथ भेजें।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इन्डिया, अकाउन्ट नम्बर : 1385116124, **IFSC CODE :** CBIN0280804

पता – **व्यवस्थापक, विवेक-ज्योति कार्यालय, रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम,**

रायपुर - 492001 (छत्तीसगढ़), दूरभाष – 0982719 7535, 0771-2225269, 4036959

ई-मेल : vivekjyotirkmraipur@gmail.com, वेबसाइट : www.rkmraipur.org

विवेक-ज्योति स्थायी कोष

'विवेक-ज्योति' पत्रिका स्वामी विवेकानन्द जी की जन्म-शताब्दी वर्ष के शुभ अवसर पर १९६३ ई. में आरम्भ की गई थी। तबसे यह पत्रिका निरन्तर आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक विचारों के प्रचार-प्रसार द्वारा समाज को सदाचार, नैतिक और आध्यात्मिक जीवन यापन में सहायता करती चली आ रही है। यह पत्रिका सदा नियमित और सस्ती प्रकाशित होती रहे, इसके लिये विवेक-ज्योति के स्थायी कोष में उदारतापूर्वक दान देकर सहयोग करें। आप अपनी दान-राशि इलेक्ट्रॉनिक मनीआर्डर, ऐट पार चेक या सीधे बैंक के खाते में उपरोक्त निर्देशानुसार भेज सकते हैं। प्राप्त दान-राशि (न्यूनतम रु. २०००/-) सधन्यवाद सूचित की जाएगी और दानदाता का नाम भी पत्रिका में प्रकाशित होगा। रामकृष्ण मिशन को प्रदत्त सभी दान आयकर अधिनियम-१९६१, धारा-८०जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

सुदर्शन सोलार...
ऊर्जा अपरंपार !
आधुनिक भारत की बिजली की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमारे पास पर्याप्त मात्रा में सौर ऊर्जा उपलब्ध है। प्राकृतिक रुप से उपलब्ध इस स्त्रोत का प्रतिदिन की अपनी आवश्यकताओं के लिये उपयोग करके, अपने बिजली के बिल में भारी पैमाने पर कटौती कर, हम अपने देश को बिजली के निर्माण में आत्मनिर्भर बनाने में सहायता कर सकते हैं।
इस सुन्दर भूमि को सदा हरी-भरी रखने के लिये अपना साथी
भारत का विश्वसनीय सौर ऊर्जा ब्रांड - 'सुदर्शन सौर'!
Sudarshan Saur
सोलर वॉटर हीटर
24 घंटे गरम पानी के लिए
सोलर लाइटिंग्स
ग्रामीण क्षेत्र में घरेलू उपयोग के लिए
सोलार इलेक्ट्रिसिटी सिस्टम
रुफटॉप सोलार
बिजली उत्पन्न करने के लिए
घर, बंगलोज, हॉस्पिटल्स, हॉटेल्स, इंडस्ट्रीज, कमर्शिअल कॉम्प्लेक्स, इन्स्टिट्यूट्स के लिए उपयुक्त
समझदारी की सोच!
३० साल का प्रदीर्घ अनुभव!
आजीवन सेवा
लाखां संतुष्ट ग्राहक
विस्तृत डीलर नेटवर्क
Sudarshan Saur®
www.sudarshansaur.com
Toll Free
1800 233 4545
E-mail: office@sudarshansaur.com

।। आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च ।।

विवेक-ज्योति

श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द भावधारा से अनुप्राणित

हिन्दी मासिक

वर्ष ६३ अक्तूबर २०२५ अंक १०

श्रीकाली-स्तुतिः

करालाकृतीन्याननानि श्रयन्ति
भजन्ति करास्त्रादिबाहुल्यमित्थम्।
जगत्पालनायासुराणां वधाय
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ।।
महाचण्डयोगेश्वरी गुह्यकाली
कराली महाडायनी अट्टहासा।
ब्रह्माण्डमुद्भासिता चण्डिमूर्तिः
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ।।

– हे माँ! तुम विश्व का पालन तथा असुरों का संहार करने के लिये हाथ में अस्त्र-शस्त्र लिये रहती हो। तुम करालवदना हो। तुम परब्रह्म रूप में ही सिद्ध हो। तुम महाचण्ड योगेश्वरी, गुह्यकाली, कराली, महाडायनी, अट्टहास करनेवाली, ब्रह्माण्ड को उद्भासित करनेवाली, चण्डिकामूर्ति तथा सबका पालन करनेवाली हो। तुम परब्रह्म रूप में ही सिद्ध हो।

पुरखों की थाती

देवपूजा दया दानं तीर्थयात्रा जपस्तपः।
शास्त्रं परोपकारत्वं मर्त्यं-जन्म-फलाष्टकम् ।।८८१।।

– देवपूजा, दया, दान, तीर्थयात्रा, जप, तप, शास्त्र-अध्ययन और परोपकार – ये ही मनुष्य-जीवन के आठ उत्कृष्ट फल हैं।

वीतरागं स्मरन् योगी वीतरागत्वमश्नुते।
ईलिका भ्रमरी-भीता ध्यायन्ती भ्रमरी यथा ।। ८८२।।

– जैसे भ्रमरी द्वारा पकड़ी गई कोई इल्ली भय के कारण भ्रमरी का ही ध्यान करती हुई स्वयं भी भ्रमरी बन जाती है। वैसे ही, किसी वैराग्यवान महापुरुष का ध्यान-स्मरण करता हुआ एक योगी स्वयं भी उन्हीं के समान वैराग्य प्राप्त करता है।

दानेन भूतानि वशीभवन्ति
दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम्।
परोऽपि बन्धुत्वमुपैति दानै-
र्दानं हि सर्व-व्यसनानि हन्ति।।८८३।।

– दान से लोग वशीभूत हो जाते हैं, दान से लोगों की शत्रुता दूर हो जाती है, दान के द्वारा पराये लोग भी अपने बन जाते हैं और दान समस्त पापों को नष्ट कर देता है।

तू भी वही पूर्ण ब्रह्म है : विवेकानन्द

वेदान्त प्रतिपाद्य ब्रह्म इस शर्त को पूर्ण करता है, क्योंकि जिस अन्तिम सामान्यीकरण में हम पहुँच सकते हैं, वह ब्रह्म ही हो सकता है। वह गुणातीत है, किन्तु, सत्, चित्, आनन्दस्वरूप – निरपेक्ष है। मानवीय चेतना की पहुँच जिस अन्तिम सामान्यीकरण तक हो सकती है, वह यही 'सत्' है। 'चित्' सामान्य ज्ञान नहीं, किन्तु उस तत्त्व का मूल है, जो अपने को विकास-क्रम के अनुसार प्राणियों एवं मानवों में ज्ञान के रूप में अभिव्यक्त कर रहा है। उस ज्ञान के सार को यदि चेतना से भी परे एक अन्तिम तथ्य कहा जाये, तो भी अनुचित न होगा। ज्ञान का असली आशय यही है एवं सृष्टि में वस्तुओं के मूलभूत एकत्व के रूप में हम इसी को पाते हैं। (२/२८२-८३)

ब्रह्म के या वेदान्त के ईश्वर के बाहर कुछ नहीं है – बिल्कुल कुछ नहीं। यह सब 'वही' है, विश्व में उसकी ही सत्ता है। 'वह' स्वयं विश्व ही है। 'तू ही पुरुष है, तू स्त्री है, यौवन-मद में विचरण करते हुए तू ही युवा पुरुष है, पग-पग पर लड़खड़ाता हुआ वह वृद्ध पुरुष भी तू ही है। (२/२८४)

सच्चिदानन्द शब्द का अर्थ है सत् यानी अस्तित्व, चित् अर्थात् चैतन्य या ज्ञान और आनन्द अर्थात् प्रेम। भगवान के 'सत्' भाव के विषय में भक्त और ज्ञानी में कोई विवाद नहीं। परन्तु ज्ञानमार्गी ब्रह्म की चित् या चैतन्य सत्ता पर ही सदा अधिक जोर देते हैं और भक्त सदा 'आनन्द' सत्ता पर दृष्टि रखते हैं। परन्तु 'चित्' स्वरूप की अनुभूति होने के साथ ही आनन्दस्वरूप की भी उपलब्धि हो जाती है, क्योंकि जो चित् है, वही आनन्द है। (६/१३६)

हम कभी-कभी किसी पदार्थ का संकेत उसके आस-पास के कुछ व्यापारों के वर्णन द्वारा करते हैं। हम जब ब्रह्म को सच्चिदानन्द नाम से अभिहित करते हैं, तब हम वास्तव में उसी अनिर्वचनीय सर्वातीत सत्तारूपी समुद्र के तट मात्र का कुछ संकेत देता हैं। इसे अस्ति स्परूप नहीं कह सकते, क्योंकि अस्ति कहने से ही उसके विपरीत 'नास्ति' का ज्ञान भी होता है, अतएव वह भी सापेक्षिक है। कोई भी धारणा या कल्पना व्यर्थ है। केवल 'नेति' 'नेति' – (यह नहीं, वह नहीं) ही कहा जा सकता है, क्योंकि विचार मात्र करना भी सीमित कर देना है और अन्ततः खो देना है। (७/८८)

ब्रह्म एक होकर भी व्यावहारिक रूप में अनेक रूपों में सामने विद्यमान है। नाम तथा रूप-व्यवहार के मूल में विद्यमान हैं। जिस प्रकार घड़े का नाम-रूप छोड़ देने से क्या दिखता है – केवल मिट्टी, जो उसकी वास्तविक सत्ता है। इसी प्रकार भ्रम में घट, पट इत्यादि का भी तू विचार करता है तथा उन्हें देखता है। ज्ञान-प्रतिबन्धक यह जो अज्ञान है, जिसकी वास्तविक कोई सत्ता नहीं है, उसी को लेकर व्यवहार चल रहा है। स्त्री-पुत्र, देह-मन, जो कुछ है, सभी नाम-रूप की सहायता से अज्ञान की सृष्टि में देखने में आते हैं। ज्योंही अज्ञान हट जायेगा, त्योंही ब्रह्म सत्ता की अनुभूति हो जायेगी। (६/१२४)

तू भी वही पूर्ण ब्रह्म है। इसी मुहूर्त में ठीक-ठाक अपने को उसी रूप में सोचने पर उस बात की अनुभूति हो सकती है। केवल अनुभूति की ही कमी है। तू जो नौकरी करके स्त्री-पुत्रों के लिए इतना परिश्रम कर रहा है, उसका भी उद्देश्य उस सच्चिदानन्द की प्राप्ति ही है। इस मोह के दाँव-पेंच में पड़कर, मार खा-खाकर धीरे-धीरे अपने स्वरूप पर दृष्टि पड़ेगी। वासना है, इसलिए मार खा रहा है, आगे भी खायेगा। बस, इसी प्रकार मार खा-खाकर अपनी ओर दृष्टि पड़ेगी। प्रत्येक व्यक्ति की किसी न किसी समय अवश्य ही पड़ेगी। अन्तर इतना ही है कि किसी की इसी जन्म में और किसी की लाखों जन्मों के बाद पड़ती है। (६/१३३)

सर्वविजयिनी शक्ति की आराधना

श्रीदुर्गासप्तशती में देवी की आराधना करते हुये देवता कहते हैं –

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता नमः।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

– जो देवी सभी प्राणियों में शक्तिरूप में अवस्थित हैं, उन्हें नमस्कार है।

हे प्राणी! यदि जीवन के सभी क्षेत्रों में विजय प्राप्त करना चाहते हो, तो शक्तिस्वरूपिणी माँ दुर्गा की, काली की आराधना करो, अर्चना करो, पूजा करो और उन्हें प्रसन्न कर उनसे विजय का आशीर्वाद प्राप्त करो। वही दिव्य शक्ति अपने भक्तों के कल्याण हेतु कभी दुर्गा, कभी काली और कभी अन्य रूपों में अवतरित होती है और अपनी सन्ततियों की घोर संकट से रक्षा करती है। माँ जगज्जननी अपनी सन्तानों के प्रति अत्यन्त दयालु हैं। अपनी सन्तानों का दुख-कष्ट वे सहन नहीं कर सकतीं। जब कोई उन्हें आर्त्तभाव से माँ कहकर पुकारता है, तो तत्क्षण अपनी सन्तान का संकट दूर कर उसे अभय, सुख-शान्ति प्रदान करती हैं।

जब-जब असुरों ने देवों को संत्रास दिया, सुरपुर पर अत्याचार किया, यहाँ तक कि देवों के राज्य को हड़पकर उन्हें निराश्रित अनाथ कर दिया, तब-तब माँ प्रकट होकर उनका मार्गदर्शन करती हैं, उनका राज्य पुन: प्रदान कराती हैं। माँ दुर्गा ने शुम्भ-निशुम्भ, चण्ड-मुण्ड का ससैन्य वध किया और देवों को अभय सुरपुर प्रदान किया। माँ स्वयं सर्वत्र विजयी होती हैं, कभी किसी से पराजित नहीं होतीं। इसलिए उनकी सन्तान भी सर्वत्र विजयी होती है। ऐसी महिमामयी हमारी माँ जगदम्बा हैं !

मानव को जीवन में दो शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना पड़ता है, तभी वह जीवन में सफल और अपने उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त करता है। प्रथम बहिरंग शत्रु और द्वितीय अन्तरंग शत्रु। जग-जननी माँ दुर्गा और माँ काली बहिरंग शत्रुओं का वध तो करती ही हैं, किन्तु वे साधक-जीवन के प्रबल अन्तरंग शत्रु काम-क्रोध, लोभ-मोह, राग-द्वेष, मद-मत्सर का भी नाश करती हैं, तब साधक बहिरंग-अन्तरंग शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर जीवन को धन्य बनाता है। क्षुधा, तृष्णा, निद्रा ये साधक जीवन के प्रबल शुत्र हैं। माँ जगदम्बा स्वयं अधिष्ठात्री होने के कारण अपने जनों को इनसे मुक्त कर देती हैं। इसके साथ ही दया, शान्ति, क्षान्ति-सहिष्णुता, विद्या, श्रद्धा-भक्ति, लक्ष्मी-स्वरूपिणी होने से भक्त के जीवन में इन सबका वर्धन करती हैं। इस प्रकार साधक जीवन में सर्वत्र, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होता है। माँ चेतनारूपिणी हैं, इसीलिए सदा अपने भक्तों को सजग, सावधान और सचेतन रखती हैं। सदा सचेत, सजग रहना आध्यात्मिक जीवन की परमावश्यकता है। यह कठिन कार्य भी माँ की आराधना से सहजता से हो जाता है। सजग व्यक्ति सदा अपने लक्ष्य के अनुकूल वस्तुओं का ग्रहण करता है और लक्ष्य के प्रतिकूल वस्तुओं का त्याग करता है, यह विवेक-बुद्धि भी माँ दुर्गा प्रदान करती हैं। अन्त में माँ दुर्गा मानव-जीवन के परम लक्ष्य मुक्ति को प्रदान कर साधक को सदा के लिये इस भव-बन्धन से मुक्त कर देती हैं। तब वह भक्त जगदानन्दमयी-परमानन्दमयी माँ जगदम्बा के आनन्द-सिन्धु में अमृत-पान कर विहार करने लगता है और सदा के लिये अमृत-पुत्र बनकर अमृत-सिन्धु का अधिकारी हो जाता है। किसी सन्त की प्रेरक पंक्तियाँ हैं –

यदि चाहते सर्वत्र विजय, तो शक्ति-आराधन करो।
सर्वविजयिनी देवी का, हार्दिक अभिनन्दन करो।।
शक्ति की देवी पराम्बा, ज्ञान-भक्ति-स्वरूप हैं।
जगत की जननी हैं वे और रूप भव्य अनूप है।।
शत्रु की संहारिणी हैं, सदा मंगलदायिनी।
जगत की शुभकारिणी हैं, संतती सुखदायिनी।।

अत: हे संसार के प्राणियो! यदि जीवन में भौतिक आध्यात्मिक दोनों शक्तियों पर विजय प्राप्त करना चाहते हो, तो भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी, कभी भी किसी से भी पराजित न होनेवाली, सर्वत्र विजयिनी, सर्वशक्ति-अधिष्ठात्री माँ जगदम्बा की आराधना करो। ○○○

छठ-पूजा विशेष

शास्त्रानुसार छठ-पूजा कैसे करें?

उत्कर्ष चौबे

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

मनु महाराज कहते हैं – **वेदोऽखिलो धर्ममूलं**। अर्थात् समस्त धर्म का मूल वेद है। वेदों से ही हमारे समस्त धारण करने योग्य क्रिया-कलापों सहित व्रत-पर्वादि भी निश्चित हुए हैं। किन्तु विगत सदी से यह आम धारणा बन गयी है कि छठ-पूजा के लिए कोई लिखित पद्धति नहीं है तथा इसे कराने के लिए किसी पण्डित या पुरोहित की आवश्यकता नहीं है। लोग इसे लोकपर्व कहने लगे हैं। हमारे यहाँ तो आदिवासियों के पर्व करमा-एकादशी व सरहुल आदि की भी शास्त्रीय पद्धति विद्यमान है तथा वनवासी-आदिवासी भी बड़ी श्रद्धा के साथ ब्राह्मणों को बुलाकर अनुष्ठान सम्पन्न कराते थे। आज भी सहजता से सहज आदिवासियों के मध्य यदा-कदा यह दृष्टिगोचर होता है। संख्या पहले की अपेक्षा विगत कई वर्षों में कम हुई है। क्योंकि कुछ आलोचकों का ध्येय ही लोगों को परम्परा से दिग्भ्रमित करना है। इसी दृष्टि से छठ को भी दर्शाने की होड़ मची हुई है।

वास्तविकता यह है कि छठ-पर्व इतने बड़े पैमाने पर होने लगा कि उक्त व्रतियों की अपेक्षा पुरोहितों की पर्याप्त संख्या मिली नहीं। जो हैं, वे बड़े-बड़े लोगों के द्वारा अपने घाट पर बुला लिये जाते हैं। ये बड़े-बड़े लोग पर्याप्त दक्षिणा देकर विधानपूर्वक पूजा कराते हैं, प्रातःकाल कथा सुनते हैं। आजकल तो पुरोहितों को आकृष्ट करने के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद सबका प्रयोग तक कर बैठते हैं। किन्तु विडम्बना यह है कि अधिकतर पुरोहितों को भी छठ निमित्त पूजा-पद्धति ज्ञात नहीं है। वे जहाँ जाते हैं, वहाँ अपनी स्वल्पमति के अनुसार साधारण क्रम में पूजा कराते हैं।

दूसरी ओर सच्चाई यह है कि आज भी एक गाँव अथवा मोहल्ला में व्रत करनेवाले हजार हैं और पण्डितों की संख्या मात्र ५-६ है। एक समय में सभी स्थानों में पूजा होती है। वे एक साथ सब स्थान पर तो जा नहीं सकते हैं। तब शेष व्रती पारम्परिक विधि से पूजा करने से वंचित रह जाते हैं। इसलिये वे अपनी लोक-विधि से ही पूजा कर सन्तुष्ट हो जाते हैं। प्रतिवर्ष करते रहे हैं, तो उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती है। एक ओर छठ को लोक आस्था के महापर्व तक संकुचित कर शास्त्र से काट दिया गया, तो वहीं दूसरी ओर पुरोहितगण भी समयानुसार छठ की मूल पद्धति से उपेक्षित होते चले गये।

लोक भी तभी ग्राह्य या सदाचार के रूप में स्वीकृत हो सकता है, जब वह श्रुतियुक्त हो। आचार्य कुल्लुक भट्ट अपनी टीका में कहते हैं – ''**अथ धर्मव्याख्या स्थानः। श्रुति हि धर्ममूलम्। श्रुति द्विविधा। वैदिकी तान्त्रिकी च।**'' छठ की पूरे विधान के साथ पुरानी पद्धति है, पूजा के मन्त्र हैं, पूजा के समय पढ़ी जानेवाली कथा भी मूल संस्कृत में है। अत एव आज आवश्यकता है कि हम स्वयं मूल पद्धतियों को देखें, पढ़ें तथा समयानुसार उसका उपयोग करें। इससे अपनी परम्परा भी बनी रहेगी, एकरूपता रहेगी, जो संस्कृति का संवाहक होगी।

मिथिला में तो बहुत पुराना विधान है ही, अपितु मगध में भी ऐसी पद्धति है। म.म. रुद्रधर ने 'प्रतीहारषष्ठीपूजा विधिः' के नाम से इसकी पुरानी विधि दी है। वर्षकृत्य में यह विधि उपलब्ध है।

नियमपूर्वक चतुर्थी को व्रतारम्भ हेतु शुद्ध सात्त्विक अन्न ग्रहण करें, जिसे लोक व्यवहार में नहाय-खाय या कद्दू-भात कहते हैं। पंचमी को सारे दिवस निर्जला उपवास कर सायंकालीन अर्घ्यादि देकर एकभुक्त हो खरना अर्थात् परमान्न का प्रसाद ग्रहण करें। षष्ठी को सायंकाल

नदी-पुष्करादि पर नित्य क्रिया सम्पन्न कर सधवा स्त्रियाँ गौरी-पूजन व विधवायें विष्णु-पूजन कर संकल्प लें – ''**नमोऽदयकार्तिकमासीय शुक्लपक्षीय षष्ठ्यां अमुक गोत्राया: मम अमुकी देव्या: इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदु:खदारिद्र्य-सकलपातकक्षयापस्मार-कुष्ठादि-महाव्याधि-सकलरोगक्षय-चिरजीवि-पुत्रपौत्रादिलाभ-गोधन-धान्यादि-समृद्धिसुख-सौभाग्यावैध्यव्य-सकलकामावाप्तिकामा अद्य श्वश्च सूर्य्याय अर्घमहं दास्ये।**''

शास्त्रोक्ति है कि संकल्प किये बिना किसी भी अनुष्ठान का फल नहीं मिलता। संकल्प नहीं करने से कार्य नित्यकर्म हो जाते हैं तथा मनोऽभीष्ट फल-लाभ न होकर केवल चित्तशुद्धि में सहायक होते हैं। नित्यकर्म करने से कोई पुण्य नहीं होता, अपितु न करने से पाप तक लगता है। अब पुन: लोक की ओर उन्मुख होते हैं, जहाँ छठ के औचित्य पर प्रश्न उसे करनेवाली व्रतियों से किया जाता है –

'हम तोसे पूछी बरतिया ए बरतिया से केकरा लागी,
हे करेलू छठ बरतिया से केकरा लागी'

इसी प्रश्न का उत्तर हमारा शास्त्रोक्त संकल्पवाक्य है। छठ व्रत करने से जन्म-जन्मान्तर के सभी दुख व दरिद्रता का नाश हो जाता है और महापातक का भी क्षय होता है। इसे करने से मिर्गी व कुष्ठादि महाव्याधियों सहित सभी रोगों का निदान होता है। व्रतियों के पुत्रादि को चिरजीवन-प्राप्ति तथा पौत्रादि संतति की चिरवृद्धि होती है। उनके यहाँ गोधन व धान्यादि का अभाव नहीं होता है तथा सुख-समृद्धि का सदैव निवास होता है। व्रतियाँ चिरसौभाग्यवती होती हैं तथा उन्हें वैधव्य नहीं भोगना पड़ता। इस छठ व्रत को करने से सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

संकल्प के पश्चात् सूर्य देव का आवाहन करें – ''नमो भगवन् सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ...'' इत्यादि। तत्पश्चात् ताम्रपात्र में रक्तचन्दन, दूर्वाक्षत, रक्तपुष्प और गुड़ के साथ बनाई हुई घी में पकाई पकवान जैसे ठेकुआ या कसार से अर्घ्य दान करें। यहाँ परम्परागत रूप में अर्घा या कोशे के रूप में ताम्रपात्र का ही उल्लेख है। सम्भवत: ताम्र सहजता से उपलब्ध न होने के कारण ही बाँस या पीतल के सूप का प्रयोग प्रशस्तिपात्र के रूप में होने लगा। ठेकुआ आदि पकवान, फलों के साथ सूप में सजाकर परिक्रमा करते हुए अर्घ्य की धार किसी दूसरे से दिलवाना, तो कहीं लोटे से अर्घ्य स्वयं देकर पुन: सूप लेकर परिक्रमा करना लोकाचार है। शास्त्रानुरूप ताम्रार्घ्य पात्र में केवल रक्तचन्दन, दूर्वाक्षत, रक्तपुष्प व गुड़, घी से बने नैवेद्य के साथ ही व्रतियों के अर्घ्य देने का विधान है। जल में खड़े होकर हाथों को उठाकर अर्घ्य इस मन्त्र से दान करने का विधान है –

नमोऽस्तु सूर्याय सहस्रभानवे
नमोऽस्तु वैश्वानरजातवेदसे।
त्वमेव चार्घ्यं प्रतिगृहाण
देवाधिदेवाय नमो नमस्ते।।
नमो भगवते तुभ्यं नमस्ते जातवेदसे।
दत्तमर्घ्यं मया भानो त्वं गृहाण नमोऽस्तु ते।।
ज्योतिर्मय विभो सूर्य तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।
एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां प्रीत्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।
एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितं प्रभो।।

अर्घ्य के अनन्तर सूप अर्थात् प्रशस्तिपात्र में मृत्तिका निर्मित कोशी (कशोरो) में समस्त घृत-गुड़ निर्मित नैवेद्य, ऋतुफलादि को सजाकर प्रदक्षिणा करते हुए उस पर दुग्ध-धार देने की परम्परा स्वीकृत है। इन्हीं नैवेद्यों को भली-भाँति सूपादि में सजाकर दउरा (बाँस की टोकरियों) में रखकर श्रद्धा से व्रतियों के पति-पुत्रों, परिजनों के द्वारा स्वगृह से नदी-तट तक ले जाया जाता है। इसी का बहुत ही सुन्दर चित्रण लोक परम्परा में द्रष्टव्य है –

कांच ही बाँस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाय।
बहंगी लचकत जाय
बाट जे पूछेला बटोहिया, बंहगी केकरा के जाय।।
बंहगी केकरा के जाय
तू तो आन्हर होवे रे बटोहिया, बंहगी छठ मैया के जाय।
बहंगी छठ मैया के जाय
ओहरे जे बारी छठि मैया, बहंगी उनका के जाय।
बहंगी उनका के जाय।।

तत्पश्चात् जल से बाहर आकर पूजोक्त विधान प्राप्त होता है। '**इदं रक्तचन्दनं नम: श्रीसूर्याय नम:।**'' इत्यादि मन्त्रों से स्वसामर्थ्यानुसार यथोपचार से संज्ञया सहित भगवान सूर्य और षष्ठी देवी का विधिवत् पूजन करें। सूर्य-पूजा में बिल्वपत्र व तुलसी पत्र का निषेध है। षष्ठी देवी को बिल्वपत्रार्पण कर

सकते हैं। पूजोपरान्त प्रणाम मन्त्र से साष्टांग प्रणिपात करें। पूर्वोक्त नियमानुसार ही प्रात:कालीन पूजा अर्घ्यादि सम्पन्न कर प्रज्वलित प्रदीप, नैवेद्य, फल, वस्त्रादि सहित कोशियों को प्रवाहित करें। स्कन्द पुराणोक्त विवस्वत् षष्ठी की कथा-श्रवण के पश्चात् विसर्जन कर पुरोहित को दक्षिणा अवश्य दें –''**नमोऽदय कृतैतत् विवस्वत् षष्ठीव्रतकरण तत्कथा-श्रवणप्रतिष्ठार्थमेताद्-द्रव्यमूल्यकंहिरण्यमग्नि-दैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे।**'' गृह पर आमन्त्रित कर ब्राह्मण-भोजन करा कर पारण करें। मीमांसकों व स्मृति-निबन्धकारों का मत है कि जिस प्रकार संकल्प के बिना फल प्राप्त नहीं होता, ठीक उसी प्रकार संकल्प की पूर्ति दक्षिणा देने के बाद ही होती है। अर्थात् दक्षिणा देने से ही कार्य पूर्ण होता है।

भारद्वाज ऋषि के अनुसार 'यज्ञ: कर्मसुकौशलं' अर्थात् यज्ञ कर्म को कुशलतापूर्वक करना चाहिए। छठ-व्रत भी एक श्रेष्ठ यज्ञ ही है, जहाँ पूरे मनोयोग के साथ व्रतियों के द्वारा, श्रद्धा और भक्ति के अन्तसंयोग तथा अत्यन्त शुचिता व तपश्चर्या के साथ इस चतुर्दिवसीय यज्ञ का आयोजन किया जाता है। शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ को पंचागमसम्पन्न कहा गया है – देवता, हविद्रव्य, मन्त्र, ऋत्विक् और दक्षिणा। किसी भी एक अंग के नहीं होने से यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकता।

छठ व्रत में संज्ञासहित भगवान भुवनभास्कर और देवी षष्ठी ही देवता हैं। देवताओं के उद्देश्य से द्रव्य-त्याग करना ही यज्ञ है। देवता निमित्त त्याज्य द्रव्य ही देवताओं का हविर्द्रव्य है। भामती में वाचस्पति मिश्रानुसार – ''**देवतामुद्देश्य हविरवमृश्य च तद्विषयसत्त्वत्याग इति यागशरीरम्।**'' पूजोपरान्त नदी में प्रज्वलित प्रदीप, नैवेद्य, फल, वस्त्रादि सहित कोशियों को जल में प्रवाहित करना ही इस विवस्वान षष्ठी रूपी यज्ञ में हविर्द्रव्य का सात्त्विक भाव से त्याग करना ही उपयुक्त आहुति है। आहुति ही फल-प्राप्ति का मार्ग है। शक्तिसम्पन्न शब्दराशि ही मन्त्र है, जिसके प्रभाव से हवि देवता के समीप भोग्य-रूप से पहुँचता है। विद्वान ब्राह्मण पुरोहित जो समस्त मन्त्रों का वाचन कर पूजा को कराता है, वही ऋत्विक् है। पूजान्त पुरोहित को उनके पारिश्रमिक रूप में जो उपहारों सहित द्रव्य दान दिया जाता है, वही दक्षिणा है। कर्म कराकर सामर्थ्यानुसार उपयुक्त दक्षिणा नहीं देने से कर्म पूर्ण रूप से फल उत्पन्न नहीं कर सकता। देवता का ज्ञान होने से आप अपनी भक्ति के द्वारा मुक्ति-विधान तो कर सकते हैं, किन्तु जागतिक जगत में अथवा सकामोपासना में यज्ञ के अन्य चारों अंगों का होना अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। शास्त्रोक्ति है –

देवाधीनं जगत् सर्वम् मन्त्राधीना च देवता।
ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीना तस्मात् ब्राह्मणो देवता।।

यह समस्त चराचर जगत देवताओं के अधीन है और वे देवतागण मन्त्रों के अधीन हैं तथा यह समस्त मन्त्र ब्राह्मणों के अधीन हैं। इसलिये ब्राह्मण ही देवता हैं। मन्त्रोच्चार के बिना जितना भी आप चाहें, सकाम कर्म में देव-आवाहन नहीं हो सकता। यदि आप मन्त्रों को स्वयं कण्ठस्थ कर पाठ करें, तो भी कार्य न बनेगा, क्योंकि आप ऋत्विक् नहीं हैं। यहाँ तक कि ब्राह्मणों के घरों में भी अनुष्ठान होने पर वे भी अन्य ब्राह्मण पुरोहितों को श्रद्धापूर्वक आमन्त्रित करते हैं। कर्म के पश्चात् दक्षिणा नहीं देने से संकल्पसिद्धि नहीं होती।

अत एव किसी अनुष्ठान में यज्ञ के पाँचों अंगों की अनिवार्यता है। किसी भी एक अंग की अनुपस्थिति में कार्य अपूर्ण रहता है व फलोपेक्षाकृत अधोगति का ही मार्ग प्रशस्त करता हैं। यदि आप वितर्क करें कि शास्त्रीय विधि, मन्त्रों व पुरोहित की क्या आवश्यकता है, तो महापुरुषों का यही उत्तर होगा कि आपकी कितनी भक्ति है? यह तो आपके भगवान ही जानते हैं। किन्तु भगवान स्वयं शास्त्रोचित कर्म करने का ही उपदेश देते हैं तथा शास्त्र किसी भी अनुष्ठान में यज्ञ के इन पंचागों की अनिवार्यता मानते हैं। सदैव मनन रहे कि लोक शास्त्राधीन होकर ही सदाचार के रूप में स्वीकृत होता है। भगवान स्वयं गीता में कहते हैं –

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि।। ○○○

रामगीता (५/१)

पं. रामकिंकर उपाध्याय

(पं रामकिंकर महाराज श्रीरामचरितमानस के अप्रतिम विलक्षण व्याख्याकार हैं। रामचरितमानस में रस है, इसे सभी जानते हैं और कहते हैं, किन्तु रामचरितमानस में रहस्य है, इसके उद्घाटक 'युगतुलसी' की उपाधि से विभूषित श्रीरामकिंकर जी महाराज हैं। उन्होंने यह प्रवचन रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर के पावन प्रांगण में विवेकानन्द जयन्ती के उपलक्ष्य में दिया था। 'विवेक-ज्योति' हेतु इसका टेप से अनुलेखन श्रीराम संगीत महाविद्यालय, रायपुर के सेवानिवृत्त प्राध्यापक श्री राजेन्द्र तिवारी जी और सम्पादन स्वामी प्रपत्त्यानन्द ने किया है। – सं.)

एक बार प्रभु सुख आसीना।
लछिमन बचन कहे छलहीना।।
सुर नर मुनि सचराचर साईं।
मैं पूछउँ निज प्रभु की नाईं।।
मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा।
सब तजि करौं चरन रज सेवा।।
कहहु ग्यान बिराग अरु माया।
कहहु सो भगति करहु जेहिं दाया।। ३/१३/५-८
ईश्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौ समुझाइ।
जाते होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ।। ३/१४/०

परम श्रद्धेय स्वामी सत्यरूपानन्द जी महाराज और अन्य समस्त सन्तों के चरणों में मेरा बार बार नमन है, प्रणाम है और आप सब जिज्ञासु श्रोताओं का स्वागत। अभी आपके सामने जो पंक्तियाँ पढ़ी गईं, उसके वक्ता भी विलक्षण हैं, और श्रोता भी बड़ा अनोखा है। वक्ता के रूप में स्वयं श्रीरामभद्र और श्रोता के रूप में लक्ष्मण जी महाराज और उन प्रश्नों के साथ-साथ एक अनोखी बात कही कि कृपा कर आप मुझे इस तरह से समझा दीजिए, ज्ञान क्या है, वैराग्य क्या है, माया क्या है, भक्ति क्या है। प्रभु ने मुस्कुराकर देखा – इतना सुनने के बाद अभी तुम्हें कुछ करना शेष है क्या? तब उन्होंने बड़ा अनोखा वाक्य कहा, लक्ष्मणजी ने कहा कि आप इस तरह से समझाइए कि सब कुछ छोड़कर मैं आपके चरणों की सेवा करूँ। पढ़कर कितना विचित्र लगता है और भगवान श्रीराघवेन्द्र को भी कैसा अनोखा लगा होगा, जब लक्ष्मणजी यह कहें कि आप कृपाकर ऐसी शिक्षा दीजिए कि मैं सब कुछ छोड़कर आपके चरणों की सेवा करूँ। जिसने पत्नी, परिवार, माता, पिता, ऐश्वर्य, भोग, सबका परित्याग कर दिया हो, क्या उसको अभी छोड़ना कुछ शेष है क्या? लोग तो थोड़े से त्याग में ही अपने को त्यागी मान लेते हैं, पर जिसने सर्वत्याग कर दिया है, वे लक्ष्मणजी यह कहते हैं कि मैं सब कुछ छोड़कर आप की सेवा करूँ।

जो सजग साधक होता है, उसकी दृष्टि बड़ी विलक्षण होती है। उसकी तुलना प्रयोगशाला में जो रक्त आदि का परीक्षण करते हैं, उन चिकित्सक, डॉक्टरों से की जा सकती है। जब रोग की चिकित्सा करने के लिए किसी योग्य डॉक्टर के पास आप जाते हैं, तो प्रत्यक्ष देखकर यह समझ में नहीं आता कि आपके जो रोग हैं, वे क्यों हैं। तो बहुधा वे लिख देते हैं कि आप रक्त और अन्य वस्तुओं की परीक्षा कराइए। जब आप उस परीक्षण का परिणाम लेकर आयेंगे, तब मैं आपके लिए दवा का निर्णय करूँगा। जब एक डॉक्टर प्रयोगशाला में वैज्ञानिक पद्धति से यंत्र के माध्यम से रक्त को देखता है, तो साधारणतया देखने में तो सब रक्त एक जैसा लगता है, पर रक्त में कोई सूक्ष्म कीटाणु, जो इन आँखों से नहीं दिखाई देते, वे छिपे हुए हैं और उसके पास जो यंत्र है, वह उन कीटाणुओं को बहुत बड़े से बड़े रूप में दिखा देता है और तब डॉक्टर उसे देखते हैं कि रक्त में ये कीटाणु सूक्ष्म रूप में हैं। अन्य वस्तु की परीक्षा में भी जब वह उन रोगाणुओं को खोजता है, जो बिना यंत्र के, आँखों से दिखाई नहीं देते, तब उस रिपोर्ट को लेकर डॉक्टर के पास जाते हैं और रिपोर्ट देखकर उसे यह पता चल जाता है कि इस व्यक्ति के शरीर में इस कीटाणु का प्रवेश हुआ है और तब वह बड़ी प्रसन्नता से औषधि देता है।

पर एक विचित्र बात है। अगर कोई डॉक्टर से यह कहे कि ये जो रक्त आदि वस्तुएँ जाँच के लिए गई थीं, उसमें

कोई दोष नहीं पाया गया, तो शायद रोगी को इससे प्रसन्नता हो, पर डॉक्टर तो उससे सन्तुष्ट नहीं होगा। रोग है, लक्षण है, पर वह पकड़ में नहीं आ रहा है, तब तो यह और भी अधिक चिन्ता की बात है। उसकी समस्या और गहराई में होगी। ठीक यही स्थिति मन के रोगों के सन्दर्भ में है। मन के कुछ रोग ऐसे हैं, जो सामने दिखाई दे जाते हैं। आपको क्रोध आ जायेगा, तो दिखाई देगा कि अरे! यह तो क्रोध है। इसी प्रकार से कई विकार ऐसे होते हैं, जो व्यक्ति के सामने होते हैं। अगर वे होते भी हैं, तो उसमें विचित्र व्यंग्य यह है कि वह दोष सामनेवाले व्यक्ति को तो दिखाई देता है, पर जिसमें होता है, उसे दिखाई नहीं देता। यह विचित्र विडम्बना है। वस्तुत: यदि हम यह जानना चाहते हैं कि हमारे मन में कोई सूक्ष्म रोग तो नहीं है, तो हमें उसे बड़ा करके देखने के लिए, गुरु से आग्रह करना चाहिए, क्योंकि गुरु वैद्य हैं, डॉक्टर हैं, उनसे हम यह अनुरोध करें कि आप बतावें कि मुझमें कौन-सा सूक्ष्म दोष विद्यमान है। तब वह दोष उस दृष्टि के माध्यम से बहुत विस्तृत रूप में हमारे सामने दिखाई देगा। ऐसी स्थिति में एक चिकित्सक, एक गुरु उसके निराकरण के लिए औषधि देगा। वस्तुत: गोस्वामीजी ने भी वही बात कही। अगर जाँच के बाद वे यह घोषित कर दें कि इसमें तो कोई दोष नहीं है, तो डॉ क्टर निराश हो जाता है। इसी प्रकार से गोस्वामीजी ने कहा कि अगर किसी व्यक्ति को यह लगता है कि मुझमें कोई दोष नहीं है, तो यह ठीक नहीं है। कई लोग ऐसे होते हैं, तो समझ लेना चाहिए कि वे बहुत बड़े धोखे में हैं। क्योंकि दोष तो है ही। गोस्वामीजी ने स्पष्ट कह दिया कि यह मत कहिए कि किसमें है, किसमें नहीं है, वह तो स्पष्ट सूत्र है – 'है सबके' – सबमें दोष है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जिसमें न हो –

एहि बिधि सकल जीव जग रोगी। ७/१२१/१

बहुत बढ़िया बात कही गई। यदि कोई प्रसन्न दिखाई दे, तो आप क्या कहेंगे कि वह रोगी है? पर उसमें कहा गया कि उसको सही अर्थों में लीजिएगा, यह हम नहीं कह रहे हैं कि आप मायूस रहिए। मायूस रहना भी स्वयं एक रोग है। इसका अभिप्राय यह है कि –

सोक हरष भय प्रीत वियोगी।। ७/१२१/१

कोई ऐसा व्यक्ति है ही नहीं जिनमें मन का रोग विद्यमान न हो। उसकी मात्रा में भिन्नता होती है। वह किसी में अत्यन्त अल्प मात्रा में और किसी में बहुत अधिक मात्रा में विद्यमान होता है। जो व्यक्ति उस रोग का निराकरण चाहता है, उसके अपने दोषों को बड़ा करके देखने का अभ्यास होना चाहिए। इसलिए रामायण के सब के सब महान से महान भक्त अपने आप में जिन दोषों की बात कहते हैं, तो बड़ा आश्चर्य होता है। श्रीहनुमानजी से प्रभु ने पूछा – ब्राह्मण देवता, आपका क्या परिचय है? हनुमानजी पवनपुत्र हैं, शंकरजी के अवतार हैं और सकल-गुणनिधानम् हैं। पर हनुमानजी अपने परिचय में इस शब्दावली का प्रयोग करते हैं। हनुमानजी ने कहा – मेरा परिचय कुछ शब्दों में ही है –

एकु मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अग्यान। ४/२/०

मैं मन्द हूँ, मैं मोह के वश में हूँ, कुटिल-हृदय हूँ और अज्ञानी हूँ। अब यह तो हनुमानजी में कोई कहीं ढूँढ़कर भी नहीं निकाल सकता। पर हनुमानजी को ऐसा प्रतीत होता है और उस प्रतीति के पीछे एक विशेष महत्त्व का सूत्र है। आशा है, आप सजग होकर सुन रहे होंगे। कम से कम निद्रारोग से तो बचकर ही सुनेंगे, नहीं तो सुनाई ही नहीं देगा। उसका अभिप्राय यह है कि जब भक्त अपने दोषों को बहुत विस्तृत रूप में देखता है, जो दूसरों को दिखाई ही नहीं देते हैं, तो उसका परिणाम होता है कि उस दोष के निराकरण के लिए वह प्रभु से निवेदन करता है। मुझमें यह दोष है, यह कमी है और यह आपकी कृपा के बिना कभी दूर नहीं होगी। जैसे एक रोगी वैद्य से कहता है कि मैं रोग को नहीं पकड़ पा रहा हूँ, आप डॉक्टर हैं, आप महान वैद्य हैं, आप ही इस रोग की दवा दें। इस प्रकार से जो व्यक्ति अपने रोग को बड़े से बड़े रूप में देखता है और देखकर वह निराश नहीं हो जाता, बल्कि उसे दूर करने का प्रयास करता है।

अगर वह अपने जीवन में दोष देखकर निराश हो जायेगा, तब तो दोष देखना बड़ा घातक है। जैसे गुण देखना अभिमान की वृद्धि करता है, इसी प्रकार से व्यक्ति अपने जीवन में दोष देखेगा, तो उसमें हीनता की वृत्ति आयेगी। पर नहीं-नहीं, दोष देखने के बाद भी उसे एक विश्वास है और वह विश्वास उसे निराश नहीं होने देता। इसके लिए वह भगवान की शरणागति ग्रहण करता है। हनुमानजी ने इन दोषों को देखने के बाद बड़ी भावपूर्ण और यथार्थ बात कही। प्रभु ने कहा कि आपको तो बड़ा दुख होता होगा,

आप अपने आप को मंद बता रहे हैं, मोहवश बता रहे हैं, कुटिल हृदय और अज्ञानी बता रहे हैं। हनुमानजी ने बड़ी भावपूर्ण बात कही – प्रभु, मुझे इन दोषों से निराशा नहीं होती। मुझे सबसे बड़ा दुख यह है कि आपने अभी पूछा कि ब्राह्मण देवता, आप कौन हैं? इसका अर्थ है कि आप मुझे भूल गये। आप मुझे भूल गये, तो इससे बढ़कर मेरे लिए दुख की बात और कुछ हो ही नहीं सकती। उसके पश्चात् और स्पष्ट कर देते हैं। आप कह सकते हैं कि तुमने पूछा, तो मैंने भी पूछा। तो मैं यही कहूँगा –

मोर न्याउ मैं पूछा साईं।
तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं।।
तव माया बस फिरऊँ भुलाना।
ताते मैं नहि प्रभु पहिचाना।। ४/१/८-९
नाथ जीव तव मायाँ मोहा।
सो निस्तरइ तुम्हारेहिं छोहा।। ४/२/२

प्रभु यह जीव मोहित है। यह हनुमानजी और भक्ति की विशेषता है। मोह को विनष्ट करने की चेष्टा साधक के द्वारा किया ही जाता है, पर मोह के मूल में कौन है? तब वह जो हनुमानजी का वाक्य है – '**नाथ जीव तव मायाँ मोहा**'। प्रभु, इस मोह के मूल में आपकी माया है और वह माया जब व्यक्ति को मोहित करती है, तो उससे छूटने का उपाय अन्य किसी के पास नहीं है। भगवान गीता में कहते हैं –

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया। ७/१४

उस माया को कोई पार नहीं पा सका, न पा सकेगा। कोई पार पा सकता ही नहीं। हनुमानजी ने कहा, उसका उपाय तो एक ही है – सो निस्तरइ तुम्हारेहिं छोहा। आप अपने स्नेह से, छोह से, प्यार से उसके दोषों को नष्ट कर दें। मानो वही भक्त के जीवन का दर्शन है। यहाँ तक कि श्रीभरतजी भी अयोध्याकाण्ड में यह कहते हैं – **मोहि समान को पाप निवासू। २/१७८/३**

संसार के पापियों में भी मैं सबसे अधिक पापी हूँ। बड़ा विचित्र प्रतीत होता है! वहाँ पर भी शरणागति का वही महत्त्व है। भरतजी अन्त में कहते हैं कि मैं तो निश्चित रूप से पाप और अपराध से भरा हुआ हूँ। अब देखिए, सूक्ष्म दृष्टि क्या है। हनुमानजी से यदि पूछा जाय कि आप कैसे कहते हैं कि आप मन्द हैं, आप मोहवश हैं? हनुमानजी के कहने का तात्पर्य क्या है? प्रभु, आप सामने थे और मैं आपको नहीं पहचान पाया, तो आँख में कोई कमी तो होगी, दोष है न! यदि मेरी बुद्धि में मंदता न रही होती, तो आपको तुरन्त पहचान न लेता? मानो हनुमानजी ने और अधिक सूक्ष्म दृष्टि से अपने दोषों को देखा। श्रीभरतजी कहते हैं कि पापी वह माना जाता है, जो दूसरों को कष्ट दे। पर मैं साक्षात् ईश्वर को कष्ट दूँ, तो मुझसे बड़ा पापी संसार में और कौन होगा? फिर वही सूत्र जुड़ा हुआ है। अगर कोई श्रीभरत से पूछे कि आप संसार के सबसे बड़े पापी के रूप में अपना परिचय दे रहे हैं, तो चित्रकूट क्यों जा रहे हैं? बोले, मुझे एक रहस्य का पता चल गया। क्या?

क्रूर कुटिल खल कुमति कलंकी।
नीच निसील निरीस निसंकी।। २/२९८/२

उन्होंने क्रूर, कुटिल, दुष्ट, कुबुद्धि, कलंकी, नीच, शीलरहित, निरीश्वरवादी-नास्तिक और नि:शंक-निडर, ये नौ प्रकार के पापियों के नाम गिनाए। उन्होंने भगवान के स्वभाव, शील, दयालुता, कृपालुता का वर्णन सुना और सुनकर क्या किया?

तेउ सुनि सरन सामुहें आए।
सकृत प्रनामु किहें अपनाए।। २/२९८/३

उन्होंने सुना और आकर सामने खड़े हो गये। प्रभु को प्रणाम किया और प्रभु ने उन्हें अपना लिया। इसलिए बहुत मीठी बात उन्होंने कही, महाराज आप सर्वज्ञ तो हैं, पर कितना भी दोष भरा व्यक्ति आवे, आप उसके दोष नहीं देख पाते –

देखि दोष कबहुँ न उर आने।
सुनि गुन साधु समाज बखाने।। २/२९८/४
सो गोसाइँ नहिं दूसर कोपी।
भुजा उठाइ कहऊँ पन रोपी।। २/२९८/६
यों सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर।
को कृपाल बिनु पालिहै बिरिदावलि बरजोर।।
२/२९९/०

इसका अभिप्राय है कि अपने दोषों को जानना चाहिये, उसे गहराई से देखना चाहिये। उन दोषों को जानने और देखने के बाद अगर हम उन्हें दूर कर सकते हैं, तो दूर करने का प्रयत्न कीजिए। प्रयत्न करते-करते यदि थक जायें, तो भगवत शरणागति के द्वारा उन रोगों का, दोषों का निराकरण हो सकता है, यह विश्वास अपेक्षित है। **(क्रमश:)**

छठ-पूजा विशेष

छठ-पूजा का वैज्ञानिक महत्त्व

श्रीमती मिताली सिंह, बिलासपुर

बच्चो! भारत में छठ-पूजा बड़े धूम-धाम से मनायी जाती है। भारतीय संस्कृति का यह बहुत महत्त्वपूर्ण और महान पर्व है। इस पर्व की धार्मिकता और आध्यात्मिकता से तो लोग परिचित हैं, किन्तु आज हम तुम्हें इसकी वैज्ञानिकता के सम्बन्ध में बतायेंगे। महापर्व छठ-पूजा में वैज्ञानिकता क्या है? कार्तिक महीने की षष्ठी तिथि का एक विशेष खगोलीय महत्त्व भी है। इस समय धरती के दक्षिणी गोलार्द्ध में सूर्य रहता है और दक्षिणायन के सूर्य की पराबैंगनी (अल्ट्रावॉयलेट) किरणें धरती पर सामान्य से अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाती हैं। क्योंकि इस समय सूर्य तुला राशि में होता है। इसका दुष्प्रभाव जीवों के आँख, पेट और त्वचा पर पड़ता है। सूर्य की पराबैंगनी किरणों से जीवों को हानि न पहुँचे, इसलिए सूर्य की पूजा की जाती है। नहाये-खाये से इस पूजा को आरम्भ किया जाता है। इस दिन लौकी की सब्जी, चना-दाल और भात खाते हैं। लौकी में प्रचुर मात्रा में जल, फाईबर और विटामिन होता है। चना दाल से हमें प्रोटीन और भात से हमें कार्बोहाइड्रेट प्राप्त होता है, जो हमारे शरीर को हाईड्रेट कर व्रत के लिए ऊर्जा प्रदान करता है तथा पाचन-तन्त्र को स्वस्थ रखता है। प्रसाद के रूप में दूध से बनी खीर दी जाती है। चावल को गुड़ के साथ चूल्हे में आम की लकड़ी जलाकर पीतल के बर्तन में बनाया जाता है। दूध से हमें कैल्शियम, प्रोटीन और विटामिन डी प्राप्त होता है। प्रोटीन शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है और उतकों की मरम्मत में सहायक है। गुड़ में आयरन, मैग्निशियम तथ खनिज होते हैं, जो शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है और खून की कमी को पूरा करता है। पीतल में ताँबा (कॉपर) और जिंक होता है। ताँबा हिमोग्लोबिन बनाने में सहायक होता है। धातु के सूक्ष्म तत्त्व भोजन में मिलने से बैक्टिरियल गुण भोजन को शुद्ध रखते हैं। विज्ञान के अनुसार पानी में कमर तक डूबकर सूर्य को देखना अच्छा होता है। इससे ट्रॉक्सिफिकेशन की प्रक्रिया होती है। सूर्य की किरणों में १६ कलाएँ होती हैं, सुबह के समय अर्घ्य देते समय तिरछे जल की धारा परिवर्तित होकर जितनी बार आँखों तक पहुँचती है, उससे शरीर को नियन्त्रित करनेवाला स्नायुतन्त्र सक्रिय हो जाता है। मस्तिष्क की कार्य-क्षमता बढ़ जाती है। दीपावली के बाद सूर्य का ताप पृथ्वी तक कम पहुँचता है। इसलिए व्रत के साथ सूर्य की किरणों के माध्यम से ऊर्जा का संचय किया जाता है, ताकि शरीर सर्दी के महीने में स्वस्थ रहे। छठ महापर्व में ३६ घण्टे का उपवास पाचनतन्त्र के लिये लाभदायक होता है। इससे शरीर की आरोग्य-क्षमता में वृद्धि होती है। यह शरीर को शुद्ध कर मानसिक शान्ति को बढ़ाता है। सूर्य की किरणें विटामिन-डी की कमी को पूर्ण करती हैं। क्योंकि कार्तिक महीने में सूर्य की किरणों में सबसे अधिक विटामिन-डी पाया जाता है। छठ-पूजा में गन्ना, अदरक, हल्दी, मूली से सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। इन प्रसादों से भी शरीर की जीवनीशक्ति बढ़ जाती है।

इसी प्रकार सूर्य-उपासना का पर्व हमें अध्यात्म, विज्ञान, प्रकृति और समाज से जोड़ता है। इस पूजा में बाँस से बने सूप और दौरा जैसे प्राकृतिक वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है।

यह अनुष्ठान नदी या तालाब के घाट पर सामूहिक रूप से एकत्रित होकर मनाया जाता है, जो एकता का प्रतीक है। छठ-पूजा न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि ये हमारे स्वास्थ्य, समाज और प्रकृति के साथ संतुलन बनाने का एक प्रतीक है। तो बच्चो! इसी प्रकार हर एक त्यौहार मनाने का सीधा सम्बन्ध हमारे शरीर और विज्ञान से है। इसीलिए ऋतु-परिवर्तन पर इस प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान मनाया जाता है। ○○○

काली-पूजा विशेष

विविध रूपों में काली

स्वामी अलोकानन्द, रामकृष्ण अद्वैत आश्रम, वाराणसी

अनुवादिका – रीता घोष, बैंगलुरु

कलियुग में एकमात्र काली ही भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी हैं, ऐसा कालीकुल के शास्त्रों का अभिमत है। कुमारी तन्त्र में कहा गया है कि महाशक्ति का काली रूप विशेष रूप से मनुष्य को भुक्ति-मुक्ति प्रदायक है। काली के उपासकों में जिस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, चन्द्र, वरुण आदि देवता हैं, उसी प्रकार दुर्वासा, वशिष्ठ, दत्तात्रेय, बृहस्पति आदि ऋषिगण भी स्मरणीय हैं। तारा रहस्य में कहा गया है –

कलौ जागर्ति काली च कलौ जागर्ति पन्नगी।

कलौ काली कलौ कृष्णः कलौ गोपालकालिका।।[१]

तन्त्रान्तर में ऐसा भी कहा गया है कि कलियुग में काली का परित्याग कर जो सिद्धकामी होते हैं, वे चक्षुहीन होकर दर्पण में रूप देखना चाहते हैं।[२]

इस प्रकार की काली विषयक चर्चा इसके पहले हमलोग केवल दक्षिणाकाली के रूप में तत्त्व का अवलम्बन करते हुए कर चुके हैं। किन्तु तन्त्रशास्त्रों में विभिन्न कालियों का विवरण है। काली स्वरूपत: एक हैं, परन्तु साधक के अधिकार एवं अभीष्टानुसार विभिन्न नाम-रूप शास्त्रों में निर्दिष्ट हैं। महानिर्वाण तन्त्र में कहा गया है –

अरूपायाः कालिकायाः कालमातुर्महाद्युते।

गुणक्रियानुसारेण क्रियते रूपकल्पना।।[३]

तोड़लतंत्र में काली के आठ प्रकार का नाम प्राप्त है। दक्षिणाकालिका, सिद्धकालिका, गुह्यकालिका, श्रीकालिका, भद्रकाली, चामुण्डाकालिका, श्मशानकालिका, महाकाला। महाकाल संहिता में कहा गया है – काली नवविधा – दक्षिणाकाली, भद्रकाली, श्मशानकाली, कालकाली, गुह्यकाली, कामकलाकाली, धनकालिका, सिद्धिकाली एवं चण्डीकालिका। इनके अतिरिक्त और भी अनेक काली नाम विभिन्न ग्रन्थों में मिलते हैं। इस निबन्ध में मूलत: श्मशान काली, सिद्धकाली, गुह्यकाली, भद्रकाली, महाकाली, रक्षाकाली तथा चामुण्डाकाली के विषय में हम संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

१. श्मशानकाली – सभी काली श्मशानवासिनी होने पर भी महाशक्ति-विशेषरूपिणी यह देवी श्मशान काली के नाम से परिचित हैं। ये देवी श्मशानवासिनी अंजनाद्रि अर्थात् काजल के पर्वत जैसी घोर कृष्णवर्णा, त्रिनयनी, मुक्तकेशी, रक्त-लोचना एवं देह-मांसशुष्का हैं। इसलिये देवी अति भयंकरी हैं। इस कल्याणमयी देवी के बायें हाथ में मद्य-परिपूर्ण कपाल है। उनके दाहिने हाथ में शिरोछिन्न नरमुण्ड हैं। स्मितानना देवी सर्वदा कच्चा मांस-चवर्ण में तत्परा हैं। वे आसवपान में नृत्योन्मत्ता हैं। उनके श्रीअंग में नानालंकार शोभित हैं। श्यामारहस्य में उद्धृत है – '**अञ्जनाद्रिनिभां देवीं श्मशानालयवासिनीम्**' इत्यादि। ध्यान का अर्थ करने पर देवी का यह रूप हमें प्राप्त होता है।

तन्त्रान्तर में किञ्चित् परिवर्तित अन्य रूप का वर्णन भी मिलता है, किन्तु एक अदभुत वर्णन ध्यान में प्राप्त होता है। देवी भयंकरी हैं, फिर भी कल्याणमयी, स्मितानना हैं। यदि वे केवल भयंकरी घोर रूपवाली ही होतीं, तो फिर उनकी पूजा कौन करता? कौन उनकी साधना करता? अत: आदर्श जननी रूप कोमलता-कठोरता के सन्निवेश में यह अपूर्व मूर्ति साधक को प्रेरणा, आश्वासन, विश्वास आदि सब कुछ प्रदान करती हैं। माता सर्वदा ही कल्याणमयी हैं।

२. सिद्धकाली – ये दक्षिणाकाली का ही रूप-भेद

हैं। ब्रह्मरूपा भुवनेश्वरी हैं। कालीतन्त्र में सिद्धकाली का ध्यान मन्त्र इस प्रकार है – '**खड्गादिमदिन्दु बिम्बस्वमृत-रसाप्लाविताङ्गी त्रिनेत्रा**' इत्यादि उल्लेख है। अर्थात् देवी का सर्वाङ्ग खड्गादिमत् इन्दुमण्डलनि:सृत अमृत रस द्वारा प्लावित है। देवी त्रिनयना, मुक्तकेशी, वामहस्त स्थित कपाल से विगलित अमृतपान कर रही हैं। दिगम्बरी, कटिदेश में काञ्ची, मस्तक पर मणिमय मुकुट है, दीप्तजिह्वा, नीलोत्पलवर्णा, चन्द्र-सूर्य उनके कुण्डल हैं, वह आलीयपादा अर्थात् वाम पद को सम्मुख रखकर अधिष्ठिता हैं। वे देवी हम सबकी रक्षा करें।

३. गुह्यकाली – इस देवी का वर्णन विविध प्रकार से है, किसी का कहना है कि देवी दशवक्त्रा हैं, कहीं पंचवक्त्रा फिर क्रमश: उर्ध्व में शतवक्त्रा तथा निम्न में एकवक्त्रा पर्यन्त वर्णित है। भरतोपासिता देवी दशवक्त्रा एवं चतुश्पंचाशत् बाहुयुक्ता हैं, ऐसा पुरश्चर्यार्णव में उल्लेखित है। किन्तु प्रचलित ध्यानतंत्रसारधृत – महामेघप्रभा देवी कृष्णवस्त्र परिहिता हैं, लोलजिह्वा, घोर दंष्ट्रा कोटराक्षी एवं

हसन्मुखी हैं, कण्ठ में नागहार, ललाट पर अर्द्धचन्द्र, अंग पर नागयगोपवीत एवं वे नागशय्या पर अधिष्ठिता हैं। उनके गले में पंचाशत मुण्डयुक्त वनमाला है, मस्तकोपरि सहस्रफनयुक्त अनन्त नाग है, सर्वांङ्ग में नानाविध आभूषण है, देवी की बायीं ओर बालकरूपी शिव हैं, देवी प्रसन्नवदना, सौम्या हैं, नारदादि मुनिगणों द्वारा सेविता तथा साधकाभीष्टदायिनी हैं।

४. भद्रकाली – महाभारत के टीकाकार नीलकण्ठसूरी कहते हैं – '**भद्रं कल्याणं कालयति भक्तान् प्रत्यावयति सा भद्रकाली** – अर्थात् जो भक्तों का कल्याण करती हैं, वही भद्रकाली हैं। महाभारत में उनकी उत्पत्ति के विषय में कहा गया है कि देवी के क्रोध से भद्रकाली की उत्पत्ति हुई – **भद्रकालीति विख्याता देव्या कोपाद विनि:सृता।**[४] देवी भागवत में कहा गया है कि प्राचीन काल में अष्टमी तिथि में दक्षयज्ञविनाशिनी भद्रकाली कोटि योगिनियों सहित आविर्भूत हुई थीं।

बृहत्तन्त्रानुसार देवी के ध्यान मन्त्र में कहा गया है, वे क्षुधा से क्षीण, कोटराक्षी, मुख मसी तुल्य मलिन, बिखरे हुये केश और अनवरत रोदन करती हैं और कहती हैं – मैं तृप्त नहीं हुई हूँ, मैं सम्पूर्ण जगत को एक ग्रास में उदरस्थ करूँगी। देवी के दोनों हाथों में ज्वलन्त अग्निशिखा सम पाश हैं, दन्त जम्बूफलसम कृष्णवर्ण हैं। वे साधक का सकल भय दूर करती हैं। इसलिये प्रार्थना करते हैं – '**परिहरतु भयं पातु माम् भद्रकाली**'। इसके अतिरिक्त भी देवी के भिन्न-भिन्न ध्यान-मन्त्र पुरश्चर्यार्णव तथा प्रपंचसार तन्त्रों में प्राप्त हैं।

तन्त्रमतानुसार भद्रकाली महिषमर्दिनी हैं। योगिनी तन्त्र में काली शिव से कहती हैं – 'तुम

महिषी (भैंस) के गर्भ में महिषासुर नाम से जन्म ग्रहण करोगे एवं असुर-भाव से महायुद्ध करोगे, तब मैं भद्रकाली रूप धारण कर तुम्हारा विनाश करूँगी तथा वाम पद-अंगुष्ठ तुम्हारे वक्ष पर स्थापन करूँगी। साधारणत: देवी दुर्गा को ही 'महिषमर्दिनी' कहा जाता है। दुर्गा-ध्यान में भी 'महिषासुरमर्दिनी' का उल्लेख है। आचार्य योगेशचन्द्र राय विद्यानिधि महाशय ने ज्योतिष के अनुसार गणना करके सिद्ध किया है कि देवी भद्रकाली ही दुर्गा हैं। उन्होंने और भी कहा है कि 'महाभारतोक्त दुर्गास्त्व में, मार्कण्डेय पुराण में तथा विष्णुपुराण में दुर्गा यशोदागर्भसम्भूता हैं। वे भद्रकाली अर्थात् काली रूपा हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि दुर्गापूजा के प्रचलन के पूर्व भद्रकाली की पूजा होती थी। बाद में दुर्गापूजा प्रारम्भ हुई, किन्तु यह शरद ऋतु में होती है।[५]

काली ही दुर्गा हैं, इस बात का प्रमाण दुर्गापूजा की विधि में ही मिलती है। जैसे कि देवी के महास्नान में पंचकषाय जल के मन्त्र में कहा गया है 'ॐ ह्रीं भद्रकाल्यै नम:', स्वर्णोदक इत्यादि में 'ॐ चामुण्डायै नम:', पुष्करिणी जल में 'ॐ ह्रीं कालिकायै नम:', चन्दन जल में 'ॐ ह्रीं काल्यै नम:।'' सन्धि-पूजा में चामुण्डारूप से दुर्गाध्यान पूजा विहित है। कालिका पुराणोक्त पूजा-पद्धति में दुर्गास्तुति मन्त्र में कहा गया है –

काली काली महाकाली कालिके पापहारिणि।
धर्मार्थमोक्षदे देवी नारायणी नमोस्तुते।।

वास्तव में काली, दुर्गा, चामुण्डा एक ब्रह्ममयी पराशक्ति के ही विभिन्न नाम हैं।

५. महाकाली – महाभारत के टीकाकार नीलकण्ठ कहते हैं – ये महती एवं काली हैं। अर्थात् संहारकारिणी कालरूपा महादेवी महाकाली हैं। कवि गाते हैं – **महाकालेर कोले एसे गौरी होलेन महाकाली** – अर्थात् 'महाकाल के

क्रोड में आकर गौरी हुई महाकाली।

महाकाली के ध्यान में कहा गया है – वह दशानना, दशपादा, दशहस्ता हैं। उनके प्रत्येक मुखमंडल पर त्रिनयन है। उनके हाथों में खड्ग, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिख, शूल, भुशुण्डी, नृमुण्ड एवं शंख है। विष्णु जब योग-निद्रा में थे, तब ब्रह्माजी ने मधु-कैटभ के विनाश हेतु इस देवी की स्तुति की थी।

६. रक्षाकाली – उत्तर कामाक्षातन्त्र में कहा गया है कि महामारी का भय होने पर, अकाल से पीड़ित होने पर परम भक्ति से इस देवी की पूजा करनी चाहिए। वे समस्त प्राणियों की इस प्रकार के भय से रक्षा करती हैं। इसलिये इन्हें रक्षाकाली कहते हैं। रुद्रयामल में देवी के ध्यान में कहा गया है '**शरदिन्दुनिभां शुभ्रां वदनत्रितयान्विताम्**' इत्यादि। अर्थात्

देवी शरद चन्द्रमा सम शुभ्रवर्णा, त्रिमुखी, नवलोचना, षड्भुजा, जटा मुकुटमण्डिता, सुदर्शना, रक्षारूपिणी एवं रक्षाकारिणी हैं। उनके दाहिने हाथ में असि, अमृत-कलश एवं छुरीका (चाकू) है तथा वामहस्तत्रय में अंकुश, डमरु तथा चक्र हैं, गले में नृमुण्डमाला है और शव पर अधिष्ठित हैं। शक्तियामलादि में अन्यत्र कुछ भिन्न शब्दों में इसी एक रूप का ध्यान प्राप्त होता है।

७. चामुण्डाकाली – विभिन्न तन्त्रों में देवी चामुण्डा के विभिन्न मन्त्र हैं। परन्तु पूरश्चर्यार्णव में उल्लिखित 'ह्रीं चामुण्डायै नम:' मन्त्र ही सर्वार्थसाधक है –

मायाबीजं समुच्चार्य चामुण्डा ङेयुता पुनः।
नमो हन्तो नवार्णोऽयं मन्त्रः सर्वार्थसाधकः।।[६]

दुर्गापूजा में सन्धि-पूजा के समय चामुण्डा के ध्यान से ही पूजा होती है –

काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी।
विचित्रखट्वांगधरा नरमाला विभूषणा।।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवी।
अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा।।[७]

– अर्थात् अम्बिका देवी की ललाट से विकराल काली प्रकट हुईं, जो खड्ग और पाश लिये हुये थीं। वे विचित्र खट्वांग धारण किये हुये, चिता-चर्म की साड़ी पहनी हुई और नरमुण्डों की माला से विभूषित थीं। उनके शरीर का माँस सूख गया था और केवल हड्डियों का ढाँचा था, जिसमें वे अत्यन्त भयंकर जान पड़ती थीं। उनका मुख बहुत विशाल और जीभ लपलपाने के कारण डरावनी प्रतीत होती थीं। उनकी आँखें भीतर की ओर और लाल थीं। वे अपनी भयंकर गर्जना से सभी दिशाओं को गुँजा रही थीं।

साधकों की रुचि में भिन्नताओं के कारण देवी के विविध रूप होने पर भी वे एक ही पराशक्ति हैं। काली कोई रूप मात्र नहीं है। वह तत्त्व है। वही तत्त्व 'उपासकानां कार्यसिद्ध्यर्थं' – उपासकों की कार्यसिद्धि हेतु विविध रूपों में चित्रित है। किन्तु वे मूलत: आद्याशक्ति, सभी की जननी हैं। उनका रूप कठोर होने पर भी वे जीवों की कल्याणकारिणी हैं। दुष्टदलन के लिये खड्गहस्ता, भयंकरा होने पर भी सन्तान के लिये वे करुणामयी हैं। इसलिए आइए, कलियुग में सभी मिलकर उन कल्याणकारिणी, करुणामयी माता से प्रार्थना करें –

प्रसीद भगवत्यम्ब प्रसीद भक्तवत्सले।
प्रसादं कुरु मे देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते।। ○○○

सन्दर्भ ग्रन्थ – १. तारा रहस्य पृ.१ **२.** शक्ति संगम तंत्र, तारा खण्ड १/६८ **३.** महानिर्वाण तन्त्र ५/१४० **४.** महाभारत १२/२८३/५४ **५.** पूजापार्वण पृ. ११६-११७ **६.** तरंग १२ पृ.११३६ **७.** दुर्गासप्तशती ७/६-८

मनुष्य-जीवन की महानता को समझें

स्वामी सत्यरूपानन्द

(ब्रह्मलीन स्वामी सत्यरूपानन्द जी महाराज रामकृष्ण मठ, प्रयागराज के अध्यक्ष और रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर के सचिव थे।

ईश्वर चिन्तन कैसे हो? इसके विभिन्न प्रकार हैं। जिन लोगों ने गुरु से दीक्षा ली है, वे लोग अपने-अपने गुरु के निर्देशानुसार उपासना प्रारम्भ करें। जिन्होंने दीक्षा नहीं ली है, ईश्वर का जो रूप आपको अच्छा लगे, ईश्वर के जिस गुण में आपकी रुचि हो, ईश्वर के जिस नाम में आपकी रुचि हो, आप वहाँ से प्रारम्भ करें।

महाभारत में और भागवत में भगवान कृष्ण की दिनचर्या का वर्णन है कि वे किस प्रकार अपना दिन बिताया करते थे। उसमें लिखा है, भगवान भोर में बहुत जल्दी उठ जाते थे। वे ब्रह्म मुहूर्त्त में उठकर अपनी शय्या में बैठकर ध्यान करते थे। ध्यान के बाद ब्रह्ममुहूर्त्त जब समाप्त हो, सूर्योदय आदि का समय होता था, तब वे अपने दूसरे कार्यक्रम पूजन करते थे, उसके बाद दूसरे काम करते थे।

प्रात:काल उठकर अपना सारा समय नहाने-धोने, कपड़ा धोने में ही मत लगा दीजिए। चार बजे सुबह उठे और छह बजे तक नहाने-धोने, कपड़ा धोने आदि में लगे रहे और फिर उसके बाद भगवान की उपासना प्रारम्भ की। ऐसा नहीं करना चाहिए। प्रात: उठकर मुँह धोकर तुरन्त बाद उपासना प्रारम्भ करें।

मनुष्यत्व का स्मरण रखें। मनुष्य से परम और कुछ भी नहीं है। देवता, दानव, गन्धर्व सबसे श्रेष्ठ मनुष्य है और यह मनुष्य देह हमें मिली है। यह मनुष्य की देह हमें ईश्वरप्राप्ति के लिए मिली है। अत्यन्त मूल्यवान देह है। जैसे अत्यन्त मूल्यवान वस्तु को हम बड़ी सुरक्षा में रखते हैं। आपके पास जो अत्यन्त मूल्यवान रत्न आदि होंगे, उनको आप बैंक के लॉकर में रखते हैं कि कहीं चोरी न हो जाये और विशेष अवसरों पर उसका उपयोग करते हैं। आप अपनी मूल्यवान वस्तु को सुरक्षित क्यों रखते हैं? आप जानते हैं कि यह मूल्यवान है। अगर उसके प्रति मूल्यबोध न हो, तो आप उस पर इतना ध्यान नहीं देंगे। अपने घर के कंकड़-पत्थर क्या आप लॉकर में रखते हैं? कभी नहीं रखते हैं। क्यों नहीं रखते हैं? क्योंकि उसके प्रति मूल्य-बोध नहीं है। पर हीरे की अँगूठी जो आपके पास है, सोने के हार जो आपके पास हैं, इन सबको आपने लॉकर में या अपने घर में सुरक्षित रखा है। इसलिए रखा है कि उसके प्रति मूल्य-बोध है।

उसी प्रकार यदि आप प्रतिदिन यह स्मरण करेंगे, जो अभी स्मरण नहीं है, कि ये मनुष्य देह ईश्वर-प्राप्ति के लिए है, बहुत मूल्यवान है, तब इस देह का जो दुरुपयोग हो रहा है, अपव्यय हो रहा है, उससे आप बच जायेंगे। उससे अगर आप बचेंगे, तो लाभ आपको अपने भौतिक जीवन में बहुत होगा। आपका स्वास्थ्य अच्छा हो जायेगा, मन शान्त हो जायेगा, इधर-उधर होनेवाले अपव्यय से आप बच जायेंगे। फिर धन संचित होगा, परिवार में शान्ति होगी, समाज में शान्ति होगी, आपको समय अधिक मिलेगा। केवल इस एक बात से कि रोज उपासना के समय आप ये विचार करें कि यह मनुष्य देह ईश्वर-प्राप्ति के लिये है। इतनी महान देह है। यह सुयोग यदि चला गया, तो बड़े संकट में पड़ जायेंगे। ऐसा प्रयास करें कि यह सुयोग न जाये।

इसलिए मनुष्य-योनि की, मनुष्य देह की महानता, श्रेष्ठता, मूल्य-बोध को याद रखना आवश्यक है। देह को बहुत सुरक्षित रखेंगे। देह का अपव्यय बचा, तो वासनाएँ न्यून होंगी। पाशविक वासनाएँ दूर होने लगेंगी। क्योंकि हमने समझ लिया कि उसे प्रकाशित करने का यह माध्यम नहीं है। ऐसा नहीं करना है। यह विचार जब मन में आयेगा,

शेष भाग अगले पृष्ठ पर

श्रीरामकृष्ण-गीता (५१)

(दशम् अध्याय १०/२)

स्वामी पूर्णानन्द, बेलूड़ मठ

(स्वामी पूर्णानन्द जी रामकृष्ण संघ के वरिष्ठ संन्यासी हैं। उन्होंने २९ वर्ष पूर्व में इस पावन श्रीरामकृष्ण-गीता ग्रन्थ का शुभारम्भ किया था। इसे सुनकर रामकृष्ण संघ के पूज्य वरिष्ठ संन्यासियों ने इसकी प्रशंसा की है। विवेक-ज्योति के पाठकों के लिए बंगला भाषा से इसका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। – सं.)

गत्वा राजाधिराजस्य भगवतः सुसन्निधिम्।
ज्ञान-भक्त्यादिरत्नानि तथा न प्रार्थयंस्तु यः।।
अष्टसिद्ध्यादिफल्गूनि याचते मुढ एव सः।।१३।।

– उसी प्रकार राजाधिराज भगवान के द्वार पर खड़े होकर यदि कोई ज्ञान-भक्ति इत्यादि की प्रार्थना न कर अष्टसिद्धि आदि तुच्छ वस्तुओं के लिये प्रार्थना करता है, तो वह बहुत बड़ा मूर्ख है।

दुर्बोध्या हि बहिर्भावा भक्तस्य ज्ञानिनोऽथवा।
निगुह्य स्वात्मभावां स्तेन्यान् दर्शयन्ति साधकाः।।१४।।

– भक्त या ज्ञानी का भाव बाहर से समझना बड़ा कठिन होता है। साधक कई बार अपने भाव को गोपनीय रखकर दूसरे रूप में स्वयं को दिखाते हैं।

वर्तेते द्विविधौ दन्तौ बाह्यान्तःस्थौ च दन्तिनः।
न रोमह्वायते बाह्यः प्रदर्शनाय केवलम्।।१५।।
वदनाभ्यन्तरस्थैके दृश्यन्ते न च ये बहिः।
भुङ्क्ते तैरेव खाद्यानि दन्तैर्यथा महामृगः।।१६।।

– जैसे हाथी का बाहर और भीतर दो प्रकार का दाँत देखा जाता है। बाहर का दाँत केवल दिखाने के लिये है, उससे खाना नहीं होता है। एक दाँत भीतर होता है, जो बाहर से दिखता नहीं है, हाथी उसी से खाता है।

योगिनो द्विविधाः सन्ति गुप्तव्यक्तविभेदतः।
विविक्तस्थास्तयोर्गुप्ता भगवत्साधने रताः।
विज्ञापयन्ति तन्नैव किमपि लोकसन्मुखे।।१७।।

– दो प्रकार के योगी होते हैं – गुप्त योगी और व्यक्त योगी। उनमें जो गुप्त योगी हैं, वे एकान्त में रहकर साधन-भजन करते रहते हैं, लोगों को बिलकुल ही जानने नहीं देते हैं।

ये पुनर्योगदण्डादीन् विधृत्य व्यक्तयोगिनः।
बाह्याचारेण लौकैस्तत्तत्प्रसंगकारिणः।।१८।।

।।ओमिति श्रीरामकृष्णगीतासु साधकवर्गविभागो नाम दशमोऽध्यायः।।

– जो व्यक्त योगी होते हैं, वे बाह्य योगदण्ड आदि धारण कर लोगों के साथ ये सब लोक-प्रसंग करते रहते हैं।

।।ॐ श्रीरामकृष्ण गीता का 'साधकवर्गविभाग' नामक दसवाँ अध्याय समाप्त।।

(क्रमशः)

पिछले पृष्ठ का शेष भाग

तो देह का जो सचमुच प्रयोजन है, उस प्रयोजन के लिए इन्द्रियाँ सजग होंगी। तब अपने आप जीवन बदलने लगेगा।

देखिए, केवल इस एक ही विचार से इतना परिवर्तन हो जायेगा। प्रतिदिन जब सम्भव हो, जिस समय भी याद आये कि अरे हम मनुष्य हैं, तो जीवन में बहुत से परिवर्तन आने लगेंगे।

यदि हमें ऐसा स्मरण रहेगा, तो ऐसे बहुत से व्यवहार, जो आध्यात्मिक जीवन के प्रतिकूल हैं, अपने आप छूट जायेंगे। विषय-वासनायें छूट जायेंगी। मन में आयेगा कि ऐसा करना मनुष्य के लिए लज्जा की बात है, मानवता के लिए लज्जा की बात है। मनुष्य-देह तो आध्यात्मिक साधना के लिए मिली है, यह हमको स्मरण रहेगा। इस प्रकार हमें मानव-जन्म, इस देह की उपयोगिता और सार्थकता पर विचार करना चाहिए। OOO

भजन एवं कविता

शुभदे सर्वकालिका

श्रीधर द्विवेदी, डाल्टनगंज, झारखण्ड

कृष्णकुहू कार्तिक का, काली निशिकाल सम,
कलुष कलंक काट काल बली कालिका ।
कज्जल सा कृष्ण केश, कठिन कराल वेश,
भारी भव भीत हर भीषण विक्रालिका ।।
निशि में निशीथ काल, कमला कमल-माल,
कुंकुम सजाये थाल, अर्च दीप मालिका ।
अन्तस् प्रकाश भर, मानस तिमिर हर,
सुभग दिवाली हो, शुभदे सर्वकालिका ।।

***

अपने उर को दीप बनाया, पाँच प्राण की बाती ।
शुद्ध स्नेह का तेल बनाया, दीप सजाकर राती ।।
मंगल भाव प्रसून सजाया, षोडश कमल रँगोली ।
मने दिवाली सहज हृदय से जले प्रपंच अराती ।।

निवेदिता है समर्पिता

प्राचार्य ओ.सी.पटले

निवेदिता है समर्पिता दीवारें लाँघ के आई ।
माँ भारती की सेवा में जीवन अपना लगाई ।।
काली घटायें थी जब इस पुण्यभूमि पे छाई ।
विवेकानन्द की ये अनन्य शिष्या भारत आई ।।
गुरुवाणी से मन्त्र राष्ट्र-निर्माण का पाई ।
नव भारत निर्माण का, महाव्रत अपनाई ।।
राष्ट्रीय शिक्षा की ज्योति गुरु-निर्देश में जलाई ।
शिक्षा की महिमा हर नर-नारी को समझाई ।।
ओजस्वी व्याख्यानों से देशभक्ति का ज्वार ले आई ।
क्रान्तिकारियों ने भी, प्रेरणा समर्पण की पाई ।।
प्राचीन महीयसी नारियों से प्रेरणा पायी ।
उन आदर्शों से प्रेरित हो, जीवन भी बितायी ।।
त्याग-तपस्या से नारी-शक्ति का गौरव बढ़ायी ।
सारे जग के लिये प्रेरणा का स्रोत बन पायी ।।

श्रीकालिकाष्टकम्

डॉ. अनिल कुमार 'फतेहपुरी', गयाजी, बिहार

रामकृष्णाराधिता भवतारिणी श्रीकालिके ।
सर्वशक्तिसमन्विता त्वं सर्वजनप्रतिपालिके ।।१।।
शिववक्ष शोभित चरण-युग कटितट अलंकृत करघनी।
मुक्तकेशि दिगंबरा क्रोधातुरा च भयावनी ।।२।।
नृकपाल हस्ते खड्गधारिणी मुंडमाला भूषिता ।
नयनत्रय आरक्त अतिशय भाल चन्द्र विभूषिता ।।३।।
ओष्ठद्वय शोणित विलेपित ज्वाल सम जिह्वा तथा ।
अभयमुद्रा धारिणी वरदायिनी हारिणी व्यथा ।।४।।
दुष्ट-दुर्जन घातिनी त्वम् भक्तजन उद्धारिणी ।
अघमोचिनी शुभकारिणी च भद्रभाव प्रसारिणी ।।५।।
देवजननी दैत्यहननी शुभ्रता संपोषिणी ।
महामाया महाशक्ति कामरिपु संतोषिणी ।।६।।
सकल सृष्टि सर्जिका त्वम् सकल सृष्टि भंजिका ।
घोररूपा घोररावा ईश-मानस-रंजिका ।।७।।
ब्रह्म-विष्णु नमस्कृता सुरसेविता परमेश्वरी ।
स्वर्गदा-अपवर्गदा वांछित यथा अनिलेश्वरी ।।८।।

जयतु जयतु जय मातु कालिके

डॉ. ओमप्रकाश वर्मा, रायपुर

जयतु जयतु जय मातु कालिके, तुम हो मंगल की आधार ।
जगतवंदिनी भुवनजननि माँ, मुक्तिदायिनी इस संसार ।।
दनुज-दलनि माँ मुण्डमालिनी, सिद्धिविधायिनी कृपावतार ।
भयंकरी माँ तुम दिखती हो, अंतर से हो परम उदार ।।
भक्तजनों की आश्रयदायिनी, दुष्टों का करती संहार ।
जग की सृजनकारिणी तुम हो, लेती जग विनाश का भार।।
तुम ही हो जयदायिनी माता, सदा निरत तुम जग उपकार ।
दयास्वरूपा करुणामयि माँ, तुम ही ज्ञान-भक्ति-आगार ।।
द्वार तुम्हारे मैं आया हूँ, तजकर जग के सब व्यापार ।
तेरी कृपा सदा चाहूँ माँ, चरणों में दो भक्ति अपार ।।

राष्ट्रीय आन्दोलन में सिस्टर निवेदिता का पत्रकारिता के माध्यम से योगदान

डॉ. सुप्रिया आशीष अग्रवाल, भुवनेश्वर

सिस्टर निवेदिता के द्वारा पत्रकारिता के माध्यम से भी राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान दिया गया। वे १९०६ से १९०७ के समय में 'प्रबुद्ध भारत' में सम्पादकीय लिखने के साथ-साथ ही अनेक समाचार पत्रों में क्रान्तिकारियों के हित में भी लेख लिखती थीं। साप्ताहिक पत्र 'युगान्तर' गुप्त रूप से क्रान्तिकारी गतिविधियों का साधन था। 'युगान्तर' साप्ताहिक पत्र अरविन्द, उनके छोटे भाई बरिन्द्र घोष और स्वामी विवेकानन्द के छोटे भाई भूपेन्द्र नाथ दत्त द्वारा आरम्भ किया गया था। इसमें भी निवेदिता क्रान्तिकारियों से सम्बन्धित लेख लिखती थीं।[१]

युगान्तर के प्रकाशन का निर्णय निवेदिता के निवास पर ही किया गया था। निवेदिता की सहायता से यह बहुत लोकप्रिय हो गया था। इसकी लोकप्रियता का पता इस बात से चलता है कि उस समय एक ही वर्ष में इसकी ५० प्रतियाँ प्रकाशित की जाती थीं, जिनकी एक प्रति का मूल्य १ रुपया था।

इस समय विपिन चन्द्र पाल का 'न्यू इण्डिया', सतीश चन्द्र मुखर्जी का 'डॉन', ब्राह्मबान्धव उपाध्याय का 'संध्या' आदि समाचार-पत्र राष्ट्रीय आन्दोलन में सहायता प्रदान कर रहे थे। कलकत्ता में बंगाल विभाजन और बारीसाल काँग्रेस के गोलीकाण्ड जैसी घटनायें हो रही थीं। इसी समय स्वतन्त्रता सेनानी श्री बाल गंगाधर तिलक शिवाजी उत्सव के निमित्त कलकत्ता आये थे। 'लाल-बाल-पाल' ने देश में स्वतन्त्रता की ऐसी लहर उत्पन्न कर दी थी कि विदेशों में रह रहे भारतीय भी सहायता करने के लिए अग्रसर हो रहे थे।[२]

६ अगस्त, १९०६ से अरविन्द की देखरेख में 'वन्दे-मातरम्' का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया था। सिस्टर निवेदिता नियमित रूप से इन सभी पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों को अपने लेख भेजती थीं। निवेदिता का नाम पत्रकारिता जगत् में चर्चित होने लगा था। दिन-प्रतिदिन निवेदिता की प्रसिद्धि में वृद्धि हो रही थी। इस समय श्री तिरूमलाचार्य ने अपने पत्र 'बाल भारती' के संचालन के लिये निवेदिता से अनुरोध किया। निवेदिता के लिये व्यक्तिगत रूप से यह प्रस्ताव मिलना सम्मान की बात थी। फिर निवेदिता ने सोचा कि यदि उन्होंने ऐसा किया, तो बंगाल के पत्रों के सम्पादक ब्रिटिश सरकार के दमनचक्र में न फँस जाएँ। अत: उन्होंने इस पत्र को

अस्वीकार कर दिया। प्रस्ताव मना करने के बाद भी उन्होंने अपना सम्बन्ध पहले की तरह ही बनाये रखा। सभी पत्रों की पृष्ठभूमि में निवेदिता ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।[३]

रिव्यू ऑफ रिव्यूज के वरिष्ठ पत्रकार, कमिंगडे श्री जॉन होप, स्टीड, मेनचेस्टर गार्जियन, नेवीसन्सन व अन्य कई सम्पादक जो हमेशा अपने समाचार पत्रों के द्वारा भारत के प्रति अपना समर्थन व्यक्त करते थे। निवेदिता ने 'मॉडर्न रिव्यू' में इन सबके कार्यों के बारे में सूचना देनेवाला एक लेख विधानसभा के अन्दर व बाहर हमारे मित्र नामक शीर्षक में लिखा।[४]

इस तरह सिस्टर निवेदिता ने अपने कार्यों में परिवर्तन किया। उन्होंने अपने भ्रमण-भाषण में कमी करके, चर्चा-वार्ता व लेखनी की ओर अधिक ध्यान दिया। फ्राँसीसी लेखिका का उनकी जीवनी के बारे में अनुमान था कि निवेदिता क्रान्तिकारी समिति की भूमिगत गतिविधियों के संचालन का कार्य करती थीं। साथ ही निवेदिता का सम्बन्ध प्रेस से था। वे अपनी लेखनी व गहन अध्ययन से सफल पत्रकार बन गई थीं।[५]

विभिन्न सम्पादकों से सम्बन्ध

सिस्टर निवेदिता भारतीय लोगों की राजनीतिक अपेक्षाओं की प्राप्ति का समर्थन करती हैं। अंग्रेज और भारतीय; दोनों ही उनके मित्र थे। जिनमें पत्रकार – नेवीन्सन, रामानन्द चटर्जी, मोती लाल घोष व रेडक्लिफ आदि नाम शामिल थे।[६] **रामानन्द चट्टोपाध्याय –** १९०७ में सिस्टर निवेदिता रामानन्द चटर्जी से मिली थीं। वे जब से उनसे मिली थीं, तब से लेकर १९११ तक जीवन के अन्तिम दिनों तक 'मॉडर्न रिव्यू' के लिये लेख लिखती रहीं। निवेदिता की मृत्यु के बाद भी उनके लेख 'स्टार पिक्चर्स' शीर्षक में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित होते रहते थे। जगदीश चन्द्र बोस ने निवेदिता का परिचय रामानन्द चटर्जी से करवाया था।[७]

रामानन्द चटर्जी 'प्रवासी' नामक पत्रिका के सम्पादक भी थे। रामानन्द चटर्जी व निवेदिता में गहरी मित्रता थी। 'प्रवासी' बंगाली पत्रिका थी। जब रामानन्द चटर्जी अस्वस्थ हुये थे, तो वे उनसे मिलने उनके घर भी गई थीं। तब उन्होंने अपने जूते रामानन्द चट्टोपाध्याय के घर के बाहर उतारे थे। वहाँ उपस्थित सभी भारतीय यह देखकर आश्चर्यचकित हो गये थे।[८]

निवेदिता उनका बहुत आदर करती थीं। उन्हें पुनर्लेखन व अपने लेखों में कुछ भी परिवर्तन अच्छा नहीं लगता था। वे किसी को भी ऐसा करने की अनुमति प्रदान नहीं करती थीं। किन्तु वे रामानन्द चटर्जी को यह छूट दे रखी थीं। क्योंकि वे उनकी बहुत बड़ी प्रशंसक थीं।

सिस्टर निवेदिता एक जन्मजात पत्रकार थीं। किसी भी विषय पर लिखे गये उनके लेखों में मौलिकता अन्त:प्रेरणा, बुद्धि की चमक व ओजस्विता की झलक दिखाई देती है।[९] १६ अक्तूबर, १९०४ को निवेदिता ने 'प्रवासी' के सम्पादक रामानन्द चटर्जी को एक पत्र लिखा था, इसमें उन्होंने बंगाल के बाहर रहनेवालों लोगों को बंगाल-विभाजन की सूचना प्रदान की। हमें इस पत्र के माध्यम से निवेदिता की भारत के प्रति, भारत के लोगों के प्रति उनकी भावनाओं की गहराई का पता लगता है।[१०]

रेडक्लिफ – सैम्युअल रेडक्लिफ 'स्टेटमैन' नामक समाचार पत्र के सम्पादक थे। निवेदिता व रेडकिल्फ के अच्छे सम्बन्ध थे। रेडक्लिफ अपनी पत्नी के साथ हर रविवार को सुबह की चाय पीने के लिये चौरंगी से निवेदिता के घर जाते थे। उन्होंने अपने ग्रन्थ 'मार्गरेट नोबल' में निवेदिता के घर का वर्णन किया है। वे बताते हैं कि निवेदिता के घर पर कलाकार, वैज्ञानिक, विद्वान, बंगाल के सार्वजनिक क्षेत्रों के कार्यकर्ता, पत्रकार, शिक्षक, राज्य परिषद के सभासद, विद्यार्थी आदि सभी प्रकार के लोग आपस में विचार-विमर्श करने के लिये आते थे। उनके घर पर सबके लिये स्वल्पाहार की व्यवस्था होती थी।[११] वे जब भी उनके घर जाते थे, तो वहाँ पर निवेदिता व महान् व्यक्तियों के साथ स्वतन्त्रता के विषय पर चर्चायें होती थीं। इन चर्चाओं में सम्मिलित होनेवाले व्यक्तियों के राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्धित लेख उनके समाचार पत्र में छपते थे। इसीलिये उन्हें १९०७ में अपने सम्पादक के पद को त्यागना पड़ा।[१२]

मोतीलाल घोष – मोतीलाल घोष अमृत बाजार पत्रिका के सम्पादक थे। ये विभिन्न विषयों पर निवेदिता से बातचीत करने के लिये निवेदिता के घर प्रतिदिन जाते थे। निवेदिता भी उनसे मिलने अमृत बाजार पत्रिका के कार्यालय जाती थीं। वे लोग आपस में राष्ट्र से सम्बन्धित विषयों पर तर्क करते थे। कभी-कभी निवेदिता को उनका तर्क उचित नहीं लगता, तो वे उनसे नाराज हो जाती थीं, पर अगले दिन वे उनसे माफी माँग लेती थीं। इससे मोतीलाल घोष भावुक हो जाते थे। इस प्रकार दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध था।[१३]

निवेदिता विभिन्न समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में अपना योगदान नियमित रूप से देती थीं। उनकी स्वयं की पत्रिका निकालने की इच्छा भी पूर्ण नहीं हो पाई। फिर भी निवेदिता लगभग सभी समाचार पत्रों व पत्रिकाओं के लिये नियमित रूप से लेख लिखती थीं। इसलिये अनेक पत्रकारों से वे मिलने लगीं और उनसे निवेदिता का परिचय हुआ।[१४]

स्वामी विवेकानन्द के नव-भारत के पुनरुत्थान के सपने को पूरा करने के लिये निवेदिता ने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया था।[१५] पत्रकारिता में निवेदिता की भागीदारी होने के कारण पुलिस को उन पर सन्देह था तथा उन पर दृष्टि रखती थी। निवेदिता के साधारण पत्रों को भी सेंसर किया जाता था। इससे निवेदिता परेशान हो गई थीं और उन्होंने इसकी शिकायत पोस्टमास्टर जनरल से की थी।[१६] १० मार्च, १९१० को वाइसराय की पत्नी लेडी मिन्टो वेष बदलकर निवेदिता के विद्यालय गई थीं। जब वे विद्यालय से लौट रही थीं, उससे पहले ही उन्होंने निवेदिता को अपना वास्तविक परिचय बता दिया। इससे सिस्टर निवेदिता को सुखद आश्चर्य

हुआ। लेडी मिन्टो निवेदिता से बहुत प्रभावित हुई थीं। लेडी मिन्टो ने राजभवन में निवेदिता को चाय का निमन्त्रण देकर बुलाया था तथा इस विषय में बातचीत की। उन्होंने निवेदिता को सुझाव दिया कि वे पुलिस आयुक्त से भेंट करें। सिस्टर निवेदिता ने भी ऐसा ही किया।[१७]

वर्तमान में यह पता लगाना बहुत कठिन है कि निवेदिता का सम्बन्ध कितने पत्रों के साथ था, क्योंकि उस समय के कुछ लेख अज्ञात नाम से छपते थे। डॉन, माडर्न रिव्यू, न्यू इण्डिया, बंगाली रिव्यू, बिहार हेराल्ड, हिन्दू, प्रबुद्ध भारत, अमृत बाजार पत्रिका, ईस्ट एण्ड वेस्ट, ट्रिव्यून, स्टेटसमैन, बाम्बे क्रानिकल, टाइम्स ऑफ इण्डिया आदि के नाम आसानी से गिने जा सकते हैं, जिनमें वे अपने लेख लिखती थीं। बड़े-बड़े सम्पादकों से उनका अच्छा सम्बन्ध था। निवेदिता स्वयं ही कई बार सम्पादकीय लिखा करती थीं।[१८]

निवेदिता भारत के विषय में एक विशाल दृष्टिकोण रखती थीं। उनके मन में देश के प्रति अगाध विश्वास था। वे राष्ट्रीय जागृति के प्रत्येक कार्यक्रमों में, देश के सर्वांगीण विकास के लिये होनेवाली प्रत्येक गतिविधियों में भाग लेती थीं। उन्होंने देश के लिये बहुत कार्य किये, पर इन कार्यों का दिखावा कभी नहीं किया। संकट के समय में देश को उनसे प्रबल नैतिक व बौद्धिक सामर्थ्य प्राप्त हुआ।[१९]

वे हमेशा यह अनुभव करती थीं कि भारत का भविष्य यहाँ के लोगों के हाथ में है और उन्हें ही अपने देश के लिए कार्य करना होगा। निवेदिता के कुछ अंग्रेज मित्र थे, जो भारत के लिये सच्ची सहानुभूति रखते थे। वे 'हाऊस ऑफ कॉमन्स' के कुछ सदस्यों जैसे व्ही.एच. रूदरफोर्ड, सर हेनरी कॉटन, फ्रेडरिक मेकरनेस, जे केयर हार्डी, जेम्स ओ ग्रेडी, हार्ट डेविस स्विफ्ट मेकनिल, विलियम रेमण्ड, सी.जे.ओ. डोनल इन सभी से परिचित थीं। ये सभी व्यक्ति

भारत के प्रति रुचि रखते थे। इन सभी व्यक्तियों के लगातार प्रयासों से ब्रिटिश जनता को भारत के विषय में अनुकूल जनमत तैयार करने में सहायता मिलती थी।[२०] निवेदिता की विचारधारा पूर्ण रूप से राष्ट्रवादी और मौलिक थी। वे क्रान्तिकारी विचारों की थीं। उनके समय की पत्रिकाओं, व्यंग्य-चित्रों, समाचार-पत्रों में उनके वृतान्तों से पता चलता है कि वे राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेती थीं।

विभिन्न विद्वानों ने उनके राष्ट्रवादी विचारों को अलग-अलग रूप में व्यक्त किया है –

महात्मा गाँधी ने सिस्टर निवेदिता के विषय में कहा – हिन्दू धर्म के लिये उनके अगाध प्रेम, स्नेह व विश्वास को देखकर निवेदिता की प्रशंसा किये बिना न रह सका।

रासबिहारी घोष कहते हैं – यदि सूखी हड्डियों में हलचल दिखाई देती है, तो केवल इसलिये की भगिनी निवेदिता ने उनमें प्राणों का संचार किया हैं।[२१]

सिस्टर निवेदिता ने १९०२ से १९१० तक के समय में क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लिया। देश के नेता मनीषी लेखक लाला लाजपत राय ने भी उनके कार्यों का समर्थन किया था। निवेदिता की पुस्तक 'फुटफॉल्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री' के बारे में लाला लाजपत राय ने कहा कि इस पुस्तक से निवेदिता की भक्ति, प्रेम, भारत की उन्नति के लिए उनके विचार, उनके चिन्तन का पता चलता है, सब सच्ची थी।[२२]

इस प्रकार निवेदिता राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करनेवाले प्रत्येक दल से सम्बन्धित थीं। उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य भारत को सुदृढ़ व सामर्थ्यशाली राष्ट्र के रूप में देखना था। वे चाहती थीं कि देश निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो। वे विभिन्न भारतीय नेताओं की आदर्श नीतियों को मानती थीं। यदुनाथ सरकार निवेदिता के साथ बोधगया यात्रा में गये थे, तब निवेदिता ने यदुनाथ सरकार से कहा था – "अपने ध्वज को किसी भी विदेशी के आगे मत झुकाओ। जीवन के जिस भी क्षेत्र में तुम कार्यरत हो, उसी क्षेत्र में अपना नाम उज्ज्वल करो। किसी विदेशी सत्ता के सामने कभी अपना सिर न झुकाना पड़े, यही प्रयत्न करो। किसी विदेशी का अनुकरण कभी भी मत करो। अपने हृदय में इन सब बातों

शेष भाग पृष्ठ ४७६ पर

नचिकेता – एक आदर्श युवा

स्वामी गुणदानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर

प्रस्तुत लेख कठोपनिषद् में वर्णित 'नचिकेता की कथा' पर आधारित है, जो आज के युवा के लिए अत्यन्त सार्थक है। आज के युग में युवा वर्ग तेज़-तर्रार है, जागरूक है, महत्त्वकांक्षी है, पर प्राय: तनाव, भटकाव और आन्तरिक संघर्ष से जूझ रहा है। बहुत कुछ पाने की दौड़ में हम यह भूल जाते हैं कि वास्तविक सफलता बाहरी नहीं, भीतरी होती है। कठोपनिषद् में नचिकेता नामक ९-१० वर्ष के एक विलक्षण ब्राह्मण बालक का वर्णन है।

एक धर्मनिष्ठ ऋषि थे – वाजश्रवस्। उन्होंने स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा से एक विशाल यज्ञ (महादान) का आयोजन किया, जिसमें उन्होंने ब्राह्मणों को अनेक गायें दान में देने का संकल्प लिया। परन्तु वे दान में बूढ़ी, दुग्धहीन गायें दे रहे थे। वे दानवीर बनने के उद्देश्य से यह महादान करने का दिखावा कर रहे थे। वाजश्रवस् के पुत्र का नाम था नचिकेता। वह अत्यन्त बुद्धिमान, विचारशील और सत्यनिष्ठ था। उसने देखा कि उसके पिता जो गायें दान में दे रहे हैं, वे अतिवृद्ध, दुर्बल और दुग्धहीन थीं। अब इनमें न तो झुककर जल पीने की शक्ति रही है, न इनके मुख में घास चबाने के लिए दाँत ही रह गये हैं और न इनके थनों में तनिक-सा दूध ही बचा है। अधिक क्या इनकी तो इन्द्रियाँ भी निश्चेष्ट हो चुकी हैं, इनमें गर्भधारण करने की भी सामर्थ्य नहीं है। यह देखकर नचिकेता चिन्तित हुआ और अपने पिता से बार-बार यह प्रश्न पूछने लगा –

'पिताजी, आप जिन गायों को दान में दे रहे हैं, वे तो किसी उपयोग की नहीं हैं। यदि इस यज्ञ में सब कुछ दान करना है, तो मुझे भी दान दीजिए। कहिए, आप मुझे किसे देंगे?' बालक का यह बार-बार प्रश्न करना पिता को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने क्रोध में आकर कह दिया – 'मृत्यु को तुझे दे रहा हूँ – यमराज को तुझे सौंपता हूँ!

भारतीय परम्परा में पिता का वचन अत्यन्त प्रभावशाली माना जाता है। नचिकेता यह मान बैठा कि अब उसे यमलोक जाना ही होगा, क्योंकि पिता ने यमराज को दान देने का वचन दिया है। उसने बिना विरोध किये यमलोक के लिए प्रस्थान किया। नचिकेता यमलोक पहुँचा, किन्तु यमराज उस समय वहाँ नहीं थे। बालक ने तीन दिन तक बिना जल-अन्न के यमराज के द्वार पर प्रतीक्षा की। जब यमराज लौटे और उन्हें ज्ञात हुआ कि एक ब्राह्मण बालक अतिथि के रूप में उनके द्वार पर भूखा-प्यासा तीन दिन से प्रतीक्षा कर रहा है, तो वे अत्यन्त लज्जित और कृतज्ञ हुए। यमराज ने क्षमा माँगते हुए नचिकेता से कहा – 'ब्राह्मण अतिथि अग्निस्वरूप होता है। तुमने तीन रातें मेरे द्वार पर व्यतीत की हैं, इसलिए मैं तुम्हें तीन वरदान देता हूँ।'

१. पहला वरदान – नचिकेता ने वरदान माँगा कि जब वह वापस घर लौटे तो उसके पिता उसे प्रेमपूर्वक स्वीकार करें और शान्तचित्त हों। यमराज ने वरदान दिया – 'तुम्हारे पिता प्रसन्न होंगे और तुम्हें प्रेम से गले लगाएँगे। यह सन्दर्भ

भावनात्मक सोच (Emotional Intelligence) को दर्शाता है।

२. दूसरा वरदान – नचिकेता ने अग्निविद्या (अग्नि यज्ञ की विधि) का ज्ञान माँगा, जिससे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। यमराज ने प्रसन्न होकर अग्निविद्या का विस्तार से उपदेश दिया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह सन्दर्भ कौशल विकास (Skill development) पर बल देता है।

३. तीसरा वरदान – अब नचिकेता ने सबसे कठिन प्रश्न पूछा – 'मृत्यु के बाद आत्मा का क्या होता है? क्या आत्मा रहती है या नहीं रहती? इस विषय का मुझे ज्ञान दीजिए।'

यमराज ने पहले नचिकेता की परीक्षा ली। उन्होंने उसे धन, राज्य, सुन्दरियाँ, दीर्घायु आदि का प्रलोभन दिया, परन्तु नचिकेता अडिग रहा। उसने स्पष्ट कहा – 'हे यम! जो धन आज है, वह कल नष्ट हो जाएगा। ये विषय वस्तुएँ क्षणिक हैं। मुझे केवल सत्य चाहिए – आत्मज्ञान।' यह सुनकर यमराज अत्यन्त प्रसन्न हुए और नचिकेता को आत्मा, मृत्यु, और मोक्ष के रहस्य का गूढ़ उपदेश दिया। मृत्यु के रहस्य को जानना नचिकेता की आध्यात्मिक जिज्ञासा (Spiritual aspiration) दर्शाता है।

नचिकेता से आप क्या सीख सकते हैं?

– सत्य के प्रति आग्रह और आग्रहपूर्वक प्रश्न करने का साहस रखें।

– केवल आडम्बरपूर्ण जीवन नहीं, उसका सार समझना चाहिए।

– आत्मज्ञान की खोज ही सच्चा जीवन है।

– आज के युवाओं को नचिकेता जैसे जिज्ञासु बालक से निडरता, सत्यनिष्ठा और दृढ़ निश्चयी बनने की सीख लेनी चाहिए।

१. सत्य के प्रति आग्रह

आज के युवा को भी अपने चारों ओर के 'अनैतिक व्यवहार' को देखकर प्रश्न पूछना चाहिए।

जब आपके ऑफिस या आसपास के कार्यस्थल में कोई गलत निर्णय लिया जा रहा हो या कोई भी अनैतिक गतिविधि हो रही हो, तो क्या आप उसकी उपेक्षा करते हैं या प्रश्न उठाते हैं?

नचिकेता ने प्रश्न पूछा। नचिकेता ने अपने पिता की गलतियों पर प्रश्न किया। जब कुछ गलत हो रहा हो, तो चुप न रहें। नैतिक साहस रखें। सच बोलने का साहस ही नेतृत्व-क्षमता का प्रारम्भ है।

२. सत्य का सार – मूल उद्देश्य

नचिकेता न तो साधारण बालक था, न ही उसके प्रश्न साधारण थे। उसने ऐसा प्रश्न पूछा, जिसे पूछने का साहस बड़े-बड़े ज्ञानी भी नहीं करते। नचिकेता ने यमराज से पूछा – 'मृत्यु के बाद क्या होता है?' यमराज ने नचिकेता के इस प्रश्न का उत्तर देने के बजाय पहले उसे प्रलोभन दिया। परन्तु नचिकेता ने सभी प्रलोभनों को क्षणभंगुर कहकर यमराज से आत्मज्ञान माँगा।

आज की भाषा में कहें, तो युवाओं को किसी भी प्रकार के प्रलोभन में न आकर अपने मूल उद्देश्य पर केन्द्रित रहना चाहिए। उद्देश्य के प्रति समर्पित रहें। उद्देश्य के प्रति अपनी दृष्टि (Vision) और ध्येय (Mission) स्पष्ट रखें।

३. धैर्य और आत्मनियन्त्रण

पिता के वचन को स्वीकार करने के बाद नचिकेता यमराज के द्वार पर जाकर तीन दिन तक बिना खाए-पिए उनकी प्रतीक्षा करता रहा। विचार कीजिए – आज हम एक ईमेल का उत्तर ३ घण्टे में न आए, तो बेचैन हो जाते हैं। साक्षात्कार (Interview) के लिए बुलावा (call) न आए तो आत्म-सन्देह (self-doubt) आ जाता है। Startup आरम्भ करने में देरी हो, तो घबराहट (panic) हो जाती है। आवेग (Impulse) से नहीं, आत्मसंयम रखकर रणनीति से काम करें।

नचिकेता हमें सिखाता है – 'जो अपने लक्ष्य के प्रति गम्भीर होता है, वह प्रतीक्षा कर सकता है।' 'Patience is not passiveness, it is preparation.' 'धैर्य शिथिलता नहीं, प्रत्युत सम्यक् सिद्धि की पूर्व-तैयारी है।' सफलता पाने की होड़ में, आत्म-स्थिरता न खोएँ। 'सफलता के पथ का सबसे बड़ा शस्त्र धैर्य है।'

४. प्रश्न पूछना – तार्किक या विवेकपूर्ण सोच

नचिकेता ने जीवन-मरण के सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछे। यह उसकी तार्किक सोच, जिज्ञासा और साहसिक दृष्टिकोण को दर्शाता है। आज के कॉर्पोरेट जगत् में तार्किक सोच (Critical Thinking), जिज्ञासा (Curiosity) और

साहसिक प्रश्न (Bold Questions) ही समस्याओं का समाधान करने में सहायता करते हैं।

आज के युवाओं को भी यह समझना चाहिए कि जीवन का उद्देश्य क्या है? करियर, कौशल (skills) और आत्मिक सन्तुलन, इन तीनों का सन्तुलन आवश्यक है। केवल भौतिक लाभ ही न चाहो। सही प्रकार के प्रश्न पूछो, तभी सही समाधान मिलेगा। प्रश्न पूछना नवाचार (Innovation) और विकास (Growth) की कुँजी है।

५. आत्मबोध (Know Your Core) – मूल उद्देश्य की पहचान

यमराज ने नचिकेता को आत्मा का रहस्य बताया – 'तू शरीर नहीं है, तू आत्मा है – जो न जलता है, न कटता है, न मरता है।' आज के समय में मानसिक रूप से थक चुके युवा (burnout) चिन्ता (anxiety) और प्रतिस्पर्धा (competition) के दबाव में जीवन व्यतीत करते हैं, इस प्रकार का आत्मबोध – (Self-Awareness, Emotional Intelligence) उन्हें शक्ति देता है।

नचिकेता कोई पुराना धार्मिक पात्र नहीं है। वह आज भी हमारे भीतर बैठा हुआ ऐसा जिज्ञासु, निडर और सत्यनिष्ठ युवा है, जो विश्व को बाहरी सफलता से नहीं, बल्कि भीतर की गहराई से बदलना चाहता है।

'नचिकेता बनो – जो मृत्यु के द्वार पर भी आत्मा की खोज न छोड़े।' आधुनिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में नचिकेता का जीवन कॉर्पोरेट युवाओं, विद्यार्थियों और उद्यमियों के लिए बहुत ही सहज, स्पष्ट और प्रेरणादायी है।

इस कथा की जीवन में उपयोगिता

१. आज के युवा को नचिकेता के समान एक आत्म-जागरूक युवा (Self-aware Youth) बनना होगा।

२. यमलोक में नचिकेता की प्रतीक्षा युवाओं को धैर्य और आत्मविश्वास प्रदान करता है।

३. यमराज द्वारा नचिकेता को दिये गए तीन वरदान युवाओं को सही प्राथमिकता तय करने की क्षमता दर्शाता है।

४. प्रलोभन को अस्वीकार करना – अन्यमनस्कता, मन को बहकाने (Distraction) वाले प्रलोभनों को अस्वीकार करना युवाओं को मूल उद्देश्य के प्रति एकनिष्ठ या केन्द्रित रहने का सन्देश देता है।

यमराज ने नचिकेता को बहलाने के लिए भोग, सुन्दर कन्याएँ, दीर्घायु, सुख-सम्पत्ति जैसी सभी चीजों का प्रलोभन दिया। परन्तु नचिकेता ने कहा – 'ये सब नश्वर हैं। मैं जानना चाहता हूँ – आत्मा क्या है?'

क्या आप भी जीवन में बहकाव, अन्यमनस्कता (distraction) को पहचान पाते हैं?

सोशल मीडिया, दूसरों से अपनी तुलना करना (comparison), साथियों का दबाव (peer pressure), जीवनशैली की चमक-दमक (lifestyle glamour) – ये सब आधुनिक यमराज हैं।

यदि आप सच्ची सफलता चाहते हैं, तो बाहरी प्रलोभनों के भ्रम से बाहर निकलकर अपने मूल उद्देश्य (Core Purpose) पर ध्यान दो। हमें नचिकेता के जीवन से सत्यनिष्ठा (Integrity), धैर्य (Patience), स्पष्टता (clarity), साहस (courage) और आत्मबोध (self-awareness) जैसे मूल्यों को जीवन में आत्मसात् करना चाहिए।

नचिकेता एक आदर्श युवा

– वह भावनात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) रखता है – पिता को क्षमा करता है।

– वह कठिनाई से उबरने की क्षमता (Resilience) रखता है – मृत्यु के द्वार पर भी शान्त रहता है।

– वह मूल उद्देश्य पर केन्द्रित (Purpose Driven) है – मन भ्रमित करने वाले प्रलोभनों (distractions) को ठुकराता है।

– वह जिज्ञासु (Truth Seeker) है – बाहरी सफलता से सन्तुष्ट नहीं है।

– वह आध्यात्मिक और व्यावहारिक (Spiritual & Practical) दोनों है – कौशल (Skill) और आत्मबोध (Self) दोनों चाहता है।

उपसंहार – 'नचिकेता कोई पौराणिक पात्र नहीं, वह एक चेतना है, जो हर उस युवा में जीवित होती है, जो सत्य का अन्वेषण करता है।' आज के कॉर्पोरेट जगत्, शिक्षा जगत् और समाज में ऐसे ही युवाओं की आवश्यकता है, जो केवल सफल नहीं, सार्थक बनना चाहते हैं। ○○○

दशहरा-विशेष

दशहरा और रामलीला का सम्बन्ध तथा महत्त्व

चन्दन कुमार

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दशहरा में मुख्यत: हम माता दुर्गा की पूजा और उपासना करते हैं, परन्तु क्या कभी आपने यह सोचा है कि दशहरा के समय हम रामलीला का प्रदर्शन क्यों करते हैं? भारतीय जन मानस में रामलीला का क्या महत्त्व है? भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में वीर सेनानियों ने रामलीला का उपयोग कर कैसे जन-मानस में स्वतन्त्रता की लौ जलायी? इन सारे प्रश्नों पर हम इस लेख में चर्चा करेंगे तथा इस वैश्विक और डिजिटल समय में इसको कैसे पुनर्जीवित रखा जाए, इस पर भी प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

रामलीला मुख्य रूप से रामायण के विभिन्न प्रसंगों का नाट्य रूपान्तरण है। यह भगवान राम के जन्म से लेकर सीता-हरण, रावण से युद्ध और अन्त में रावण के वध तक की पूरी कथा को प्रस्तुत करती है। यह नाटकीय प्रदर्शन नवरात्रि में नौ दिनों तक चलता है और दशहरे के दिन रावण का वध दिखाया जाता है। भारत के लगभग प्रत्येक प्रान्त में अनेक भाषाओं में इनका मंचन होता है और सभी स्थानों में कुछ अपने स्थानीय परिवर्तन भी देखने को मिलते हैं।

रामलीला यूनेस्को (जो विश्व के धरोहर का संरक्षण करती है) के मानवता के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में २००५ में ही सम्मिलित कर ली गयी थी। रामलीला केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व के कई देशों – नेपाल, पाकिस्तान, थाईलैंड, लाओस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, सूरीनाम, मॉरीशस जैसे कई देशों मे भी की जाती है। थाईलैंड में रामायण को रामकिआन कहते हैं। वहाँ रामलीला का मूक अभिनय लोकनाट्य के रूप में किया जाता है। बाली देश के रामायण का क्या कहना ! वहाँ 'कोचक' के रूप में मुख से आवाज निकालकर सीताहरण का दृश्य दिखलाते हैं।

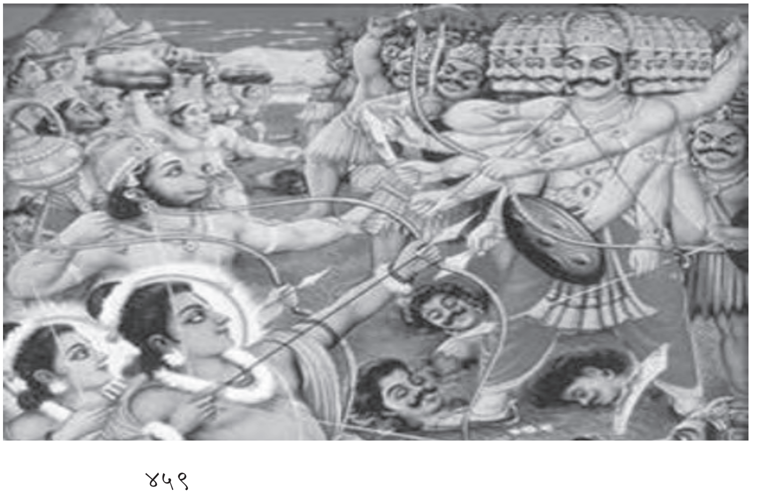

'रामो विग्रहवान् धर्मः' अर्थात् धर्म की साक्षात् मूर्ति राम हैं। यह शब्द वाल्मीकि रामायण में मारीच ने श्रीराम के लिये कहा था। भारतीय जनमानस में श्रीराम एक ऐसे आदर्श पुरुष हैं, जिनके कण-कण में धर्म दिखता है। एक प्रसंग है, जिसमें वाल्मीकिजी अपने गुरु नारदजी से कहते हैं, मुझे ऐसे चरित्र के बारे में बताएँ, जिससे धर्म और इतिहास दोनों का पता चले, ऐसा चरित्र जो निष्कलंक हो। तब नारदजी कहते हैं, वैसा चरित्र तो मात्र राम का है, जो विनयी हैं, स्मितपूर्वभाषी हैं, वीर हैं, अपने कर्तव्य में दक्ष हैं। तब जाकर महर्षि वाल्मीकि जी ने रामायण की रचना की। ऐसी मान्यता है कि रामलीला-मंचन का मुख्य आधार यही ग्रन्थ है, यद्यपि बहुत से स्थानों पर तुलसीदास के द्वारा लिखित रामचरितमानस भी रामलीला का मुख्य आधार माना जाता है।

रामलीला के महत्त्व को समझने के लिये पहले हमें धर्म को समझना पड़ेगा। धर्म को समझने के लिये हमें पहले यह समझना होगा कि धर्म क्या नहीं है? पहले तो यह स्पष्ट धारणा रखिए की धर्म रीलिजन नहीं है। रीलिजन को हम पंथ कह सकते हैं। धर्म को केवल कर्मकाण्ड से ही जोड़कर न देखें। धर्म को हम त्याग, आत्मीयता, एकात्मकता, उपासना और सेवा से जोड़ सकते हैं। उदाहरण के लिये देखें तो धर्म एक विशालकाय ब्रह्माण्ड है और रीलिजन विभिन्न-विभिन्न

ग्रह हैं। सन् १८९३ के अपने शिकागों भाषण में स्वामी विवेकानन्द जी ने भी कहा था, ''सभी धर्मों का मुख्य उद्देश्य मानवता की सेवा और आत्मा की शुद्धता है। धर्म न केवल व्यक्तिगत उत्थान का साधन है, बल्कि समाज की भलाई और सहयोग का भी मार्ग है।'' उन्होंने भारतीयों में अपने धर्म और संस्कृति के प्रति स्वाभिमान को बढ़ाया था।

रामलीला का भारतीय समाज में गहरा सामाजिक महत्त्व है। यह केवल धार्मिक कथा का मंचन या मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से समाज में नैतिक मूल्यों, सामुदायिक एकता, आर्थिक स्थिति में सुधार और सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण भी किया जाता है। रामलीला के प्रदर्शन से सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का प्रसार होता है, जो विभिन्न परिवारों और समुदायों को एक साथ लाने में सहायता करता है।

रामलीला के प्रत्येक दृश्य को अगर सामाजिक दृष्टि से देखा जाए, तो यह हमें अच्छे-बुरे, सत्य-असत्य, धर्म और अधर्म का पाठ पढ़ाती है। उदाहरण के लिये रामलीला प्रदर्शित इस दृश्य को देखिए – एक पुत्र श्रीराम अपने पिता दसरथ के वचन का पालन करने हेतु वन में चले जाते हैं और दूसरे पुत्र भरत हैं, जो अपने माता-पिता की इच्छा कि राजसिंहासन पर भरत बैठे, परन्तु वे इसे ठुकरा देते हैं। फिर भी इस परिस्थिति में दोनों को धर्मात्मा कहा जाता है। ऐसा क्यों? जब रामलीला के इस दृश्य की गहराई में जायेंगे, तब आपको समझ में आयेगा कि यहाँ भरत धर्म के अनुसार प्रजा हेतु पारिवारिक आदि सभी सुख और समृद्धि का त्याग करते हैं और श्रीराम भी अपने कुल और पिता के वचन के पालन हेतु अपने सुख-समृद्धि का त्याग कर वनवास चले जाते हैं। इस प्रकार दोनों श्रीराम और भरत धर्मात्मा हैं, जिन्होंने प्रजा के सुख के लिये सुख-समृद्धि का त्याग कर दिया। इससे हमें यह सीख मिलती है कि जब भी व्यक्ति के हित और उससे बड़ी इकाई परिवार या समाज या राष्ट्र के हित के बीच द्वन्द हो, तो धर्म के अनुसार अपना हित त्यागकर बड़ी इकाई के हित में निर्णय लेना चाहिए।

रामलीला भारत की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्त्वपूर्ण भाग है। इसके माध्यम से भारतीय समाज की पुरानी परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण किया जाता है। यह नाटकीय रूप से रामायण की कथा को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाती है, जिससे युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों और इतिहास का ज्ञान मिलता है। रामलीला में भारतीय संगीत, नृत्य, कला और लोक-कथाओं का समन्वय होता है, जिससे समाज में कला और संस्कृति का संवर्धन होता है।

रामलीला से आर्थिक समृद्धि – रामलीला केवल हमें सामाजिक ज्ञान ही नहीं देती, बल्कि उस अवधि में उस स्थान पर एक ऐसी व्यवस्था खड़ी कर देती है, जिससे वहाँ की आर्थिक स्थिति में सुधार होता है तथा स्थानीय लोगों का विकास होता है। उदाहरण के रूप में देखें तो जिस क्षेत्र में रामलीला होती है, वहाँ पर कुछ समय पूर्व ही व्यवस्था की दृष्टि से सारे समाज से चन्दा लिया जाता है और लोग इस कार्य के लिए प्रसन्नता से दान देते हैं। जहाँ भी रामलीला होती है, वहाँ मेला लगता है। उस मेले में वहाँ के स्थानीय दुकानदार, हस्तशिल्पकार तथा विभिन्न प्रकार के कलाकार अपनी दुकान और कला का प्रदर्शन करते हैं, जिससे उनको सामाजिक प्रतिष्ठा, स्वयं के कार्य के प्रति संतुष्टि तथा इससे बढ़कर जीविका के लिये आर्थिक सहयोग भी मिलता है।

रामलीला से धार्मिक सहिष्णुता – रामलीला के समय समाज के सभी वर्ग, जाति, धर्म, आयु के लोग बड़े उत्साह के साथ इस आयोजन में भाग लेते हैं। रामलीला विभिन्न धर्मों के लोगों को एक मंच पर लाकर धार्मिक सहिष्णुता का संदेश देती है। कई स्थानों पर रामलीला के कलाकारों की वेश-भूषा मुस्लिम ही तैयार करते हैं, क्योंकि वे इसमें निपुण होते हैं। अंतिम दिन रावण और अनेक राक्षसों का पुतला-दहन होता है और यह पुतला भी अधिकांश स्थानों पर मुस्लिम धर्मों के लोग ही बनाते हैं। कई स्थानों पर मुस्लिम कलाकार रामलीला में भाग लेते हैं और जो दर्शक भी होते हैं। इस प्रकार यह आयोजन भारतीय समाज में धार्मिक सहिष्णुता और विविधता में एकता का प्रतीक बन जाता है।

सर्ववर्ग हेतु रामलीला – समाज के विभिन्न वर्ग रामलीला के कारण एक साथ मिलते हैं। यह सामाजिक शक्ति का परिचायक है। रामलीला की अवधि में दसों दिन समाज के लोग एक साथ आते हैं, चाहे वह पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़, यहाँ तक कि परिवार के सभी आयु के व्यक्ति चाहे वह वृद्ध हो या बालक, इसमें दसों दिन एक ही विषय को सुनते और देखते हैं तथा चर्चा करते हैं, जिसके माध्यम से उनमें धर्म और अधर्म, सत्य और असत्य में अन्तर समझने

में सरलता होती है और ज्ञान में वृद्धि होती है।

मनोरंजन का साधन रामलीला – रामलीला धार्मिक या सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ-साथ मनोरंजन का भी एक साधन है। दशहरा की पूरी अवधि में समाज में धार्मिक गतिविधियों के लोग बहुत उत्साही हो जाते हैं, प्रसन्न रहते हैं तथा परिवार और समाज में चहल-पहल बढ़ जाती है। छोटे बच्चे अपने बड़ों से मेला घूमने तथा नई-नई चीजों को दिखाने का आग्रह करते हैं और बड़े भी अपना दायित्व समझ इसे निभाते हैं, अपनों के संग समय बिताते हैं।

स्वतन्त्रता संग्राम में रामलीला का योगदान – रामलीला का स्वतन्त्रता संग्राम में भी बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यह राष्ट्रीय एकता का जागरण और सामाजिक चेतना को जागृत करने का महत्त्वपूर्ण स्थान माना जाता था। रामलीला में प्रस्तुत राम-रावण युद्ध को प्राय: भारतीयों के स्वतन्त्रता संघर्ष और ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक माना गया। रावण का पुतला जलाना बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक के रूप में, ब्रिटिश शासन के अन्त की आशा और प्रेरणा देता था। रामलीला ने विभिन्न वर्गों और समुदायों को एक साथ लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी भारत में रामलीला ने लोगों को एकत्र किया और सामूहिकता की भावना को सबल, सशक्त किया। इसका उपयोग राष्ट्रीय आन्दोलनों के समय लोगों को एकजुट करने के लिये किया गया।

स्वतन्त्रता संग्राम के समय रामलीला के मंचन के समय आयोजित सभाओं में स्वतन्त्रता सेनानियों और नेताओं ने भाषण दिये, जो भारतीय जनता में राष्ट्रवाद और स्वतन्त्रता के प्रति समर्पण की भावना को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए। रामलीला के मंचन से जनता को यह संदेश दिया गया कि भारतीय संस्कृति और धर्म महान हैं। इन्हें पश्चिमी प्रभाव से दुर्बल नहीं होने देना चाहिए। इससे भारतीय जन-मानस में आत्मविश्वास और सांस्कृतिक स्वाभिमान बढ़ा।

स्वदेशी आन्दोलन के समय रामलीला के आयोजन ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्त्रों को अपनाने का संदेश प्रसारित करने में सहायता की। कलाकारों और आयोजकों ने स्वदेशी वस्त्रों और सामग्री का उपयोग किया, जो भारतीय जनता में स्वदेशी आन्दोलन के समर्थन को प्रोत्साहित करता था। रामलीला को ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में संदेश पहुँचाने का एक शक्तिशाली माध्यम माना जाता था, जहाँ समाचार पत्रों और रेडियों तक भी पहुँच नहीं थी। रामलीला के आयोजनों के समय जन-मानस में आजादी के आन्दोलन के प्रति जागरुकता फैलाने का काम किया गया।

हमने अभी तक यह देखा कि कैसे रामलीला के कारण पूरे समाज में सामाजिक व्यवस्था चलती है, जो समाज के प्रत्येक अंग को पोषित और विकसित करती है। इसलिए इस डिजिटल और वैश्विक युग में हमें इन मूल्यों को जीवित रखना होगा। यह तभी सम्भव हो पाएगा, जब हम भी अपनी परम्परा और संस्कृति को इस युग में भी जीवित रखें। रामलीला को डिजिटल युग में जीवित रखना एक चुनौती है, उसमें सबसे बड़ी चुनौती है कि लोगों को घर से बाहर निकाल कर रामलीला देखने को प्रेरित कैसे किया जाए? कई स्थानों पर अभी भी रामलीला देखने को हजारों की भीड़ लगती है। दिल्ली की रामलीला उनमें से एक है। इसका महत्त्वपूर्ण कारण है व्यवस्था, बॉलीवुड अभिनेता या सांस्कृतिक हस्तियों से जुड़ाव, समाज के समृद्ध व्यक्तियों का सक्रिय रूप से सहयोग होना।

ठीक इसी प्रकार हमें सबके लिए सुगम और सुरक्षित व्यवस्था या वातावरण का निर्माण करना होगा। डिजिटल इन्फ्लुएंसर्स या सेलिब्रिटीज के साथ सहयोग करके युवा तकनीकप्रेमी दर्शकों तक पहुँचने में मदद मिल सकती है। इन्फ्लुएंसर्स अपने प्लेटफॉर्म्स पर रामलीला के सांस्कृतिक और नैतिक महत्त्व को प्रचार कर सकते हैं और अपने अनुयायिओं को रामलीला प्रदर्शन में भाग लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

विभिन्न क्षेत्रों से रामलीला प्रदर्शनों का डिजिटल आर्काइव बनाया जा सकता है। इस आर्काइव में उच्च गुणवत्ता वाली रिकॉर्डिंग्स, ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण और कला रूप से जुड़े प्रमुख व्यक्तियों के साक्षात्कार संयुक्त किए जा सकते हैं। ये आर्काइव्स विद्वानों, छात्रों और उत्साही लोगों के लिए एक मूल्यवान संसाधन बन सकते हैं। रामलीला के इतिहास, वेशभूषा, स्क्रिप्ट और क्षेत्रीय विविधताओं को प्रदर्शित करनेवाले वर्चुअल म्यूजियम्स बनाए जा सकते हैं, जो एक समृद्ध और सम्पूर्ण सीखने का अनुभव प्रदान कर सकते हैं। रामलीला को उन शैक्षिक कार्यक्रमों में एकीकृत

शेष भाग पृष्ठ ४७२ पर

श्रीरामकृष्ण-स्तुति – ६

रामकुमार गौड़, वाराणसी

(तर्ज – भए प्रगट कृपाला, दीनदयाला...)

ईश्वर बहुरूपा, तदपि अरूपा, पार न पावै कोई ।
धर रंग अनेका, गिरगिट एका, देखि बुद्धि भ्रम होई ।।
जो भगवत्-दासा, हरि-अनुदासा, चरित जान यह सोई ।
जिमि स्वामी जानी, दास अमानी, कहै मर्म अति गोई ।।६१।।
काशी जब आए, शिव गुण गाए, सब कुछ शिवमय देखा ।
स्वामी तैलंगा, संग सत्संगा, विश्वनाथ सम लेखा ।।
नौका चढ़ देखा, दृश्य अशेषा, रम्य सुरसरी नीरा ।
सम गति अविनाशी, शंकर काशी, देत श्मशान के तीरा ।।६२।।

बिन भजन विवेका, जतन अनेका, बहु साधन समुदाई ।
तृण सम सब जाना, अति अज्ञाना, स्वल्प भी नहीं सहाई ।।
सोई परम सुजाना, गत मद-माना, जो कर हरि-सेवकाई ।
करि नित सत्संगा, भगवत्-गंगानीर पियै सुखदाई ।।६३।।
करके सब साधन, ब्रह्माराधन, सार यही समझाया ।
जो परम विवेकी, हरि सिर टेकी, रहै भक्ति की छाया ।।
सोइ नरतनुधारी, परम सुखारी, जन्म सफल करि आया ।
जो मन-कर्म-बानी, होइ अमानी, कर हरिभजन अमाया ।।६४।।

ईश्वर दो बारा, हँसै अपारा, देख मनुज अज्ञाना ।
जब सूत लगाई, दो प्रिय भाई बाँटैं खेत पुराना ।।
ईश्वर करैं हासा, देख तमाशा, हीनबुद्धि दो भाई ।
धरनी जग मेरा, तहँ करि डेरा, बाँटै भाग बनाई ।।६५।।
ईश्वर करैं हासा, रोगी पासा वैद्य कहै जब बाता ।
रोगी दुख-अंता, करूँ तुरन्ता, शोक करो मत माता ।
तब रोगी अन्ता, देखि तुरन्ता, बोलैं हँसि भगवन्ता ।
यह तो अभिमानी, अति अज्ञानी अति समीप प्राणान्ता ।।६६।।

जब रहै असंगा, करि सत्संगा, नर तजि कंचन-कामा ।
करि ईश्वर भक्ति, विषयासक्ति-रस-विहीन, गतकामा ।
तब सच्चित् रूपा, विमल अनूपा, आत्मज्ञान नर पाई।
हो सहज विदेहा, देखै देहा, निज आत्मा विलगाई ।।६७।।
जब सूख नारियल, होता निर्जल, ठीक समझ तब आए ।
जो भोज्य अमोला, सूखा गोला, पृथक सो दिखत हिलाए ।।
ज्यों म्यान के अन्दर, अतिशय सुन्दर, पृथक दिखै तलवारा।।
त्यों देह सुमन्दिर, आत्मा सुन्दर, रहे पृथक सुखसारा।।६८।।
करि बहु धन संचय, होत अमित भय, ज्यों मधुमक्खी लोभी ।
सहि कष्ट अपारा, छत्ता प्यारा, रचै, बचै नहिं, तो भी ।।
त्यों जग धन-धामा, हो निष्कामा, हरि-सेवा जो करता ।
सो परम सुजाना, गत मदमाना, भवसागर हो तरता ।।६९।।
धरि मानव कामा, सरल उपाया, तरन हेतु हरि-माया ।
अन्तर व्याकुलता भाव प्रबलता भक्ति-कल्पतरू-छाया ।।
करि भगवत जापा, विकल विलापा, ईश्वर हेतु विशेषा ।
हो अन्तर निर्मल, भाव-अश्रुजल, से मिलते परमेशा ।।७०।।

जब तक घृत काँचा, आग की आँचा, रखते ही कलकलाई ।
तन्मय मधुपाना, भ्रमर सुजाना, करै न स्वर गुंजाई ।
भ्रम-तर्क-विचारा, दूर निवारा, ईश्वर-शरण में आई ।
मन शान्त स्वभावा, भक्ति-प्रभावा, छोड़ै सब कुटिलाई ।।७१।।
विषयी नर तन्मय, होत विषयमय, जो आकर्षण-नेमा ।
जो सती सयानी पति सुखखानी, प्रियतन के प्रति प्रेमा।।
माता निज बाला, जदपि कुचाला, रखै प्रीति अविकारी ।
तीनों एकत्रा, करि तेहि मात्रा, प्रेम से मिलहिं मुरारी ।।७२।।

जब लगती प्यासा, लेकर आशा, जाते सरोवर-पासा।
तब सुविमल तीरा, सुस्थिर नीरा, पीकर मिटती प्यासा।।
संशय मन आवत, वारि हिलावत, जल गंदला अनायासा ।
संशय-भ्रम जाए, श्रद्धा आए, तब हरिपद-विश्वासा ।।७३।।
नर रहै विकल अति, ज्यों प्रमत्त मति, संसारी धन-कामा।
सांसारिक हानी, रोदन ठानी, करै विलाप तमामा ।।
नश्वर सम्बन्धा, हित हो अन्धा, मानव अगणित भाँती ।
जो सत्य सनातन, उसके प्रति मन, में न विकलता आती ।७४।।

ज्यों पहन के जूता, नहिं कुछ चिन्ता, कंटकमय कान्तारा।
फिर निर्भय विचरन, करो मुदित मन, हो निश्चिन्त अपारा।।
त्यों जगत् अनित्या, ईश्वर सत्या, बोध रखो संसारा।
जग कंचन-कामा, हो निष्कामा, बनकर भक्त उदारा।।७५।।

काशी में काली उपासना

प्रखर श्रीवास्तव

शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

मातृदेवी की उपासना विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताओं की एक विशेषता है। प्रकृति की स्फूर्त ऊर्जा को मातृ रूप में पूजने की परम्परा भारत में भी अति प्राचीन है। ऐसे में काशी का इस परम्परा से वंचित रहना असम्भव ही था। हिन्दू धर्म की सप्तपुरियों में से एक काशी वैदिक, पौराणिक, स्मार्त और तन्त्र के साथ ही बौद्ध व जैन जैसे श्रमण परम्पराओं की भी कर्मभूमि रही है। पुराण काशी को वैष्णव, शैव, शाक्त, गाणपत्य तथा सौर तीर्थ के रूप में स्थापित करते हैं। उक्त सम्प्रदायों से सम्बन्धित अनेकों देवालयों का वर्णन पुराणों में हुआ है।

विश्वेश्वर शिव की नगरी काशी में शक्ति-उपासना की प्राचीन परम्परा रही है। स्कन्दपुराण का काशीखण्ड वाराणसी नगर में प्रतिष्ठित ६८ शाक्त पीठों का वर्णन करता है। इनमें से १६ पीठ विशिष्ट कोटि के बतलाये गए हैं।

इसी प्रकार की एक सूची कृत्यकल्पतरु में उद्धृत प्राचीन लिंग पुराण से मिलती है। इसमें २४ शाक्त पीठों का वर्णन मिलता है। इनमें से १६ पीठ वही हैं, जिनका वर्णन काशी खण्ड में भी हुआ है। इस प्रकार इन दोनों पुराणों से ७२ देवी पीठों का वर्णन मिलता है, जिनकी अवस्थिति काशी में थी। इनके अतिरिक्त भी काशी में नवदुर्गा, नवशक्ति, नवचण्डी, नवगौरी, अष्टमातृका और चौसठ योगिनियों की स्थिति बतलाई गयी है। इनमें से अनेकों पीठ आज या तो नष्ट हो चुके हैं या इनका स्थान-परिवर्तन हो चुका है।

काशी में स्थित नवचण्डी पीठों का वर्णन कृत्यकल्पतरु में उद्धृत प्राचीन लिंग पुराण में मिलता है। इनमें काशी की रक्षा करनेवाली देवियों में दक्षिण में दुर्गा, नैऋत्य में उत्तरेश्वरी, पश्चिम में अंगारेशी, वायव्य में भद्रकालिका, उत्तर में भीष्मचण्डी, ईशान में महामुण्डा, पूर्व में शांकरी, आग्नेय में अध:केशी और मध्य में चित्रघंटा देवी की स्थिति है –

दक्षिणे रक्षते दुर्गा नैऋते चोत्तरेश्वरी।
अङ्गारेशी पश्चिमे च वायव्ये भद्रकालिका।।
उत्तरे भीष्मचण्डी च महामुण्डा च सा ततः।
ऊर्ध्वकेशी समायुक्ता शाङ्करी सर्वतः स्मृता।।
अध:केशी च आग्नेयाः चित्रघण्टा च मध्यतः।

(कृ.क.त.,पु. १२६-१२७)

इस प्रकार ये ९ देवियाँ ९ दिशाओं से काशी की रक्षा करती हैं। उपरोक्त वर्णित नवचण्डियों के अतिरिक्त काशी खण्ड में शिखीचण्डी का वर्णन भी आता है, जिनकी अवस्थिति वायव्य कोण में बतलायी गयी है। नवशक्तियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध देवी दुर्गा का मन्दिर है, जो दुर्गाकुण्ड पर स्थित है।

काशी में स्थित नवशक्तियों का वर्णन काशी खण्ड के बारहवें अध्याय में आता है। इनमें शतनेत्रा, सहस्त्रास्या, अयुतभुजा, अश्वारूढ़ा, गजास्या, त्वरिता, शववाहिनी, विश्वा व सौभाग्य गौरी का नाम मिलता है। इन देवियों में सौभाग्य गौरी की स्थिति को मध्य में माना गया है।

इसी प्रकार काशी खण्ड में नवदुर्गा का वर्णन तो है,

परन्तु इनके पीठ, स्थान व इनके नाम की सूची नहीं मिलती। आश्विन नवरात्रि के समय इन नवदुर्गाओं की यात्रा का विधान मिलता है। प्रचलित मान्यतानुसार नवदुर्गा के अन्तर्गत देवी शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कुष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी व सिद्धिदात्री को स्थान दिया जाता है। काशीखण्ड में प्रत्येक भौमवार, अष्टमी व चतुर्दशी तिथि को दुर्गा-यात्रा का विधान बतलाया गया है –

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां भौमवारे विशेषतः।
नवरात्रं प्रयत्नेन प्रत्यहं सा समर्चिता।।
नाशयिष्यति विघ्नौघान्सुमतिं च प्रयच्छति।
शारदं नवरात्रं च सकुटुम्बैः शुभार्थिभिः।।
यो न सांवत्सरीं यात्रां दुर्गायाः कुरुते कुधीः।
काश्यां विघ्नसहस्त्राणि तस्य स्युश्च पदे-पदे।।

(का. ख. ७२/८२-८६)

काशी के प्रधान पीठों में नवगौरी का उल्लेख पुराण करते हैं। नवगौरियों में मुखनिर्मालिका गौरी, ज्येष्ठा गौरी, सौभाग्य गौरी, श्रृंगार गौरी, विशालाक्षी, ललिता गौरी, भवानी गौरी, मंगला गौरी तथा महालक्ष्मी सम्मिलित हैं। लिंग पुराण मुखनिर्मालिका देवी के स्थान पर अहनिकालिका देवी का नाम-उल्लेख करता है। भवानीगौरी को काशी की प्रधान देवी एवं विश्वेश्वर शिव की तत्कुटुम्बिनी (गृहिणी) कहा गया है। कालान्तर में भवानी गौरी का स्थान अन्नपूर्णा देवी ने ले लिया। भवानी देवी को समर्पित एक स्तुति में इन्हें ही अन्नपूर्णा कहा गया है।

इसी प्रकार विशालाक्षी गौरी का स्थान ५१ शक्ति पीठों में मिलता है। तन्त्र चूड़ामणि में प्रस्तुत शक्ति पीठों की सूची में, काशी की विशालाक्षी गौरी को शक्ति पीठ व देवी के भैरव के रूप में काल भैरव को प्रतिष्ठित किया गया है। यहाँ देवी का कर्णकुण्डल गिरा था। ऐसे में ये दोनों ही स्थल काशी के महत्त्वपूर्ण शाक्त पीठ के रूप में बतलाये गए हैं। इनके अतिरिक्त काशी खण्ड व लिंग पुराण काशी में स्थित मातृका पीठ का वर्णन भी करते हैं। मातर: शब्द पुराणों में अष्टमातृकाओं के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। काशी की अष्टमातृकाओं में ब्राह्मी, माहेश्वरी, वैष्णवी, ऐन्द्री, वाराही, कौमारी, चामुण्डा व चर्चिका देवी का नाम भी सम्मिलित है। काशी खण्ड के अनुसार मातृतीर्थ में स्नान कर मातृकओं के दर्शन करने से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। इस तीर्थ के अतिरिक्त भी पुराण इन देवियों के अलग-अलग पीठों की चर्चा भी करते हैं।

पुराणों में पंचमुद्रापीठ का वर्णन देवी विकटा के प्रधान पीठ के रूप में मिलता है। पद्मपुराण में विकटा देवी को ही देवी संकटा कहा गया है। आज भी जनमानस में देवी संकटा नाम से ही पूजित हैं। इन्हीं देवी का दूसरा नाम विपत्तारिणी है, जिनकी विशेष पूजा आषाढ़ मास की गुप्त नवरात्रि में होती है। इसके अतिरिक्त आगम एवं पुराणों में वर्णित चौसठ योगिनियों का प्रधान पीठ काशी में भी स्थित था। आश्विन नवरात्रि व चैत्र कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को इनके व्रत एवं पूजन का विधान पुराणों में मिलता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त काशी में स्थित अन्य महत्त्वपूर्ण शाक्त पीठों में अमृतेश्वरी, कुब्जा, विधि देवी, द्वारेश्वरी, शिवदूती, चित्रग्रीवा, हरसिद्धि, सिद्धलक्ष्मी, हयकंठी, तालजंघेश्वरी, यमदृष्टा, चर्ममुण्डा, महारुण्डा, स्वप्नेश्वरी, भीषणा भैरवी, शुष्कोदरी, भागीरथी, मणिकर्णी देवी, वाराणसी देवी, काशी देवी, निगडभंजनी, छागवक्रेश्वरी व अघोरेश्वरी देवी प्रमुख हैं।

मध्यकाल में शक्ति से जुड़े उपासना-स्थलों व पूजा पद्धति आदि में और वृद्धि हुई। यही वह समय है, जब पूर्वी भारत में शाक्त तन्त्र का प्रभाव बढ़ रहा था, ऐसे में काशी भी इस प्रभाव से वंचित न रह सका। शाक्त तन्त्र के वृद्धि के साथ ही दस महाविद्याओं के स्वरूप व उनकी पूजा पद्धतियों में विस्तार हुआ। शाक्त धर्म के ६४ तन्त्र ग्रन्थ हैं, जो इन विषयों की व्याख्या करते हैं। तन्त्र साहित्य प्रधानत: शिव-पार्वती संवाद के रूप में मिलता है। जब देवी प्रश्नकर्ता हों और शिव वक्ता के रूप में हों, तब उन्हें आगम और जब विश्वेश्वर श्रोता हों और देवी वक्ता, उन ग्रन्थों को निगम कहते हैं। मुख्यत: शाक्त तन्त्र की अधिष्ठात्री देवी काली हैं, जो सृष्टि, स्थिति व विनाश की देवी हैं। जब देवी स्वयं महाकाल को भी ग्रास कर लेती हैं, तो उन्हें आद्या काली कहा जाता है। तन्त्र के प्रभाव में वृद्धि के कारण काशी में भी महाविद्याओं के निमित्त मन्दिरों का निर्माण हुआ, इनमें प्रथम महाविद्या काली का स्थान सर्व प्रमुख है। महानिर्वाण तन्त्र में देवी दक्षिणा काली को 'काशीश्वरी' की संज्ञा दी गयी है, व इन्हें काशीश्वर अर्थात् विश्वनाथ को वर देनेवाली उनकी प्रियतमा कहा गया है।

कुलाचारा कौतुकिनी कुलमार्गप्रदर्शिनी।
काशीश्वरी कष्टहर्त्री काशीशवरदायिनी।।
काशीश्वरकृतामोदा काशीश्वरमनोरमा।।

(महानिर्वाण तंत्र ७/२८-२९)

योगिनी तन्त्र में काशी को काली के मुख के समान तेजोमय कहा गया है, इसीलिये काशी को गिरिमुख अथवा गौरीमुख भी कहा जाता है। इसे देखने से भक्तों के मन में अतुल आनन्द होता है, जिसके कारण इसे आनन्द कानन भी कहते हैं। देवी भागवत में भी काशी को गौरीमुख कहा गया है। काशी में काली उपासना का वर्णन पुराणों में भी मिलता है। लिंग पुराण में गोप्रेक्ष स्थान को कालिका देवी का पीठ स्थान बतलाया गया है। इसी प्रकार वायव्य कोण की रक्षाकर्त्री देवी के रूप में भद्रकाली का उल्लेख मिलता है। मध्यकाल में तन्त्र के प्रभाव से काशी में अनेक काली-मन्दिरों का निर्माण हुआ। १६वीं शताब्दी में यशोर (वर्तमान बांग्लादेश) के राजा प्रतापादित्य द्वारा काशी में चौसट्ठी घाट को पक्का कराने व देवी भद्रकाली का मन्दिर बनवाने का उल्लेख सत्यचरन शास्त्री द्वारा रचित ग्रन्थ 'प्रतापादित्येर जीवन चरित' में हुआ है। राजा प्रतापादित्य द्वारा स्थापित इस मन्दिर को आदि शंकराचार्य जी से जोड़ने का भी प्रयास किया जाता है। मान्यतानुसार शून्यवादी बौद्धों को शास्त्र में परास्त कर आदि शंकराचार्य जी ने सनातन धर्म की पुन: प्रतिष्ठा की। तदनन्तर उनके मन में तमोगुण आ गया। इससे आदि शंकराचर्य जी शक्ति को अविद्या मानकर उनकी अवहेलना करने लगे। एक दिन गंगा-स्नान से वापस आते समय आदि शंकराचार्य चौसट्ठी घाट पर मूर्छित होकर गिर पड़े। तब वहाँ से जा रही एक वृद्धा ने उन्हें जलपान कराया। मूर्छा टूटने के बाद उसी स्थान पर उन्होंने देवी भद्रकाली की साधना की व सिद्धि प्राप्त की। बाद में राजा प्रतापादित्य द्वारा इसी स्थान पर द्विभुजा भद्रकाली की स्थापना की गयी। पास ही स्थित सुमेरू मठ है, जिसकी स्थापना आदि शंकराचार्य द्वारा की गयी है, वहाँ देवी दक्षिणा काली, तारा व षोडशी देवी की प्रतिमा स्थापित है।

इसी क्रम में आगे काशी के परिवर्द्धन में अनन्य योगदान देनेवाली नाटौर (वर्तमान बांग्लादेश) की रानी भवानी का नाम उल्लेखनीय है। सन् १७७० ई. में रानी भवानी द्वारा काशी के बंगाली टोला मुहल्ले में स्थित उनके जय भवानी महल में द्वितीय महाविद्या तारा की स्थापना की गयी। तारा के साथ ही देवी दक्षिणा काली की प्रतिमा भी इस प्रांगण में प्रतिष्ठित है। यहाँ उपासना की विधि तान्त्रिक है। इसी महल में रानी भवानी की पुत्री तारा देवी द्वारा स्थापित कृष्ण मन्दिर तथा स्वयं रानी भवानी द्वारा स्थापित सपरिवार महिषासुरमर्दिनि दुर्गा की धातुप्रतिमा स्थापित है, जहाँ प्रतिवर्ष शारदीय दुर्गोत्सव का आयोजन होता है। इसी प्रांगण में देवी विशालाक्षी और गोपाल मंदिर भी स्थित है। बाद में इसी स्थान के समीप १७८९ ईस्वी में नदिया के राजा कृष्णचन्द्र के गुरु व पुरोहित श्री चन्द्रशेखर शर्मा द्वारा शवशिवा काली मन्दिर की प्रतिष्ठा की गयी। काशी की रक्षा करनेवाली नवशक्तियों में देवी शवारुढ़ा या शववाहिनी का उल्लेख पुराण करते हैं, जिनका स्थान सौभाग्य गौरी के उत्तर में माना गया है। सम्भवत: इसी स्थान की पहचान कर चन्द्रशेखर शर्मा द्वारा देवी की प्रतिष्ठा शवशिवा काली के रूप में की गई। देवी काली की प्रतिमा को शिवलिंग के ऊपर उत्कीर्ण किया गया है। देवी के वाहन के रूप में शव रूपी शिव प्रतिष्ठित हैं। इनके ऊपर महाकाल को लेटे हुए प्रदर्शित किया गया है, जिनके साथ देवी दक्षिणा काली विपरीत रति में संलग्न हैं। देवी के दक्षिण भाग का ऊपरी हाथ अभय व निचला हाथ वरद मुद्रा में है। तथा वाम भाग के ऊपरी हाथ में देवी खड्ग तथा निचले हाथ में नरमुण्ड धारण किये हैं। देवी गले में नरमुण्डों की माला तथा कमर में नर-हस्त धारण किये हुए प्रदर्शित हैं। यह विग्रह पूर्णत: काली तन्त्रोक्त दक्षिण काली के ध्यानानुकूल है। देवी प्रतिमा के पार्श्व में ही महाकाल भैरव की प्रतिमा भी प्रतिष्ठित है। उल्लेखनीय है कि नदिया के राजा कृष्णचन्द्र ने यहाँ देवी को छत्र दान किया था। यहाँ की उपासना-विधि पूर्ण तान्त्रिक है। प्रतिमा के पादपीठ पर बांग्ला लिपि में लेख है –

दश मैत्र शके श्रील चन्द्रशेखर शर्म्मणा।

प्रतिष्ठिता मोक्षदात्री श्रीमद्दक्षिणकालिका।।

यहाँ मैत्र से आशय सत्रह से है। अंक वामगति में लिखित होने के कारण इसका पाठ १७१० शक सम्वत किया गया है। अर्थात् १७१० शक सम्वत में चन्द्रशेखर शर्मा द्वारा मोक्षदात्री दक्षिणा काली की प्रतिमा की प्रतिष्ठा की गयी।

इसके उपरान्त कूचबिहार के राजा नरेन्द्रनारायण सिंह द्वारा १९वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में काशी के सोनारपुरा मुहल्ले में आनन्दमयी व करुणामयी काली मन्दिर की स्थापना की गयी। इनमें आनन्दमयी काली मन्दिर का निर्माण राजा को मिले स्वप्नादेश के अनुसार किया गया था। जहाँ आज यह मन्दिर प्रतिष्ठित है, वहाँ पूर्व में भी देवी काली शिला के रूप में पीपल वृक्ष के नीचे प्रतिष्ठित थीं। इस प्रकार से यह मन्दिर काशी का सबसे प्राचीन दक्षिणा काली मन्दिर माना जाता है। इसी स्थान पर राजा नरेन्द्रनारायण सिंह ने पञ्चमुंडी आसन पर देवी प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई। वस्तुत: शाक्त तन्त्र साधना के अन्तर्गत ही इस आसन का प्रयोग होता है। यहाँ दक्षिणा काली शव रूपी शिव के ऊपर विराजमान हैं। दक्षिण भाग का ऊपरी हाथ अभय व निचला वरद मुद्रा में है तथा वाम भाग के ऊपरी हाथ में खड्ग और निचले हाथ में नरमुण्ड सुशोभित हैं। देवी योगिनी, डाकिनी व बर्बरिनी तथा सियारों से घिरी हुई हैं। इसी मन्दिर के दक्षिण में करुणामयी काली प्रतिष्ठित हैं, जिनकी स्थापना दक्षिणेश्वर की भवतारिणी काली के रूप में की गई है। देवी के साथ डाकिनी तथा योगिनी व देवी प्रतिमा की दाहिनी ओर वीणाधारी शिव की प्रतिमा स्थापित है। इन दोनों मन्दिरों के ऊपर शिखर का निर्माण नहीं हुआ है, जो इनके निजी देवालय होने का सूचक है। इसी प्रांगण में गोपाल मन्दिर व तीन शिव मन्दिर भी प्रतिष्ठित हैं। देवी की पूजा दक्षिणाचार तन्त्र के अनुसार सात्त्विक भाव से होती है। यद्यपि विशेष अवसरों पर मत्स्य भोग एवं मत्स्य बलि देवी को उत्सर्ग करने का विधान है।

काशी के काली मन्दिरों के क्रम में काली मठ का वर्णन करना आवश्यक होगा। मन्दिर में दक्षिणा काली की प्रतिमा स्थापित है। यह मन्दिर विंध्याचल के कौल मत से सम्बन्धित है, किन्तु देवी की पूजा सात्त्विक भाव से ही होती है। ऐसी मान्यता है कि देवी का मूल मन्दिर वर्तमान मन्दिर के नीचे स्थित गुफा में है, जहाँ गुरु परम्परा से दीक्षित व्यक्ति ही प्रवेश पाने का अधिकारी है।

इसी क्रम में काशीराज प्रभुनारायण सिंह की माता द्वारा गोदौलिया क्षेत्र में काली मन्दिर की स्थापना की गयी। मन्दिर के समीप ही काशी खंडोक्त गौतमेश्वर शिव का मन्दिर प्रतिष्ठित है। यह मन्दिर अपनी निर्माण शैली व कलात्मक भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। मन्दिर के गर्भगृह में दक्षिणा काली की प्रतिमा प्रतिष्ठित है, साथ ही गर्भगृह के मध्य में एक शिवलिंग भी स्थापित है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि शिव नगरी काशी में मध्यकाल से तान्त्रिक उपासना का प्रभाव बढ़ने लगा, जिसका परिणाम तन्त्र की अधिष्ठात्री देवी काली की लोकप्रियता के रूप में हुआ, जिनका दर्शन काशी में स्थापित विभिन्न काली मन्दिरों में होता है। ○○○

कविता

नन्हें दीप की कामना ...

आनन्द तिवारी पौराणिक, महासमुँद

मैं एक नन्हा दीप, जलकर बाटूँगा उजियारा ।
बस यही कामना है मेरी, आलोकित हो जग सारा ।।
तेज हवाएँ चल रहीं निरन्तर ।
दसों दिशाएँ काँप रहीं थर-थर।
आँधी, वर्षा, बाधाओं से, मैं क्यों घबराऊँ?
क्यों न जग-हित में जलकर, जीवन धन्य बनाऊँ?
जीत उसी की ही होती, जो न हिम्मत हारा ।
बस यही कामना है मेरी, आलोकित हो जग सारा ।।

माना, मेरी शक्ति बहुत है सीमित।
पर जब साथ जलेंगे, दीप अपरिमित ।।
तब जग में तम, रंचमात्र न रह पाएगा।
तमसो मा ज्योतिर्गमय का ध्येय पूर्ण हो जाएगा।
जीव जगत सब सुखी रहे, प्रेम, शान्ति, बहे इस धारा।
बस यही कामना है मेरी, आलोकित हो जग सारा ।।

गीतातत्त्व-चिन्तन

चौदहवाँ अध्याय (१४/३)

स्वामी आत्मानन्द

(ब्रह्मलीन स्वामी आत्मानन्द जी महाराज रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर के संस्थापक सचिव थे। उनका 'गीतातत्त्व-चिन्तन' भाग-१ और २, अध्याय १ से ६वें तक पुस्तकाकार प्रकाशित हो चुका है और लोकप्रिय है। ८वाँ अध्याय 'विवेक ज्योति' के सितम्बर, २०१६ से नवम्बर, २०१७ अंक तक प्रकाशित हुआ था। अब प्रस्तुत है १४वाँ अध्याय, जिसका सम्पादन ब्रह्मलीन स्वामी निखिलात्मानन्द जी ने किया है। – सं.)

भौतिक ज्ञान और आत्मज्ञान के उद्देश्य अलग

तीन गुणों से परे वह परमात्मा होता है। या फिर तेरहवें अध्याय में शरीर को क्षेत्र कहा। शरीर खेत और इस शरीर में खेती करनेवाला चैतन्य क्षेत्रज्ञ है। इन दोनों को जो जानता है, वह परमात्मा है। तरह-तरह से हम जो ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह अनुभूति नहीं है। अभी तो हमारा ज्ञान सैद्धान्तिक है। तोते की तरह। जैसा तोते को रटा दें, राम-राम कहेगा, सीताराम कहेगा, राधे-श्याम कहेगा। श्रीरामकृष्ण कहते हैं बिल्ली जब झपटती है तब टें-टें करता है। राम नाम कहना भूल जाता है। हमारी दशा भी ऐसी ही होती है। हम बहुत ज्ञान अर्जित तो कर लेते हैं, गीता पढ़ लेते हैं, भागवत पढ़ लेते हैं, रामायण पढ़ लेते हैं। पर जिस समय हमारे जीवन में विपदाओं की बिल्ली झपटती है, तो हम ये सब भूल जाते हैं। हमारा अपना स्वरूप ही उस समय उजागर होता है। तो यहाँ पर यह कहा जा रहा है कि देख अर्जुन, उस ज्ञान को मैं तुझे प्रदान करूँगा। जैसे बर्टेण्ड रसेल तो जड़वादी थे, नास्तिक थे, ईश्वर में विश्वास नहीं करते थे, पर बड़े मानवतावादी थे। उनका चिन्तन भी किसी उपनिषद् के ऋषि तुल्य ही लगता है। उनकी शान्ति के लिए पहल रही। इसके लिए वे जेल में भी गए। अण्वस्त्रों को जला दो, यह नारा दिया था। वे परम मानवतावादी थे। उनकी एक किताब है ''द इम्पैक्ट ऑफ साइन्स ऑन सोसायटी'' (The impact of Science on society), इसमें उन्होंने knowledge और Wisdom इन दो शब्दों का प्रयोग किया है। वे कहते हैं कि हमारे जीवन में knowledge बहुत बढ़ा है। knowledge का क्या अर्थ है? हमारे विज्ञान जो जानकारी दे रहा है। कहते हैं कि knowledge तो बहुत बढ़ा है। पर जब तक उसी अनुपात में Wisdom न बढ़े, तब तक knowledge का बढ़ना केवल दुःखों का बढ़ना है। यह तो बहुत सही बात है। हमारे जीवन में knowledge बढ़ते जा रहे हैं और दुःख भी बढ़ते जा रहे हैं। जितना ज्ञान का क्षेत्र बढ़ा है, उतना ही दुःख का क्षेत्र भी बढ़ा है। इसका कारण क्या है? कारण यह है कि knowledge के साथ Wisdom नहीं बढ़ रहा है। यहाँ knowledge है ज्ञानानाम्, पर ज्ञानानां ज्ञानं – ज्ञान का भी ज्ञान, उत्तम ज्ञान Wisdom नहीं बढ़ा। किसी ने बर्टेण्ड रसेल से कहा कि आपने knowledge को तो समझा दिया, पर Wisdom को आपने नहीं समझाया। हम कैसे समझें कि Wisdom क्या है? आपकी परिभाषा क्या है? तब वे परिभाषा देते हैं The essence of Wisdom consists in emancipation as far as possible from the tyranny of the here and now. यह बड़ी दार्शनिक परिभाषा है। एक नास्तिक, ईश्वर में अविश्वास करनेवाला, एक जड़वादी चिन्तक कैसी अपूर्व परिभाषा देता है। क्या कहते हैं? देश और काल का जो अत्याचार मनुष्य पर हो रहा है, उस अत्याचार से यथाशक्ति छुटकारा पाने में Wisdom का सार निहित है। अब आप पूछ सकते हैं कि कैसे छुटकारा

पाया जाए? इसका उपाय विज्ञान के पास नहीं है। बर्टेण्ड रसेल से भी यदि पूछा जाए कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए, तो वे भी बता नहीं पाएँगे। इसीलिए हमको शास्त्रों की शरण लेनी पड़ती है। इसका उपाय ऋषियों की वाणी में है।

मनुष्यों का हृदय-परिवर्तन आत्मज्ञान द्वारा ही सम्भव

जब दूसरा महायुद्ध हुआ, तो आइन्स्टीन बहुत दु:खी थे। अमेरिका ने अणु बम के द्वारा जापान पर जो आक्रमण किया था, उसका बड़ा भयंकर परिणाम हुआ था। उन्होंने जिस समीकरण की खोज की थी, अन्य वैज्ञानिकों ने उसका दुरुपयोग कर अणु बम का निर्माण किया, जिसका इतना भयंकर विनाश हुआ। उन्होंने जो समीकरण खोज निकाला था, उसके दुरुपयोग से यह स्थिति उत्पन्न हुई थी, उससे आइन्स्टीन बड़े दु:खी हुए थे। किसी पत्रकार ने दूसरे महायुद्ध के बाद आइन्स्टीन से भेंट कर कतिपय प्रश्न पूछे थे। उनमें से एक-दो प्रश्नोत्तर को उदाहरण के लिए देखें। पत्रकार ने आणविक बमों की भीषणता विषयक प्रश्न पूछते हुए पूछा कि महाशय, देख लीजिए, यह दूसरा महायुद्ध कितना विकराल हो गया। कितने लोग हताहत हुए। अच्छा, क्या आप बता सकते हैं कि यदि तीसरा महायुद्ध हुआ, तो वह कितना भीषण होगा? आइन्स्टीन ने कुछ रूककर कहा कि तीसरा युद्ध कितना विकराल होगा, इसकी तो मैं कल्पना नहीं कर पा रहा हूँ। पर यदि चौथा महायुद्ध हुआ, तो लोग लकड़ी और पत्थरों से लड़ेंगे। इसका मतलब तीसरे महायुद्ध में सारी संस्कृति समाप्त ही हो जाएगी। सारी सभ्यता चौपट हो जाएगी। सब कुछ नष्ट हो जाएगा। इतना भयानक तीसरा महायुद्ध होगा कि वह एकदम प्राचीन अवस्था में मनुष्य पहुँच जाएगा। पहले जैसे पत्थरों से लड़ता था, लकड़ियों से लड़ता था। फिर वैसी ही लड़ाई करेगा। फिर एक प्रश्न उसमें यह भी था। फिर आप इस नाश से बचने का तरीका कैसा देखते हैं? तब आइन्स्टीन ने बहुत ही दु:खित होकर कहा था कि – Science can de-nature Plutonium, but it cannot de-nature Evil that is in the heart of man. अर्थात् विज्ञान प्लूटोनियम को तोड़कर उसके स्वभाव को बदल सकता है। पर विज्ञान में यह क्षमता नहीं है कि जो अशुभ मनुष्य के हृदय में है, उसको वह बदल दे। यह क्षमता विज्ञान की नहीं है। आइन्स्टीन धर्म की बात कहते हैं। वे कहते हैं कि यह धर्म और अध्यात्म के मार्ग से ही साधित हो सकता है। जब मनुष्य की बुद्धि में अशुभ प्रवेश कर जाएगा, तो संसार नष्टप्राय हो जाएगा। इसकी दवा विज्ञान के पास नहीं है। यह दवा अध्यात्म के पास अवश्य है।

यहाँ पर भगवान कृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं, मैं तुझे उस परम ज्ञान के बारे में बताता हूँ, जिसे मैंने पहले भी बताया था। ज्ञान का संस्कार जल्दी से पैदा नहीं होता। वह स्थायी नहीं होता है। उसे बार-बार बताने से उसका घर्षण तुझमें होता रहे और फिर उसके संस्कार तुझमें जम जाएँ। फिर प्रभु दूसरे श्लोक में कहते हैं –

आत्मज्ञान द्वारा ही ईश्वर के स्वरूप की प्राप्ति

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च।।२।।

– इदम् ज्ञानम् उपाश्रित्य (इस ज्ञान को धारण करके) मम साधर्म्यम् आगता: (मेरे स्वरूप को प्राप्त पुरुष) सर्गे न उपजायन्ते (सृष्टि के आदि में उत्पन्न नहीं होते) च प्रलये अपि न व्यथन्ति (और प्रलयकाल में भी पीड़ित नहीं होते)।

''इस ज्ञान को धारण करके मेरे स्वरूप को प्राप्त पुरुष सृष्टि के आदि में उत्पन्न नहीं होते और प्रलयकाल में भी पीड़ित नहीं होते।''

इस परम ज्ञान को धारण करके, उसकी शरण में जाकर, उसका आश्रय लेकर, मेरा धर्म उन्हें प्राप्त हुआ है। वे मेरे समान ही धर्मी हो गये हैं। जब सृष्टि शुरू होती है, उसके साथ वे शुरू नहीं होते। उनका फिर से जन्म नहीं होता। **प्रलये न व्यथन्ति च** – और प्रलय में सब नीचता को प्राप्त होते हैं। उनको नीचता को प्राप्त होने का दु:ख नहीं होता। और फिर से पैदा होने का दु:ख भी नहीं होता। जब नया कल्प शुरू हो रहा है। परन्तु जब ऐसा ज्ञान व्यक्ति को मिल जाता है, उसका पुन: जन्म ही नहीं होता। और फिर से पैदा नहीं होता अर्थात् उसकी मृत्यु ही नहीं होती। उसे फिर प्रलय की पीड़ा नहीं सताती। यह प्रभु यहाँ पर कहते हैं। यहाँ साधर्म्य का क्या अर्थ है? ईश्वर का धर्म है निर्गुण-निराकार। सगुण-साकार के माध्यम से हम निर्गुण-निराकार में पहुँचते हैं। उस ज्ञान के बल पर मेरे साधर्म्य को साधक प्राप्त हो जाता है। वह मेरे स्वरूप को प्राप्त हो जाएगा। अर्थात् हम प्रभु के नित्यस्वरूप में मिल गये। निर्गुण-निराकार स्वरूप को प्राप्त हो गये। अर्थात् जीवात्मा परमात्मा जाकर मिल गया। परमात्मा का धर्म जीवात्मा को प्राप्त हो गया। उस ज्ञान

के कारण जीवात्मा को परमात्मा का स्वरूप प्राप्त हो गया। तो जीवात्मा का सारा अज्ञान निकल गया। माया-मोह का परदा नष्ट हो गया। जिस मोह के कारण जीवात्मा अपने को अलग मानता था, वह प्रभु के धर्म को प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाता है। फिर तीसरे श्लोक में कहते हैं –

प्रकृति की चेतनता ब्रह्म प्रदत्ता

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन् गर्भं दधाम्यहम्।
सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत।।३।।

भारत (हे अर्जुन!) मम महत् ब्रह्म योनिः (मेरी मूल प्रकृति योनि है) अहम् तस्मिन् गर्भम् दधामि (मैं उसमें गर्भ स्थापन करता हूँ) ततः सर्वभूतानाम् सम्भवः भवति (उससे सब प्राणियों की उत्पत्ति होती है)।

– ''हे अर्जुन! मेरी मूल प्रकृति योनि है। मैं उसमें गर्भ स्थापन करता हूँ। उससे सब प्राणियों की उत्पत्ति होती है।''

प्रभु बताते हैं कि कैसे यह संसार उत्पन्न होता है? सांख्य में इसको महत् कहा गया है और वेदान्त में इसे ही महत् ब्रह्म कहा गया है। प्रथमतः जहाँ पर तीनों गुण साम्यावस्था में होते हैं, सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण जब शान्त रहते हैं, साम्यावस्था में रहते हैं, तो प्रलय होता है। इसमें सब अपने कारण में लीन होकर रहते हैं और तीनों गुण बिल्कुल सन्तुलित होकर रहते हैं। इसी को प्रधान या प्रकृति कहते हैं। प्रकृति की ऐसी साम्यावस्था की तुलना हम अपनी गाढ़ी निद्रा से कर सकते हैं। मानो हम प्रलय में चले गये। इसे ही सुषुप्ति की अवस्था कहते हैं। तो हमारे मानस-सागर में कोई तरंग नहीं रहती। इस अवस्था में कल्पना कीजिए उस गाढ़ी नींद की जिससे हम पुनः उठते हैं तो कहते हैं कि भाई, हम तो बड़े सुख की नींद सोये थे। मानो उस अवस्था में जरा भी तरंग नहीं होती। जिस प्रकार सुषुप्ति की अवस्था अपने जीवन में प्रायः रोज ही आती है, उसी प्रकार प्रलय की कल्पना कीजिए। जब प्रलय होता है, तब सारा विश्व मानो एक सुषुप्ति की अवस्था में चला गया। जब हम गाढ़ी नींद में थे, तब सारी दुनिया हमारे लिए मर ही गयी थी। उसी की तुलना प्रलय से कीजिए। प्रभु कहते हैं कि वह प्रकृति मानो मेरी नारी है जिसमें – **तस्मिन् गर्भं दधाम्यहम्** – मैं गर्भ देता हूँ। प्रकृति के भीतर मैं चैतन्य का बीज देता हूँ। प्रकृति की कल्पना एक नारी के रूप में की गई है और ब्रह्म की कल्पना, ईश्वर की कल्पना एक पुरुष के रूप में कह रहे हैं। उस प्रकृति के गर्भ में मैं वीर्य का सिंचन करता हूँ। मैं उसमें गर्भ डालता हूँ। यह वीर्य है चैतन्य का। मैं चैतन्य को उसके भीतर में सिंचित करता हूँ। जब वह चैतन्य उस प्रकृति के गर्भ में सिंचित हो जाता है, तो क्या होता है? **सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत** – प्रकृति की साम्यावस्था बिगड़ जाती है। उसमें विकृति आ जाती है और भिन्न-भिन्न वस्तुओं का जन्म होता है। इस प्रकार संसार में सामान्य उत्पादन की प्रक्रिया के माध्यम से सृष्टि की प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया गया है। यहाँ प्रभु कहते हैं कि महद् योनि मेरी प्रकृति है, जिसमें बीजारोपण के फलस्वरूप यह जीव-जगत् उत्पन्न होता है। उसी से जड़ और चेतन दोनों ही निकलते हैं, क्योंकि जड़ और चैतन्य मिला हुआ है। जो प्रकृति का अंश है, वह जड़ात्मक है। उसी प्रकार चैतन्य नामक परा प्रकृति भी होती है। पत्थर का ढेला है, वह जड़ प्रतीत होता है। घास चैतन्यात्मक प्रतीत होती है। प्रभु अगले श्लोक में कहते हैं –

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता।।४।।

कौन्तेय (हे अर्जुन!) सर्वयोनिषु याः मूर्तयः सम्भवन्ति (सभी योनियों में जितने प्राणी उत्पन्न होते हैं) महत् ब्रह्म तासाम् योनिः (प्रकृति उनकी गर्भधारिणी माता है) अहम् बीजप्रदः पिता (और मैं बीज डालने वाला पिता हूँ)।

– ''हे अर्जुन! सभी योनियों में जितने प्राणी उत्पन्न होते हैं, प्रकृति उनकी गर्भधारिणी माता है और मैं बीज डालने वाला पिता हूँ।''

यहाँ सब योनियों का क्या अर्थ है? जैसे पक्षी एक योनि है। वनस्पति एक योनि है। प्रभु कहते हैं कि जगत् में जितने भी रूप या मूर्तियाँ विद्यमान हैं, वे कैसे प्रकृत होती हैं? मेरे बीजारोपण करने के फलस्वरूप ही। मैं ही बीज डालनेवाला पिता हूँ और यह प्रकृति उनकी माता है। यह माया मेरे नियन्त्रण में रहकर कार्य करती है। वह क्या है? तासां ब्रह्म महद्योनिः – वह योनि है, जिससे सभी प्रकट हुए हैं और मैं बीज डालनेवाला उन सब प्रकट वस्तुओं का पिता हूँ। इसके बाद अब गुणों की बात प्रारम्भ हुई है।

(क्रमशः)

स्वामी विवेकानन्द और नारी-सम्मान

ऐश्वर्य पुरोहित, रायपुर

भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में हम जब भी चिन्तन करते हैं, तो वह एकांगी नहीं होता। भारतीय चिन्तन धारा के आदिकाल से ही नर और नारी, दोनों ही उसके मुख्य केन्द्र में रहे हैं। यद्यपि सामाजिक व्यवस्थाओं और आवश्यकताओं के अनुरूप उनकी भूमिका का धरातल भले ही भिन्न रहा हो, पर दोनों में से किसी को किसी भी दृष्टि से कमतर नहीं माना गया है। आज भौतिक प्रगति और सुख-सुविधाओं के नित नये आयामों के बीच नर और नारी को एक साथ कदमताल करते देखकर हम मुग्ध अवश्य हो सकते हैं, पर उसके साथ ही हमें यह भी सोचना होगा कि जो कुछ अर्जित करके हम आज मुग्ध हैं, वह क्या पर्याप्त है? क्या यही हमारे सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन मूल्यों की अवधारणा का अभीष्ट है?

भारतवर्ष आज जब अपने कालजयी महामानव और समाजोत्थान, सामाजिक समरसता के साथ दरिद्र सेवा-नारायण सेवा के मन्त्रदाता स्वामी विवेकानन्द जी की १६२वीं जयन्ती मना रहा है, तब भारतीय समाज की दशा और दिशा का चिन्तन, विशेषकर नारी समाज के सम्मान को केन्द्र में रखकर करना प्रासंगिक और समीचीन होगा।

भारतीय सामाजिक चिन्तन के केन्द्र में नारी का प्रमुख स्थान होने का अपना विशिष्ट कारण भी रहा है। परिवार के गठन और समाज में संस्कृति व चरित्र के दृढ़ मूल्यांकन में नारी की अहम् भूमिका एक शाश्वत सत्य है। १८ जनवरी, १९०० ई. को पॅसाडेना, कैलिफोर्निया के शेक्सपियर क्लब हाऊस में 'भारतीय नारी' विषय पर दिये एक भाषण में स्वामीजी ने कहा था – ''भारत में स्त्री-जीवन के आदर्श का आरम्भ और अन्त मातृत्व में ही होता है। प्रत्येक हिन्दू के मन में 'स्त्री' शब्द के उच्चारण से मातृत्व का स्मरण हो आता है, और हमारे यहाँ ईश्वर को माँ कहा जाता है।''[१] आगे इन्होंने कहा है, ''स्त्री संज्ञा केवल भौतिक शरीर मात्र को ही दी जाने के लिये है? नहीं, नहीं, देवि ! मांसलता से सम्बद्ध किसी भी वस्तु से तुम्हें संलग्न नहीं किया जायेगा। तुम्हारा नाम तो सदा ही पवित्रता का प्रतीक रहा है। विश्व में 'माँ' नाम से अधिक पवित्र और निर्मल दूसरा कौन-सा नाम है, जिसके पास वासना कभी फटक भी नहीं सकती? यही भारत का आदर्श है।''[३] इस भाषण में स्वामी विवेकानन्द ने पत्नी, कन्या, भगिनी आदि नारीत्व के अन्य आदर्शों को व्यक्त करने के साथ ही मातृत्व के आदर्श के साथ इनकी अपूर्व तुलना भी की है।

दिसम्बर, १८९८ में प्रबुद्ध भारत के एक विशेष संवाददाता से हुई चर्चा में स्वामीजी ने कहा था, ''विगत कई सदियों में भारत की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति ऐसी थी कि स्त्रियों को विशेष संरक्षण की आवश्यकता थी। भारतीय स्त्री की दशा का मूल कारण देश की उपर्युक्त परिस्थिति ही है।''[३] इसके अतिरिक्त भी स्वामीजी के अनेक वक्तव्य ऐसे हैं, जिनमें नारीत्व के आदर्श के सर्वोच्च रूप को उन्होंने अभिव्यक्त किया है।

आज भारतवर्ष की परिस्थितियाँ स्वामी विवेकानन्द के काल से बेहतर हैं। आज हम एक भव्य लोकतान्त्रिक गणराज्य के नागरिक हैं, किन्तु फिर भी नारियों के प्रति सम्मान में तीव्र ह्रास हो रहा है। हम जयशंकर प्रसाद जी की यह उक्ति भूल रहे हैं कि 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो।'[४] उन्होंने जब यह लिखा, तो वे केवल एक भावुक कवि की भावाभिव्यक्ति नहीं थीं, वरन् वह उस सुस्थापित सत्य की सहज स्वीकृति थी, जो हमारी सांस्कृतिक और सामाजिक अवधारणा को पुष्ट करता है, जिसमें नारी को श्रद्धा तथा नर को विश्वास का प्रतीक माना गया है।

आज हमें आवश्यकता है कि हम स्वामी विवेकानन्द के बताये अनुसार नारीत्व के आदर्शों की स्थापना प्रत्येक भारतीय के हृदय में करें, जिससे हम नारी के प्रति वर्तमान भोगवादी दृष्टिकोण की कारा, जिसने नारी के पावित्र्य और सम्मान को बंदी बना रखा है, को तोड़कर विश्व समाज को नयी दिशा दिखा सकें। ○○○

सन्दर्भ ग्रन्थ : १. विवेकानन्द साहित्य, अद्वैत आश्रम, खण्ड १, पृष्ठ ३०६-३२५ **२.** वही, भारतीय नारियाँ - उनका भूत, वर्तमान और भविष्य, खण्ड ४, पृष्ठ २६५-२६९ **३.** वही, खण्ड १, ४, ५ में संकलित हैं **४.** 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद लज्जा सर्ग

कटारमल सूर्य मन्दिर, कोसी, अलमोड़ा

मोहन सिंह मनराल, अलमोड़ा

अलमोड़ा नगर से २० किमी की दूरी पर कोसी नदी के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित कटारमल का प्राचीन सूर्य मन्दिर आज भी अपने सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्त्व के कारण देश-विदेश के पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। यह मन्दिर-समूह भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा संरक्षित है। इसे उड़िसा के कोणार्क मन्दिर के बाद दूसरा प्रमुख सूर्य मन्दिर माना जाता है ।

हर वर्ष पौष माह के अन्तिम रविवार को सूर्य पर्व पर यहाँ अनेक धार्मिक अनुष्ठान होते हैं। भगवान सूर्य के साथ नौ ग्रहों की पूजा की जाती है। इस अवसर पर भण्डारे में बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्र होते हैं और प्रसाद ग्रहण करते हैं। मन्दिर के गर्भगृह में भगवान बड़ादित्य की मूर्ति को प्रात: की प्रथम सूर्य-किरण स्पर्श करती है। मन्दिर से लगा कटारमल गाँव है और मन्दिर तक जाने के लिए सड़क मार्ग की सुविधा है ।

इस मन्दिर के प्राचीन इतिहास के बारे में मानस खण्ड में उल्लेख मिलता है, जिसका वर्णन डॉ. मोहन चन्द्र तिवारी ने अपनी पुस्तक 'दुनागिरी माहात्म्य' के पृष्ठ २६,२७ पर इन शब्दों में किया है – ''मानस खण्ड में कालनेमि राक्षस के बारे में उल्लेख मिलता है कि सतयुग में इस धर्मद्वेषी असुर ने हिमालय पर्वत के ऋषि-मुनियों पर अनेक अत्याचार किये थे। वह ऋषियों के आश्रमों को उजाड़कर यज्ञ सामग्री आदि स्वयं भक्षण कर जाता था। इसके भय से त्रस्त होकर द्रोणगिरी, काषाय पर्वत तथा कञ्जार पर्वत के कूर्माञ्चल निवासी ऋषि-मुनियों ने कोशिकी (कोसी) नदी के तट पर एकत्र हो सूर्यदेव की स्तुति की। सूर्यदेव ने प्रसन्न होकर अपने दिव्य तेज को पवित्र वट-शिला में स्थापित कर इस क्षेत्र को कालनेमि के आतंक से मुक्त कर दिया। यह वट-शिला नामक पौराणिक स्थान आज भी अलमोड़ा के कटारमल नामक स्थान पर बड़ादित्य नामक तीर्थ स्थान के रूप में प्रसद्धि है ।''[१]

मन्दिर की स्थापना – इस प्राचीन सूर्य मंदिर की स्थापना नवीं शताब्दी से तेरहवीं के मध्ययुगीन की मानी जाती है। प्राप्त जानकारी के अनुसार इस मंदिर की स्थापना कत्यूरी शासक कटारमेल देव ने करवाई। इसीलिये यह कटारमल सूर्य मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इस मन्दिर-समूह में छोटे-बड़े ४४ मन्दिर हैं, पर प्रमुख मन्दिर विशाल आकार का है, जिसमें स्थित सूर्य प्रतिमा बारहवीं शताब्दी की है, जो अब दिल्ली संग्रहालय में संरक्षित है ।

मुख्य मन्दिर की संरचना त्रिरथ है, जो वर्गाकार गर्भगृह के साथ नागर शैली के वक्ररेखीय शिखर सहित निर्मित है। मन्दिर-समूह का निर्माण अलग-अलग काल-खण्डों में हुआ है, पर भारतीय पुरातत्त्व के अनुसार इसका निर्माण तेरहवीं शताब्दी बताया गया है। यहाँ स्थित शिलालेख में जो विवरण खुदवाया गया है, उसका सार इस प्रकार है –

बड़ादित्य नाम से प्रसिद्ध यह पूर्वाभिमुख सूर्य मन्दिर कुमाऊँ क्षेत्र के विशालतम एवं ऊँचे मन्दिरों में एक है, जिसका निर्माण सम्भवत: मध्यकालीन कत्यूरी शासक कटारमल द्वारा कराया गया था। गर्भ-गृह का प्रवेश द्वार

उत्कीर्ण काष्ठ द्वारा निर्मित था, जो वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली की दीर्घा में प्रदर्शित है। मन्दिर में सूर्य की प्रतिमा बारहवीं शताब्दी की है। हालाँकी १०वीं शताब्दी की मूर्ति चोरी हो जाने के बाद नक्काशीदार दरवाजे और पैनलों को राष्ट्रीय संग्रहालय में स्थानान्तरित कर दिया गया है।

अलमोड़ा नगर के नामकरण से जुड़ी मान्यता इस सूर्य मन्दिर में होनेवाले धार्मिक अनुष्ठानों को प्रमाणित करती है। कहा जाता है कि इस मन्दिर में बड़े पैमाने पर धार्मिक अनुष्ठान राजाओं द्वारा कराये जाते थे और बर्तनों को साफ करने के लिए खट्टी घास का प्रयोग किया जाता था, जो अलमोड़ा से मँगाई जाती थी। इस बात का उल्लेख बद्रीदत्त पाण्डे जी ने अपनी पुस्तक 'कुमाऊँ का इतिहास' में किया है, जो इस प्रकार है – ''बड़ादित्य नामक कटारमल में सूर्य मन्दिर है। इस मन्दिर के बर्तनों को साफ करने के लिए भिलमोड़ा नामक खट्टा घास, खसियाखोला के पुराने वासिन्दे जिनको अलमोड़िया कहते थे, रोज-रोज कटारमल पहुँचाते थे। अलमोड़ा घास ले जाने से वे अलमोड़िये कहलाये और उनके नाम से इस शहर का नाम अलमोड़ा प्रसिद्ध हुआ।''[२]

अन्य प्राचीन धरोहरों की भाँति कटारमल का सूर्य मन्दिर कुमाऊँ के गौरवशाली इतिहास के उस काल-खण्ड का प्रतीक है, जिसे इतिहास का स्वर्णयुग कहा जाता है। कुमाऊँ के इतिहास के स्वर्णयुग 'कत्यूरी साम्राज्य', जो लगभग ८०० वर्षों तक यहाँ स्थापित रहा, के प्रति जनमानस की असीम श्रद्धा व विश्वास ने ही राजाओं को इन महान सांस्कृतिक धरोहरों के निर्माण की प्रेरणा दी।

सूर्य को आदिदेव कहा जाता है। क्योंकि उसके बिना सृष्टि का अस्तित्व रह नहीं सकता। सूर्यदेव हर दृष्टि से वन्दनीय हैं। वे जीवन के सृजक व पोषक हैं। आइये, उनकी वन्दना में नतमस्तक हो जायें –

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते।। ○○○

सन्दर्भ ग्रन्थ – १. मानसखण्ड ३८, २-३ **२.** कुमाऊँ का इतिहास - बद्रीदत्त पाण्डेय पृ. ८४

पृष्ठ ४६१ का शेष भाग

किया जा सकता है, जो भारतीय संस्कृति और परम्परा के बारे में पढ़ाते हैं। रामलीला, रामायण और पारम्परिक भारतीय थिएटर पर कार्यशालाएँ आयोजित की जा सकती हैं।

रामलीला के कलाकारों को उचित सम्मान और साथ ही साथ उचित धन-राशि भी उपलब्ध करवाना चाहिए, जिससे अभी उभर रहे नये कलाकार भी इस क्षेत्र में रुचि लेकर कार्य कर सकें।

अन्त में हम उस मूल प्रश्न पर आते हैं कि दशहरा और रामलीला का क्या सम्बन्ध है? आप देखेंगे कि जिस प्रकार माँ दुर्गा राक्षस महिषासुर का वध करके असत्य पर सत्य की विजय का प्रमाण देती हैं, ठीक उसी प्रकार रामलीला के दृश्य में भी अन्तिम दिन विजयदशमी को श्रीराम, रावण और वैसे बहुत से असुर राक्षसों का वध कर असत्य पर सत्य की जीत को प्रमाणित करते हैं। इसके द्वारा समाज में यह संदेश जाता है कि बुराई कितनी भी बड़ी क्यों न हो जाए, अच्छाई से उसे हारना ही पड़ता है, असत्य कितना भी बढ़ जाए, अन्त में सत्य की ही जीत होती है, अधर्म समाज में कितना भी फैल जाए, परन्तु अन्त में धर्म उसका विनाश अवश्य करता है। राम धर्म का ही स्वरूप हैं और भारत की आत्मा धर्म ही है, इसलिए यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति रामलीला से जुड़ा हुआ है। ○○○

सन्दर्भ ग्रन्थ – १. महर्षि वाल्मीकि प्रणीत श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण सचित्र, हिन्दी अनुवाद सहित, प्रथम खण्ड, सत्तानवाँ पुनर्मुद्रण, गीता प्रेस गोरखपुर **२.** https://punyabhumibharat.-wordpress.-com /2019/04/14 रामो-विग्रहवान-धर्मः/ **3.** https://belurmath.org/swami-vivekananda-speecheds-at-the-parliament-of-religions-chicago-1893/ 4. https://ich.unesco.org/en/RL/ramlila-the-traditional-performance-of-the-ramayana-00110

साधुओं के पावन प्रसंग (८१)

स्वामी अशेषानन्द

स्वामी चेतनानन्द

(स्वामी चेतनानन्द जी महाराज से रामकृष्ण संघ के भक्त भलीभाँति परिचित हैं। वर्तमान में महाराज वेदान्त सोसायटी, सेंट लुइस के मिनिस्टर-इन-चार्ज हैं। उन्होंने श्रीरामकृष्ण, श्रीमाँ सारदा, स्वामी विवेकानन्द और वेदान्त पर अनेक पुस्तकें लिखी और अनुवाद की हैं। प्रस्तुत पुस्तक में रामकृष्ण संघ के महान त्यागी संन्यासियों के संस्मरण हैं, जिनके सम्पर्क में लेखक स्वयं आए थे। 'विवेक ज्योति' के पाठकों हेतु मूल बंगला से इसका हिन्दी अनुवाद स्वामी पद्माक्षानन्द ने किया है, जिसे धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है। – सं.)

भाग- २

स्वामी अशेषानन्द जी महाराज (किरण महाराज) रामकृष्ण संघ के एक विख्यात संन्यासी थे। उन्होंने स्वामी सारदानन्द जी महाराज के सेवक तथा सचिव के रूप में कार्य किया था। अशेषानन्दजी ने १९२१ से १९२७ तक उद्बोधन तथा वाराणसी में अपना जीवन व्यतीत किया था। उस समय उन्होंने अपनी दैनन्दिनी में स्वामी सारदानन्द जी, योगिन-माँ, गोलाप-माँ तथा अन्य संन्यासियों से सुनकर बहुत संस्मरण लिखकर रखा था। समय-सापेक्ष वह दैनन्दिनी जर्जर तथा पुरानी हो गयी थी। १९७३ ई. में पोर्टलैण्ड में उन्होंने वह दैनन्दिनी मुझे दी। जब वे १९८४ ई. में सेंट लुइस में आये, तो उन्होंने इस दैनन्दिनी का वृत्तान्त मुझे बताया। बहुत परिश्रम के पश्चात् मैंने उस दैनन्दिनी के महत्त्वपूर्ण भाग का संकलन किया। आवश्यकतानुसार कहीं-कहीं स्पष्टीकरण के लिए कुछ अंश को जोड़ दिया गया है। पुराने दिनों की बातें जिससे संरक्षित हों, उसके लिए यह एक प्रयास है। क्योंकि यह सब हमारे संघ के इतिहास का एक भाग है। निम्नलिखित संस्मरण स्वामी अशेषानन्द जी महाराज की दैनन्दिनी से लिया गया है।

स्वामी योगानन्द के विषय में

"स्वामी सारदानन्द ने कहा, 'स्वामी योगानन्द महाराज ने वृन्दावन में बहुत ही तपस्यामय जीवन बिताया था। कभी-कभी वे भोजन नहीं करते थे या कभी-कभी एक या दो रोटी खाते थे। अपने शरीर की किसी प्रकार की चिन्ता किए बिना पूरा दिन ईश्वर के ध्यान-चिन्तन में समय व्यतीत करते थे। यह सब देखकर योगीन-माँ ने एक बार श्रीमाँ सारदा देवी से कहा था, "अपनी आँखों के सामने यह देखना सहन नहीं हो रहा है। या तो वह मठ चला जाये, नहीं तो अपने घर जाये।' योगेन महाराज को जब यह बात मालूम हुई, तब उन्होंने गोलाप-माँ से कहा, "योगीन-माँ ने श्रीमाँ से यह सब क्यों बताया? क्या मैंने उनके साथ कुछ अनुचित किया है? उनकी समस्या क्या है?'

स्वामी अशेषानन्द जी (किरण महाराज)

'श्रीमाँ की सेवा ही योगेन महाराज का मुख्य लक्ष्य था। जब श्रीमाँ नीलाम्बर बाबू के उद्यान, बेलूड़ में निवास कर रही थीं, तब योगेन महाराज अपने कन्धे पर श्रीमाँ के लिए सामान ढोकर लाया करते थे। एक दिन श्रीमाँ ने छत पर से यह देखा और कहा, 'यह सब सामान ढो-ढोकर योगेन ने अपनी पीठ तोड़ ली है। इसको देखकर मुझे खाने की इच्छा ही नहीं होती है।'

'जब हमलोगों ने नीलाम्बर बाबू के उद्यान में कुछ दिन के लिए निवास किया था, तब हमलोग भी श्रीमाँ के लिए सामान खरीदकर लाया करते थे। ओह! क्या ही आन्तरिकता से योगेन महाराज श्रीमाँ की सेवा करते थे! "भक्त होना, किन्तु मूर्ख नहीं होना" ठाकुर के इस उपदेश का उन्होंने अपने जीवन में पालन किया था। श्रीमाँ तीर्थयात्रा के लिए जायेंगी, इसीलिए योगेन महाराज ने दो या तीन सौ रुपए बैंक में जमा करके रखा था। श्रीमाँ ने योगेन महाराज की धर्मपत्नी को उनके शरीर-त्याग के पूर्व उनकी सेवा के लिए बुलवाया था। उनकी धर्मपत्नी अपने भाई के परामर्श से वे रुपए बैंक से निकालकर ले गयीं। इस घटना के बावजूद भी श्रीमाँ का उनके ऊपर प्रेम तथा स्नेह पूर्ववत् बना रहा।

'स्वामी योगानन्द ने श्रीमाँ सारदा से कहा था, "माँ, श्रीरामकृष्ण ने कुछ युवकों को तैयार किया है; आपको कुछ युवतियों को तैयार करना होगा।" हालाँकि उनकी पत्नी ने

श्रीमाँ से झूठ बोला कि मेरे पिताजी का शरीर अस्वस्थ है और पैसा लेकर मायके चली गयीं। परवर्तीकाल में उनके भाई ने उनसे उनका सारा रुपया-पैसा और गहने-आभूषण ले लिए थे और उनको बहुत कष्ट भोगना पड़ा था।

स्वामी योगानन्द जी महाराज

'योगानन्द महाराज ने यह भी कहा था, ''श्रीमाँ को भविष्य में कष्टपूर्ण दिन काटने पड़ेंगे।'' वही हुआ। तब राधू का जन्म नहीं हुआ था।

'श्रीरामकृष्ण ने योगानन्द के शरीर को स्पर्श किया था तथा उसी स्पर्शशक्ति से वे कामजयी हुये थे। ऐसे विरले ही मनुष्य देखने में आते हैं, जिनका अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण होता है। हमारे साथ एक ही घर में रहते समय या श्रीमाँ के साथ लम्बे समय तक रहते हुए भी वे बहुत ही कम बातें किया करते थे। योगानन्द श्रीमाँ सारदा के प्रथम और प्रधान शिष्य थे। श्रीरामकृष्ण ने श्रीमाँ को तीन-चार बार दर्शन देकर योगानन्द को दीक्षा देने के लिए कहा, तब कहीं श्रीमाँ ने उनको दीक्षा दीं।

''गोलाप-माँ ने कहा, ''घुसुड़ी के जिस मकान में श्रीमाँ ठहरी थीं, उसका किराया प्रतिमाह छह रुपया था। नीलाम्बर बाबू का उद्यान भवन, बेलूड़ के मकान का किराया पचास रुपया प्रति महीना था। वृन्दावन में बलराम बोस ने श्रीमाँ की बहुत सेवा की थी। एक बार जब योगानन्द और सारदानन्द नाव से नीलाम्बर बाबू के उद्यान आ रहे थे, तब नाव एक जहाज से टकरा गई। श्रीमाँ ने उद्यान के छत से इस घटना को देखा और अनवरत श्रीरामकृष्ण से प्रार्थना करती रहीं। इस घटना के बावजूद भी योगानन्द महाराज ने घी का डिब्बा, जो श्रीमाँ के लिए ले आ रहे थे, उसको बहने नहीं दिया। वे उन दिनों वराहनगर से खरीदारी करते थे। योगानन्द महाराज आटा, चावल, दाल तथा तेल का भारी बोझा अपनी पीठ पर रखकर लाते थे। श्रीमाँ दोपहर में प्रसाद के समय उनको अधिक मात्रा में भात तथा सब्जियाँ परोस दिया करती थीं तथा वे सब खा जाते थे। उन दिनों श्रीमाँ का दर्शन करने हेतु अनेकानेक भक्त-दर्शनार्थी आया करते थे। इसीलिए वे दोपहर के ३ या ४ बजे के पूर्व प्रसाद ग्रहण नहीं कर पाती थीं। इन अनियमितताओं के कारण वे बीमार हो गयीं।'' '

गोलाप-माँ का प्रसंग

उद्बोधन, रविवार, ०९/०७/१९२२

''कल रात्रि से ही गोलाप-माँ अत्यन्त बीमार हैं। उनको बहुत उल्टी-दस्त हो रहा है। शरत् महाराज के निर्देशानुसार मैंने उनकी सेवा की। मैंने उनके हाथ-पैर दबाए। वे लगभग ३४ वर्ष तक श्रीमाँ सारदा के साथ थीं तथा उनकी सेवा की थीं। उनकी सेवा करके मैंने स्वयं को धन्य माना। मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं श्रीमाँ की ही सेवा कर रहा हूँ। गोलाप-माँ ने एकबार मुझसे कहा था, 'ऐसा कभी मत कहना कि मैंने काम को जीत लिया है। ऐसा कहने से ही काम आ जाता है।' उन्होंने श्रीरामकृष्ण, जगन्नाथ महाप्रभु, बालगोपाल इत्यादि के अपने विभिन्न दर्शनों के बारे में मुझे बताया था।''

बुधवार १३ जून, १९२३

''ठाकुर मन्दिर से प्रसाद लेकर उठते समय मेरे द्वारा गोलाप-माँ की भौहों पर बहुत जोर से चोट लग गयी। उन्होंने कहा, ''इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं, मेरा ही दोष है।''

''गोलाप-माँ को श्रीरामकृष्ण की सेवा करते हुए भक्तों से अनेक बातें सुननी पड़ती थीं। ठाकुर ने एक बार कहा था, 'यदि कोई सभी कुछ का त्याग करके मेरा शरणागत हुआ है, तो उसके दोषों का सुधार न करके उसको भगा देना, क्या यह उचित है?' श्रीमाँ के एक बार अपने गाँव जयरामवाटी जाने पर गोलाप-माँ ने दो-तीन महीने तक भोजन बना कर ठाकुर को खिलाया है। गोपाल-माँ ने एक बार ठाकुर को एक अपूर्व आध्यात्मिक भाव से अभिभूत होते हुए दर्शन किया था। ठाकुर का शरीर सामान्य से अधिक लम्बा दिखाई दे रहा था। उन्होंने देखा कि ठाकुर के शरीर में आहुति के रूप में कुण्डलिनी शक्ति प्रसाद ग्रहण कर रही है।

गोलाप-माँ

''ठाकुर ने श्रीमाँ से कहा था, 'यह ब्राह्मण कन्या (अर्थात् गोलाप-माँ) तुम्हारे साथ-साथ रहेगी।' ठाकुर के शरीर-त्याग के बाद गोलाप-माँ श्रीमाँ के साथ-साथ रहती थी। गोलाप-माँ श्रीमाँ को देवी के रूप में देखती थी। **(क्रमशः)**

प्रश्नोपनिषद् (६४)

श्रीशंकराचार्य

(सनातन वैदिक धर्म के ज्ञानकाण्ड को उपनिषद् कहते हैं। हजारों वर्ष पूर्व भारत में जीव-जगत् तथा उससे सम्बद्ध गम्भीर विषयों पर प्रश्न उठाकर उनकी जो मीमांसा की गयी थी, ये उन्हीं के संकलन हैं। वैदिक धर्म की पुन: स्थापना हेतु आचार्य ने इन पर सहज-सरस भाष्य लिखकर अपने सिद्धान्त को प्रतिपादित किया था। प्रश्नोपनिषद् पर लिखे उनके भाष्य का हिन्दी अनुवाद 'विवेक-ज्योति' के पूर्व-सम्पादक स्वामी विदेहात्मानन्द जी द्वारा किया गया है, जिसे 'विवेक-ज्योति' के पाठकों हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है। –सं.)

भाष्य – यथा अयं दृष्टान्तः; उक्त-लक्षणस्य प्रकृतस्य-अस्य पुरुषस्य परिद्रष्टुः परि समन्ताद्-द्रष्टुः दर्शनस्य कर्तुः स्वरूप-भूतस्य यथा-अर्कः स्वात्म-प्रकाशस्य कर्ता सर्वतः तद्-वद्-इमाः षोडशकलाः प्राणिनाम् प्राणाद्या उक्ताः कलाः पुरुषायणा नदीनाम्-इव समुद्रः पुरुषो-अयनम्-आत्मभाव-गमनं यासां कलानां ताः पुरुषायणाः पुरुषं प्राप्य पुरुष-आत्मभावम्-उपगम्य तथा-एव-अस्तं गच्छन्ति।

भाष्यार्थ – इसी प्रकार जैसाकि यह दृष्टान्त है, वह पुरुष पूर्वोक्त लक्षणों से युक्त है; जैसे सूर्य सभी ओर से अपने प्रकाश का स्वामी है, वैसे ही सभी ओर से दर्शन के कर्ता – परिद्रष्टा पुरुष का यह स्वरूप-भूत है; इसी प्रकार प्राण आदि सोलह कलाओं के रूप में कथित प्राणियों का (चरम) लक्ष्य नदियों का समुद्र के समान अपनी (मन-इन्द्रियों आदि सोलह) कलाओं को, उस पुरुष में विलीन करके, उसके साथ आत्मभाव (एकत्व) प्राप्त कर लेना है।

भाष्य – भिद्येते चासां नामरूपे कलानां प्राण-आदि-आख्या-रूपं च यथास्वम्। भेदे च नाम-रूपयोः यद्-अनष्टं तत्त्वं पुरुष इति एवं प्रोच्यते ब्रह्मविद्भिः।

भाष्यार्थ – तब प्राण तथा नाम-रूप आदि कलाएँ नष्ट हो जाती हैं। इन नाम-रूप आदि के समाप्त हो जाने पर, जो अनश्वर तत्त्व रह जाता है, उसे ब्रह्मज्ञानी लोग 'पुरुष' कहते हैं।

भाष्य – य एवं प्राणिनां विद्वान्-गुरुणा प्रदर्शित-कला-प्रलय-मार्गः स एष विद्यया प्र-विलापितासु अविद्या-काम-कर्म-जनितासु प्राण-आदि-कलासु अकलः; अविद्या-कृत-कला-निमित्तो हि मृत्युः तद्-अपगमे-अकलत्वाद्-एव-अमृतो भवति तद्-एतस्मिन्-अर्थ एष श्लोकः।।५।।

भाष्यार्थ – जो कोई, ज्ञानी गुरु द्वारा प्रदर्शित (इन सोलह) कलाओं के विलीन होने के मार्ग को इस प्रकार जानता है; वह विद्या के द्वारा अविद्या, काम, कर्म से उत्पन्न प्राण आदि कलाओं के पूर्ण विलय से निष्कल (अखण्ड) हो जाता है। चूँकि अविद्या से उत्पन्न होनेवाली कलाओं के कारण ही मृत्यु होती है, अत: उनके नष्ट हो जाने पर वह व्यक्ति निष्कल हो जाने के कारण अमर हो जाता है। इसी अर्थवाला यह मन्त्र है ।।५।।

पुरुषोत्तम को जानकर मृत्यु से पीड़ित नहीं होता

अरा इव रथनाभौ कला यस्मिन्प्रतिष्ठिताः।
तं वेद्यं पुरुषं वेद यथा मा वो मृत्युः परिव्यथा इति।।६/६।।

अन्वयार्थ – रथनाभौ इव (जैसे रथ की नाभि या धुरी में), अरा: (अरे या दण्ड स्थित रहते हैं) (वैसे ही), यस्मिन् (जिस पुरुष में) कला: प्रतिष्ठिता: (षोडश कलाएँ प्रतिष्ठित हैं), तम् वेद्यम् (उस जानने योग्य) पुरुषम् (पुरुष को), वेद (जानो), यथा (ताकि), मृत्यु: (मृत्यु) व: (तुमको), परिव्यथा (पीड़ा) मा (न दे सके) इति।

भावार्थ – जैसे रथ की नाभि या धुरी में 'अरे' या दण्ड स्थित रहते हैं, वैसे ही जिस पुरुष में सोलह कलाएँ प्रतिष्ठित हैं, उस ज्ञातव्य अर्थात् जानने योग्य पुरुष को तुम जान लो, ताकि मृत्यु तुम्हें पीड़ित न कर सके।

भाष्य – अरा रथ-चक्र-परिवारा इव रथनाभौ रथचक्रस्य नाभौ यथा प्रवेशिताः तद्-आश्रया भवन्ति यथा, तथा इत्यर्थः; कलाः प्राणाद्या यस्मिन् पुरुषे प्रतिष्ठिता, उत्पत्ति-स्थिति-लय-कालेषु तं पुरुषं – कलानाम् आत्मभूतं वेद्यं वेदनीयं पूर्णत्वात् पुरुषं पुरि शयनाद्-वा वेद जानीयात्; यथा हे शिष्या मा वो युष्मान् मृत्युः परिव्यथा मा परिव्यथयतु।

भाष्यार्थ – रथ के पहिये के परिवार के समान, जैसे अरे (दण्ड) – रथ के चक्के की नाभि (धुरी) में प्रविष्ट हो जाते हैं, अर्थात् उसके आश्रित हो जाते हैं, वैसे ही प्राण आदि कलाएँ अपनी उत्पत्ति, स्थिति तथा विलय के समय, जिस पुरुष में स्थित रहती हैं, उस कलाओं के आत्म-स्वरूप ज्ञातव्य 'पुरुष' को, जो पूर्ण होने से अथवा शरीर-रूपी पुर में शयन करने से 'पुरुष' कहलाता है, उसे जान लेना चाहिये; ताकि हे शिष्यो, मृत्यु तुम्हें पीड़ित न करे। **(क्रमशः)**

पुस्तक समीक्षा

श्रीमाँ सारदा देवी की दिव्य लीला

पुस्तक – श्रीमाँ सारदा देवी की दिव्य लीला
(दो खण्डों में)
लेखक – स्वामी चेतनानन्द
हिन्दी अनुवाद – लक्ष्मीनारायण इन्दुरिया
प्रकाशक – स्वामी राघवेन्द्रानन्द
अध्यक्ष, रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण आश्रम मार्ग, धन्तोली, नागपुर-४४००१२ (महाराष्ट्र)
पृष्ठ – ८३३, मूल्य – ६५०/-

युगावतार भगवान श्रीरामकृष्ण देव की लीलासहचरी श्रीमाँ सारदा देवी प्रेम और करुणा की साक्षात् प्रतिमूर्ति थीं। उनके जीवन में सभी धर्म और जातियों के लोगों के लिये, पशु-पक्षी, समस्त प्राणियों के लिये अजस्र स्नेह और प्रेम की सरिता प्रवाहित होती रही। जीवन की विषम परिस्थितियों में भी उनका जीवन सन्तुलित और ईश्वरपदाश्रित रहा। उनका जीवन सदा-सर्वदा श्रीरामकृष्णमय रहा। श्रीमाँ सारदा ने असंख्य अनाथों, अनाश्रितों और जीवन से निराश लोगों की यथायोग्य सहायता कर उनके जीवन में आशा और आनन्द का संचार किया। श्रीमाँ का जीवन सबके लिये प्रेरणास्रोत है।

ऐसी दिव्य लीलाकारिणी श्रीमाँ सारदा की लीला का शोधपरक जीवन-चरित रामकृष्ण मिशन के वरिष्ठ संन्यासी और वेदान्त सोसायटी, सेन्ट लुईस के मिनीस्टर इन्चार्ज स्वामी चेतनानन्द जी महाराज ने अँग्रेजी में 'श्रीसारदा देवी एन्ड हर डिभाइन प्ले' नामक ग्रन्थ के रूप में प्रणयन किया है। यह पुस्तक करुणामयी श्रीमाँ की दिव्य लीलाओं के साथ-साथ अपने शोधपरक विशेष मार्मिक प्रसंगों और सप्रमाण सन्दर्भों के कारण विशेष लोकप्रिय हुई। इस पुस्तक की लोकप्रियता को देखते हुये हिन्दी भाषाभाषी भी इससे वंचित न हों, इसलिये यह सरल, सहज, शलाघनीय अनुवाद भोपाल के श्री लक्ष्मीनारायण इन्दुरिया जी ने किया है।

यह पुस्तक दो खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में ३९२ पृष्ठ और द्वितीय खण्ड में ४४१ पृष्ठ; कुल ८३३ पृष्ठ हैं। ग्रन्थ की विषय-वस्तु ३५ शीर्षकों और ५ परिशिष्टों में विभक्त है। इसमें श्रीमाँ सारदा देवी के जीवन का घटना-क्रम, शब्दकोष और वर्णानुक्रमणिका भी दी गयी है। दोनों खण्डों में श्रीमाँ से जुड़े विभिन्न प्रकार के चित्र आर्ट पेपर में दिये गये हैं, जिससे पुस्तक-सौन्दर्य में वृद्धि और सम्बन्धित व्यक्तियों के मन में एक जीवन्त धारणा बन जाती है। पुस्तक पठनीय, संग्रहणीय है। लेखक वन्दनीय हैं, जिन्होंने विश्व को और अनुवादक भी प्रशंसनीय हैं, जिन्होंने हिन्दी जगत को यह अनुपम भेंट दी है। ○○○

पृष्ठ ४५५ का शेष भाग

को सदैव जाग्रत रखो।[२३]

राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक; सभी क्षेत्रों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करना ही उनका लक्ष्य था। सिस्टर निवेदिता मन, वचन व कर्म से स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहाभागी थीं।[२४] ○○○

सन्दर्भ सूची : **१.** सिंह, राणा प्रताप भगिनी निवेदिता, राष्ट्र धर्म पुस्तक प्रकाशन, लखनऊ, पृ.१२७ **२.** वही, पृ.१२७ **३.** वही, पृ.१२८ **४.** किरवई, ज्योत्सना, सिस्टर निवेदिता, रामकृष्ण मठ, नागपुर, १९९८, पृ.२८४ **५.** सिंह, राणा प्रताप, पूर्वोक्त, पृ.११२ **६.** शर्मा, नरेश कुमार, स्वतन्त्रता संग्राम की भारतीय वीरांगनाएँ, अनु प्रकाशन, जयपुर, २००४, पृ.७९ **७.** किरवई, ज्योत्सना, पूर्वोक्त, पृ.३२४ **८.** स्वामी प्रभानन्द, पूर्वोक्त, पृ.६९ **९.** किरवई, ज्योत्सना, पूर्वोक्त, पृ. ३२४ **१०.** सिस्टर निवेदिता द्वारा रामानन्द चटर्जी को लिखा गया हस्तलिखित पत्र, १६ अक्तूबर १९०५, लेटर्स ऑफ निवेदिता, रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम रायपुर से प्राप्त, पृ.१२७४ **११.** किरवई, ज्योत्सना, पूर्वोक्त, पृ.३१०, ३११ **१२.** वर्मा, ओमप्रकाश, भारतगतप्राणा निवेदिता, विवेकानन्द विद्यापीठ, रायपुर, २०१७, पृ.१२० **१३.** सिंह, राणा प्रताप, पूर्वोक्त, पृ.११२, ११३ **१४.** स्वामी प्रभानन्द, भारत की निवेदिता, रामकृष्ण मिशन इन्स्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता, २००३, पृ.६८ **१५.** किरवई, ज्योत्सना, पूर्वोक्त, पृ.३२३ **१६.** वही, पृ.२६१ **१७.** चक्रवर्ती वसुधा, सिस्टर निवेदिता, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, १९७७, पृ.४६ **१८.** वही, पृ.४६ **१९.** सिंह, राणा प्रताप, पूर्वोक्त, पृ.११२, ११३ **२०.** किरवई, ज्योत्सना, पूर्वोक्त, पृ.२६७ **२१.** वही, पृ.२८३ **२२.** प्रव्राजिका अमलप्राणा, भगिनी निवेदिता, रामकृष्ण सारदा मिशन, दक्षिणेश्वर, कलकत्ता, २०१४, पृ.९९, १०० **२३.** बसु, शंकरी प्रसाद, लोकमाता निवेदिता, खण्ड-३, आनन्द पब्लिशर प्राईवेट लिमिटेड, कलकत्ता, १९८७, पूर्वोक्त पृ.९ **२४.** किरवई, ज्योत्सना, पूर्वोक्त, पृ.२४५, ३२९

समाचार और सूचनाएँ

रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर में गुरुपूर्णिमा मनायी गई

१० जुलाई, २०२५ को रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर में गुरु-पूर्णिमा पूजा का आयोजन किया गया। श्रीरामकृष्ण मन्दिर में प्रात:कालीन मंगल आरती, विशेष पूजा, हवन और आरती हुई। आश्रम के सचिव स्वामी अव्ययात्मानन्द जी महाराज ने गुरु-महिमा पर सारगर्भित प्रवचन दिये। सभी भक्तों ने श्रीरामकृष्ण के चरणों मे पुष्पांजलि प्रदान की। अन्त में सबको खींचड़ी प्रसाद प्रदान किया गया। लगभग ११०० भक्तों ने भाग लिया। सन्ध्या आरती के बाद विशेष भजन हुये।

३० मई, २०२५ को अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री प्रेम खांडू ने **रामकृष्ण मिशन अस्पताल, ईटानगर** में नये फार्मेसी का उद्घाटन किया।

१ जून, २०२५ को **कांचीपुरम्** में नये छात्रावास का उद्घाटन किया गया।

६ जून, २०२५ को **न्यू टाउन सेण्टर, कोलकाता** में रामकृष्ण मठ और मिशन के महासचिव स्वामी सुवीरानन्द जी महाराज ने डीजिटल लाइब्रेरी का उद्घाटन किया। इस पुस्तकालय में १००० मुद्रित पाठ्यपुस्तकें और ६००० ई-पुस्तकें हैं।

८ जून, २०२५ को **बेलगावी** आश्रम ने रजत जयन्ती समारोह आयोजित किया, जिसमें पूज्यपाद प्रेसीडेन्ट महाराज ने आशीवर्चन प्रदान किये।

विवेकानन्द आश्रम, रायपुर के द्वारा व्यक्तित्व विकास शिविर का अयोजन किया गया

२२ जुलाई, २०२५ को **रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द आश्रम, रायपुर** के द्वारा छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के तीन विद्यालयों – १. शासकीय उच्चतर एवं माध्यमिक विद्यालय, मारागाँव, ब्लाक मगरलोड २. शासकीय उच्चतर एवं माध्यमिक विद्यालय, मोहेरा, ब्लाक मगरलोड और ३. स्वामी आत्मानन्द उत्कृष्ट हिन्दी माध्यम उच्चतर एवं माध्यमिक विद्यालय, सिंगपुर,

ब्लाक मगर लोड में अखिल राज्यीय व्यक्तित्व विकास प्रकल्प के अन्तर्गत व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया। इसमें बच्चों को स्वामी विवेकानन्द जी के स्वदेश मन्त्र का पाठ कराया गया। उन्हें उनमें निहित शक्ति और प्रतिभा के बारे में बताया गया कि वे कैसे अपनी बुद्धि और प्रतिभा का विकास कर उसे आत्मविकास और राष्ट्र के विकास में लगा सकते हैं। शासकीय कचना धुरवा महाविद्यालिय के प्रोफेसर और राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. विनीत साहू ने बच्चों के प्रतिभा-परीक्षण हेतु विभिन्न प्रकार के खेल भी खेलाये और व्यक्तित्व-विकास क्यों आवश्यक है, यह बताया। स्वामी प्रपत्त्यानन्द ने छात्रों को सम्बोधित किया। छात्र-शिक्षक मिलकर कुल ७०० लोग उपस्थित थे।

रामकृष्ण मिशन के नये केन्द्र

१. रामकृष्ण मठ, ग्राम–भुवनपुर, पो. कोठवा, ब्लाक–बहादुरपुर, तहसील–सदर, जिला–बस्ती-२७२१२४ (**उत्तर प्रदेश**) फोन नं.–७०६८०७७६८७/८२२७९ ६४६०५

२. रामकृष्ण मठ, शिवकाशी-सत्तूर रोड, पो. चिन्नाक्का-मानपट्टी, कोनामपट्टी (शिवकाशी), जिला–विरुद्धनगर-६२६१८९, **तमिलनाडु** फोन नं. – ९४८९० ३३१५५

३. रामकृष्ण मठ, पो. श्रीरामकृष्ण नगर, ओट्टपालम, जिला–पालक्कड़-६७९१०३, **केरल**, फोन नं.–८१३९८ ७६५१०

४. रामकृष्ण मिशन, रामकृष्ण मिशन सरणी, फलाकाटा, जिला–अलीपुरद्वार-७३५२११, **पश्चिम बंगाल**, फोन नं – ९३३२४ ४२६९०

रामकृष्ण मिशन आश्रम,

मोराबादी, राँची - 834008 (1927-2027),

e-mail : ranchi.morabadi@rkmm.org, Web : www.rkmranchi.org

श्रीरामकृष्ण मन्दिर नवनिर्माण के लिए विनम्र निवेदन

भगवान श्रीरामकृष्ण देव के अन्तरंग शिष्य श्रीमत् स्वामी सुबोधानन्द जी महाराज के चरण रज से पवित्र तथा श्रीश्रीमाँ सारदा देवी के शिष्य एवं रामकृष्ण संघ के आठवें संघाध्यक्ष श्रीमत् स्वामी विशुद्धानन्द जी महाराज की तपस्थली ''रामकृष्ण मिशन आश्रम, मोराबादी, राँची'' की स्थापना 1927 में हुई थी। शीघ्र ही वर्ष 2027 ई. में इस आश्रम की स्थापना का शताब्दी वर्ष प्रभु कृपा से हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाएगा । रामकृष्ण संघ के 11 वें संघाध्यक्ष श्रीमत् स्वामी गंभीरानन्द जी महाराज के तपस्या से पवित्र इस आश्रम हेतु हम सभी अनुरागी, भक्तों और शुभ-चिन्तकों के लिए सेवा-यज्ञ में आहुति प्रदान करने का यह परम-पवित्र अवसर है । आश्रम के इस शताब्दी वर्ष में विशेषकर राँची जिला के निकवटवर्ती गाँवों में आदिवासी जनजाति के कल्याण के साथ-साथ उनके सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन श्रीश्रीठाकुर, श्रीमाँ तथा स्वामीजी द्वारा प्रदत्त पथ के माध्यम से हो रहा है ।

आश्रम परिसर में श्रीश्रीठाकुर, श्रीश्रीमाँ तथा स्वामीजी का वर्तमान मन्दिर अत्यन्त छोटा तथा भग्नावस्था में है । अतः मन्दिर का नव निर्माण अनिवार्य है इसके साथ ही साथ आश्रम परिसर के परिदृश्य (लैंड स्केपिंग) में भी आवश्यक सुधार अपेक्षित है। इसके अलावा साधु निवास, रसोई घर एवं भोजनालय भी प्रस्तावित है । इस विस्तार के लिए मनुमानित लागत निम्न प्रकार है :

कं.सं.	निर्माण	क्षेत्रफल (वर्ग फीट में)	प्रस्ताव	अनुमानित लागत (करोड़ में)
1.	मन्दिर तथा लैंड स्केप	15,198	दो तलों में निर्माण तथा परिसर का सौंदर्यीकरण	6.0
2.	साधु निवास, रसोई घर एवं भोजनालय	7,500	वर्तमान साधु निवास के ऊपर एक तल का निर्माण, रसोईघर, भोजनालय का पुनर्निमाण	1.5
			कुल लागत	7.5

इस शताब्दी वर्ष के अवसर पर सभी भक्तों से अनुरोध है कि कृपया इस महत्त्वपूर्ण कार्य में आप यथासंभव योगदान कर पुण्य के भागी बनें ।

ध्यातव्य : प्रदत्त दान आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत करमुक्त है। एक लाख से अधिक दानदाताओं का नाम मन्दिर परिसर पर अंकित होगा । दानकर्ताओं को 4 श्रेणियों में सम्मानित किया जाएगा ।

1) **रजत श्रेणी :** रुपये 1 लाख से 5 लाख तक

2) **स्वर्ण श्रेणी :** रुपये 5 लाख से अधिक व 10 लाख तक

3) **हीरक श्रेणी** : रुपये 10 लाख से अधिक व 20 लाख तक

4) **प्लेटेनियम श्रेणी** : रु. 20 लाख से अधिक

निवेदन : मन्दिर निर्माण हेतु सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक खाते के माध्यम से कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किये जायेंगे ।

Click Below fro Online Donation :
https://bit.ly/317 lzyh
Scan the below given QR Code to log into our Online Donation Site

Account Name : Ramakrishna Mission Ashrama,
Account No. : 50200081665283
Bank Name : HDFC BANK LTD. Morabadi,
IFSC CODE : HDFC0007443

सहयोग राशि के साथ अपना ईमेल, पैन नं., मोबाईल नं., पूरा पता एवं उद्देश्य हमारे ईमेल **ranchi.morabadi@rkmm.org** या मोबाईल नं. 9835158705 पर भेजें ।

प्रभु की सेवा में आपका
स्वामी भवेशानन्द
सचिव